शिक्षक-दिवस १६६६

अमर चूंनड़ी

नृसिंह राजपुरोहित

अमर चूंनड़ी

(राजस्थानी कहाणी-संग्रह)

राजस्थान साहित्य अकादमी सूं पुरस्कृत

२२८
कहानी

६१२८

नृसिंह राजपुरोहित

शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए
सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

मूल्य : पांच रुपये मात्र

०

© नृसिंह राजपुरोहित

०

प्रकाशक
शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए
सूर्य प्रकाशन मंदिर
बिस्सों का चौक बीकानेर
द्वारा प्रकाशित

०

संस्करण : प्रथम, सितम्बर १९६९

०

मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स दिल्ली-३२

A M A R C H O O N R I by Nrisingh Rajpurohit
Rajasthani-Story Collection Rs. 5.00

८१२५

आमुख

राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की रचनाओं की शिक्षा विभाग, राजस्थान, द्वारा प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत अब तक विगत वर्षों में हिन्दी तथा उर्दू की कुल आठ पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। इस वर्ष पाँच संग्रह प्रकाशित किये जा रहे हैं जिनमें एक संग्रह राजस्थानी भाषा की कहानियों का भी है।

यह बड़े सन्तोष तथा प्रसन्नता की बात है कि विभाग की इस योजना का स्वागत सभी क्षेत्रों में हुआ है। सृजनशील शिक्षकों में एक नई उत्साह की लहर उठी है और अब प्रतिवर्ष अधिक से अधिक शिक्षक लेखकों की रचनाएँ प्रकाशनार्थ प्राप्त होने लगी हैं।

आशा है शिक्षक-दिवस १९६९ के अवसर पर प्रकाशित किये जा रहे इन ग्रंथों में पाठकों को नई-नई, विविध, रोचक तथा प्रेरणाप्रद सामग्री पढ़ने के लिए प्राप्त होगी और वे उसका पूरा आनन्द उठायेंगे।

राजस्थान के प्रकाशकों ने विभाग की इस प्रकाशन योजना में भरपूर योगदान दिया है। इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। इसी प्रकार जिन शिक्षकों ने इन संग्रहों के लिए अपनी रचनाएँ भेजी हैं वे भी धन्यवाद के अधिकारी हैं।

शिक्षक-दिवस
१९६९

हरिमोहन माथुर,
निदेशक,
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान, बीकानेर

६९२८

एक सम्मति

श्री नृसिंह राजपुरोहित का आग्रह रहा कि उनकी पुस्तक 'अमर चूंनड़ी' पर मेरे दो शब्द जरूर जाने है। राजपुरोहितजी का मुझ पर विशेष स्नेह रहा है। स्नेह के आग्रह और अधिकार को टालना कैसे सभव है? भारत की एक संस्कृति है—राजस्थानी संस्कृति। जो भारतीय सस्कृति की एक अमूल्य कड़ी है—एक गौरव-पूर्ण कड़ी। इसकी अपनी आन है और शान। पाश्चात्य प्रभाव को आत्मसात न कर सकने के कारण जिस असांस्कृतिक बाढ में यह देश आज बह निकला है, वह स्थिति भयावह है। श्री राजपुरोहितजी का यह संग्रह उसी ओर इंगित करता है। कुछ कहानियां तो सीधी दिल और दिमाग पर प्रहार करती हुई एक टीस और तिल मिलाहट छोड़ती हैं। पुस्तक की भाषा राजस्थानी है। भाषा में प्रवाह और मिठास है। कहावतों एव लोकोक्तियो का बाहुल्य है। पुस्तक सर्व अन-पयोगी है। इसमे कोई संदेह नहीं कि राजस्थान वासियों का चरित्र एवं मनोबल ऊँचा उठाने में पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

राजस्थान विधान सभा — निरंजननाथ आचार्य

क्रम

रूपाळी राजां	:	९
उडीक	:	१६
भारत भाग-विधाता	:	२४
धवळो	:	३३
खूटा री आयछ	:	३८
पेट री दाझ	:	४१
लक्की स्टोन	:	५५
अमर चूनड़ी	:	६०
मेत वाळी बात	:	७२
रूपाळी बीनणी	:	७७
बोल म्हारी माछळी	:	८३
मा री ओरणी	:	८६
कुए भांग पड़ी	:	६४
पांन झड़ता देखने	:	१०५

अमर चूंनड़ी

रूपाळी राजां

दिनूंगै ग्वाड़ी में बुहारी काढतां राजां रै कांनां में भणक पड़ी के मुल्क रै उतराद में झगड़ो चेतग्यो है। उणरा हाथ मतैई थमग्या। घूंघटा रौ पल्लौ थोड़ो सीक तणीजग्यो अर उणरी ओट में सूं आंख्यां नै कान आंगणा काली लाग ग्या। जेठजी जवाइ छानै कागद वंचावता हा…

… सरब ओपमा विराजमांन अनेक ओपमा लायक भाबोसा दुरगजी नै लिखी लेजा री जय श्री रघुनाथजी री बंचावसी। घणा मान सूं करनै। उपरंच समाचार एक बांचसी के उतराद में झगड़ो चेतग्यो है। म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण रो हुकम मिळ्यो है। आप कोई बात री चिंता फिकर करगी भी। बूजी नै म्हारा पांव धोक अरज करसी अर टाबरां माथै हाथ फेर सी। म्हारी कांनी सूं ममता री मनवार मानसी।…

राजां तट्ट-तट्ट करनै खींपड़ा री बुहारी में सूं तुगियां तोड़ नै दांत कुचरण लागी। आंख्यां उणरी फाटी'ज रैयगी अर सांस जोर-जोर सूं चालण लागी।

… उतराद में झगड़ो चेतग्यो है अर म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण री हुकम मिळ्यो है।

… ग्रामोफोन रेकर्ड रा खाडा में सूई अटकीजगी व्है ज्यूं वार-वार एहज समाचार उणरै कांनां में गूंजण लाग्या।

घर रा काम-काज सूं निवड़नै उणै जेठूता जवरजी नै पकड़ लियो। गोदा में बिठायनै लाड करण लागी—म्हारी लाडको बेटो, म्हारी

[illegible]

[illegible] ···कह्यो—जाओ बेटा जाओ अर तुरत कागद [illegible] दे दियो।

जवरू [illegible] दौड़नै कागद लिआगो अर पाछो गोखा में बैठनै बांचण लागो···स्वस्त श्री [illegible] बिराजमान···अठै [illegible] थोड़ो धीरै बांचो जवरजी बेटा थोड़ो धीरै ! ओ इण ओळी में कांई लिख्यो है ? राजां एक ओळी माथै आंगळी राखनै बोली।···उतराद में डागड़ो नेतग्यो है अर म्हारी पलटण नैं मोरचा माथै जावण रो हुकम मिळग्यो है··

जवरू बांचतो रह्यो अर राजां रै डील में धूजणी छूटगी। कागद रांवट नैं जवरू ऊंचो जोयो तो काची री प्याला जिसी मोटी-मोटी आंख्यां में पांणी देख्यो। टप्प करतो एक वळवळतो आंसू उणरै गाल माथै कर रळक्यो तो वो कागद नांखनै नाठग्यो।

राजां विचार करण लागी—आज धनतेरस है अर कालै रूप चवदस। आ सू नम (असाढ़ सुद नम) गई तो उणनैं परणियां नैं पूरा तीन वरस व्हिया अर चौथो वरस लागग्यो। तीन वरसां में वे तीन वेळा घरै आया। वीस-वीस दिन री छुट्टी में। वा आंगळियां माथै गिणण लागी।···एक वीसी ···दो वीसी अर तीन वीसी···तीन वीसी दिनां रा महीना कितरा व्है ? भगवान जांणै। किणनैं लेखो आवै। पण वे सगळी रातां उणै जाग नैं विताई ही। आंख्यां में कस ई कोनीं पड़ण दियो। ओ सूतर री ढ़ोलियो अर ए पड़वा रा थेपड़ा इण बात रा साक्षी है। इण तीन वीसी दिनां रै अलावा

उमर रा दूजा दिन तो जाणै अकारथ ई गया।

रोज दिन उगै अर रात पड़ै, रात पड़ै अर दिन उगै। यूं उमर रा दिन ओछा व्हेता जाए। रोजीना सारैई छानी कूटो—झाड़ू-बुहारू, पांणी-लूंणो, पीसणो-पोवणो, दोवणो-विलोवणो अर धोवणो-न्हावणो। सरीखी सांमीनी सायणियां मिळै तो घड़ी-पलक मन राजी व्हे जाए। पण कदेई-कदेई तो वां सूं ई उल्टो दैण व्हे। उण दिन पे'लो हळोतियो व्हियां वा नाडी पाणी भरणनै गई तो सायणियां गावण लागी···

भाग गहेल्या रो भूलरो ए, पिणिहारी जी ए लो···
गई-गई समद सळाय म्हाला ए जो···
साता रै ई काजळ टीलियां ए पिणिहारी जी ए लो···
एकलड़ी रे पीका ए नैण, म्हाला ए जो···
साता रे ई पीळ घरै बसै रै पिणिहारी जी ए लो···
एकलड़ी रै पीळ परदेस म्हाला ए जो···

मन जाणै कीकर ई व्हेग्यो। मूंडो उतरग्यो अर कंठ जाणै बैठग्यो। घरै आयां टांम उतरावतां जेठाणी पूछ्यो - बिनणी आज विलखा कियां?

पण इण बिलखापणा रो कारण हरेक नै कियां बतायो जा सकै?

आज ई पाणी री वेळा व्हेगी दीसै। काम हाल सगळोई पड़्यो है। बांटो भरणो है, बिलोवणो करणो है अर पछै मटकै-मटकै पाणी लावणो है। पण धर उठै जितरी जेज है, पछै तो एकफटकारा री बात है। माल-मोटयार बहू-बुहारड़ी है, कांम री कांई भार? काम तो करणो इज चाहिजै। सग-ळोई काम म्हाला है, भाग म्हाला कठैई कोनी। पण थोड़ो घणो काम तो जेठाणीजी नैं ई करणो चाहिजै। पण वे तो डील रै एल ई नी दे। हळकै नै पाणी ई नीं पीए। आखो दिन नैन्या रै घोड़िया खनै बैठा रैवै अर उण माथै हुकम चलावता रैवै। भगवान उणरो ई खोळो भर दियो होवतो तो किसोक नामी रैवतो। गांम में उणरै साथै जितरी ई छोरियां परणीजी सैंगां रै ई खोळा में नैना टाबर है। उणै इज किणरा काळा तिल चोरिया है, उणै इज किसा बांमण मारिया है सो हाल तांई उणरो खोळो खाली है। जेठाणी गीगा नैं हालरियो गावै जद उणरै कांनो देख-देख नैं कितरो गुमेज सूं गावै—

हुल रे नैन्या हुल रे···
थूं पालणिया में झुलरे···

बेटी रै नाम जाणै भाठौ नाख मेल्यौ है। उणरै ई एक नैनो बालक व्हैतो—भूरो-भूरो, कालो-कालो, गोळ-मटोळ, रमतै रै मगना जिसो नैं किलोल नांगो रैवतो। ना उणनै छाती सूं भेळनै किलकै गाल सूं भलावती। (उणनैं लाग्यो जाणै उणरै ढूंगळां री बिटकीयां में सिळूंगी कीड़ियां चाल री है) गीगलो व्हियां भाभीजी रा मन्मट गळ जावै अर बूजी री मंगा पण पूरी व्है जाए। नीं तो उठ-बैठ नैं एक इज बात—

—जेजा री गीगलो निजरां देख लूं तो मरियांई सुखोतर जाऊं। बूजी कांई, बूजी रा बेटा नैं ई गीगला री कितरी कोड है। लारली बेळा छुट्टी सूं रवानै व्हिया जदरी बात है—पुणनो काठो पकड़ लियो अर बहू करती कांवळी बदार नांखी। उण उपरांत ई हंसनै बोल्या—थे रोज गावो जिकी चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणाय दो नीं लाडू। आज तो म्हूं सावांणी चाकरी माथै वहीर व्हियो हूं—

काळोड़ी तो कांठळ राज ऊपड़ी
कांई मोटोड़ी छांटां री बरसै मेस
भंवर मत चढ़जो राज···चाकरी···
कांई रैवो तो रांधूं ए राज लापसी
कांई चढ़ो तो बाजरियो खीच
भंवर मत चढ़जो राज···चाकरी···

म्हारी आंख्यां में पांणी आयग्यो हो तो ई म्है मुळक नैं कह्यो—

गीत री छेली कड़ी तो पूरी करता पधारो—

एक टका री ए राज···चाकरी
कांई लाख रुपियां री घर री नार
भंवर मत चढ़जो राज···चाकरी···

उणां बाथ में लेयनैं म्हारा आंसू पूंछ दिया। बोल्या—इतरौ बिलखौ पड़ण री कांई बात है? म्हूं अब कै वेगी छुट्टी आऊंला अर जे कदाच वेगौ नीं आय सक्यौ तो नवमैं महीनैं तो गीगलौ आय जावैला।

पण उण बात नैं तो बारै महीना होवण आया। कठै गीगलो अर कठै गीगला रा कोडाया उणरा बाप!

राजां निसासा नांखती ऊभी व्हैगी। बारै जेठजी सूं कोई बात करै हो। स्यात जबरू री मास्टर दीसै—

···झगड़ौ अबकै जबरौ चेत्यौ, अलेखां चीणी कीड़ियां रै ज्यूं आंपणी

कांकड़ माथै चढ़नैं आया है। आंपणा जवान हिम्मत अर बादरी सूं वांरै मुकाबला में अड़ियोड़ा है। वे दुस्मियां नै काट नैं नांख देला।

राजा रै नस-नस में जांणै बिजळी खिवण लागी। हाथां रा बुकिया जांणै फाटण लाग्या। वा आंगणै आयनैं बिलोवणो करण लागी—झरड़ …मरड़! झरड़…मरड़! झगड़ौ अबकै जबरौ चेत्यौ—झरड़…मरड़! कांकड़ माथै दुस्मी ऊभो—झरड़…मरड़! हरामियां ने काट नांखौ-झरड़…मरड़! जोर री झाट लागी सो काठा-काठा दही री लूंदौ गोळी रै थारै आय पड़ग्यो पच्च करतो।

—थूं करै कांई है बिनणी! झाट थोड़ी धीरे दे। का तो गोळी फोड़ नांखैला अर का नेतरो तोड़ नाखैला। रसोड़ा में बैठ्या बूजी बोल्या।

झरड़…मरड़!

राजां थोड़ी धीमी पड़गी। वा सोचण लागी—उणनैं ई मोरचा माथै भेज देतो किसोक आंमी कांम वणै। वा हरदम वारै सागै री सागै रैंवैला। दुसमण जे सनमुख आय जावै तो नीं बंदूक री कांम है अर नी कारतूस री। उणनैं आपरा हाथां रै गाड़ माथै भरोसो है। वो टणका मोटयारां री गावड़ां उणरा पंजां में मिल जावै तो वा टैं ई नीं करण दे। मसळ नैं नांख दे। अर तीजो आवै तो फगत एक लात री काम है। उठनैं ये पाणी ई मांगलै तो फिट कही जो। मोटयार मोरचा माथै जाय सकै तो लुगायां क्यूं नी जाय सकै? वा उणां सूं किण बात में कम है? जे एकली सैंकड़ूं दुस्मियां नै नीं रगदोळ दू तो म्हारी मा म्हनैं खबै लेय नै नीं धवाई है। मगदूर नैं भाग है। मूंडी मूंडी बापड़ा बीणियां री वो कांकड़ री मामलौ मांनी ई पग देय दे। पग बलम नीं कर नागू हराम खोरां रा!

झरड़…मरड़!

एक जोर री झाट लागी अर तड़ंद करतो नेतरो तूटनै आधो पड़ग्यो अर गुड़ल समेत दूजो टुकड़ो हाथ में झूल रैयग्यो।

—थारै आज व्हियो कांई है बेटी री बाप? थूं घर रै लारै क्यूं उतरी है बड़ी मिनख? बिलोवणो गाळ नैं धूळधांणी कर दियो अर नेतरो तोड़नैं पोसाळी कर नांख्यो। काम नी करणो व्हे तो ना क्यूं नीं देय दे।

—बूजी अबकै जोर सूं किड़किया।

—पधारो बिलोवणा किया थे बापड़िया—बाप रै घरै करैई देख्यो व्है जरै करैक। आओ पधारो अबै पाणी भर दो। पग मटकी रो थोड़ो

ध्यान राख ते । आज तोल भागो ऊभो नी है । [illegible] नी दिन मागो भड़को हो ।

राजा ठाम [illegible] नाही [illegible] महीना हो नी [illegible] । [illegible] गामा नै
गाम री गोमाळ [illegible] री मेळा [illegible] ही पण [illegible] नाखणो ही । इण वास्तै
पेर नै ऊभो हो । [illegible] हो एक काटीड़ा रे [illegible] । [illegible] री मूं तणी नायां
गामा [illegible] भेळा [illegible] ऊभा हा । [illegible] कर राखी ही ।
नै छेड़ा माथै [illegible] री [illegible] सूं [illegible] काटीड़ा नै पकड़णो घणो
पण [illegible] छियोड़ा अर ऊदम [illegible] । काटीड़ा नै [illegible] करता, हाण-फांण
अवखो काम हो । [illegible] जिमा, नानू-मानू करता, [illegible] नै [illegible] नुक्या
छियोड़ा काटीड़ा काळ [illegible] मोटयार नै पटक नै [illegible] पटकण री
हा । इण वास्तै आज [illegible] जावता सूं [illegible] नागरनै पटकण री
तजवीज ही ।

गोर में हा-हू मच्योड़ी ही । एक कानी मोटयार नाठियां में मजबूत
गाळा घाल नै घेरो दिया ऊभा हा तो दूजै कानी डाफा-चूक व्हियोड़ा
काटीड़ा कान ऊंचा किया अठी-उठी देखै हा । अठीनै तो राजां ठांम भरनै
पाछी आई अर उठीनै डावियाळ काटीड़ा रै गाळो पड़ियो । काटीड़ो
चीतरा री गळाई फुरणा वजावतो सांम्ही काटकियो ।

परतख काळ नै सांम्ही आवतो देखनै मोटयार तो पड़ भाग्या पण
राजां लपेटां में आयगी । उणनै एकदम यूं लखायो, जांणै वा मोरचा माथै
ऊभी है अर सनमुख दुसमण काटकियोड़ौ आवै है । एक छिन में वा मटकी
एक कांनी उछाळ नै काटीड़ा सूं जाय भिड़ी । गव्व करतां काटीड़ा रा
दोन्यूं कांन उणरै पंजां में भिलग्या । अर झिल्या तो पछै इसा झिल्या के
जांणै संडासी में सांप । काटीड़ै घणाई फूंफाड़ा किया, घणोई आफळियो
पण राम भजो नीं छूटै कांई जीव! छेवट थाक नै पोठा करण लाग्यो थच्च-
थच्च ।

राजां हाकौ कियौ--म्हारै ओरणा री पल्लो तो थोड़ौ म्हारै माथा
पर नांख दो रे नां जोगां! मूंछाळा व्हैनै एक मामूली टोगड़िया सूं डरनै
भाग ग्या । फिट रै नादारां थांनै ! अवै थांरा वाप रै नाथ घालणी व्है तो
घालौ क्यूं नीं आघी । म्हारै हाथां में झिल्योड़ौ ओतो टैं ई नीं कर सकैला ।
इतरौ सुणतां इज तो मोटयार नीचा माथा कियां अर वड़ियौड़ा आया अर
एक छिन में ऊभा काटीड़ा रे इज नाथ घाल दी ।

उण दिन सूं राजां रे करार री चरचा गांम में तो कांई पण पूरा

चौखळा में होवण लागी। वात सुणी जिकोई भुयकी नांखण लागौ। साथीड़ां सेजा नैं कागद लिख्यौ तो उणनै ई ए समाचार लिख्या। मुल्क री उतरादी कांकड़ माथै गोडां-गोडां लग बरफ में ऊभौ, उणैं ओ कागद पढ़्यौ सो उणरी छाती फूलीजगी। वो सोचण लागौ-राजां फूल जिसी कोमळ अर वज्जर जिसी कठोर, चाद जिसी फूटरी अर चंडिका-सी विकराळ। अठै उणरै सागै था ई बंदूक लिया ऊभी व्हैती तो किसीक मांमी रैवती। इतरै तो उतराद में काई सुड़को व्हियौ, उणै एक हाथ सू दूरबीण निजरां आगै लगाम नैं दूजै हाथ सू बंदूक काठी पकड़ली।

उडीक

यूं रांमगढ़ कीतूं वार आयो गयो हूं पण अवकाळै उठै जावणो घणो आंझो लाग्यो। मन जांणै कियांई होवण लाग्यो। पे'ली जद कदेई रामगढ़ जावण री मौको मिळतो, मन में घणी हूंस रैवती, च्यार दिनां पे'लीज एक अणवोलणी खुसी मन में भरीज जावती अर मन हर वगत भरयो-रैवतो। मोटर में वैठतो जरै तो मोटर री चाल रै सागै वा खुसी पण तर-तर वधतीज जांवती अर मोटर रा हच्चीड़ां रै सागै उणमें पण उछाळा आंवता रैवता।

पण आजकी हालत सफा उल्टी ही। गाडी सूं उतरनै मोटर कांनी रवांनै व्हियौ तौ पग इसा भारी लाग्या जांणै मण-मणवजन वंध्यौ व्है। उदास मन सूं वांनै कियांई ठिरड़तौ-ठिरड़तौ मोटर में आयनै वैठ्यौ तो वैठतांपांण एक जोर रा हचीड़ा सागै वा स्टार्ट व्हैगी। जांणै उणनै वैम हो कै म्हूं आळांणो नीं कर दूं अर पाछौ रवांनै नीं व्है जाऊं।

काचा मारग पर धूड़ रा गोट उठता रह्या अर हच्चीड़ां रै सागै नैंना-नैंना गांम लारै छूटता रह्या। अवै तर-तर रांमगढ़ ढूकड़ौ आवण लाग्यौ। पे'ली पनजी चव्हाण री वेरी आवैला अर पछै अरणां वाळी सेरियौ। लांवा सेरिया रे दोनूं कांनी कोरा अरणा इज अरणा। सेरिया वारै निकळतां ई तो रांमगढ़ रा झाड़का दीखण लाग जाएला अर पछै तो पूगतां एक चिलम भरै जितरी जेज लागैला। मोटर ऊभी रैवै उठै जावणौ व्हैला तो कोई खासी भीड़ व्हैला। कोई रे मोटर में वैठनैं आगै

अमर सूंनड़ी

किणा रै ई साम्ही आयी व्हैला। पाछली साल म्हूं आयो जद धापू अर किसन् दोन्यू बैन-भाई म्हारै सांम्हां आया हा। किसन् तो म्हनै देखता पाण ताळियां बजाय-बजाय नैं नाचण लागग्यो हो—मामोसा आया रे··· मामोसा आया !···अर धापू तो पकड़ धावळियो हाथ में अर दड़ी छूट पगां दौड़गी ही—बाई नैं बधाई देवण नैं के उणरो बीरो आयग्यो है।

घर्रार् ' राईंड़···हब्बोड़···हब्बोड़ ! मोटर रा छाजला में मिनखां रा छोटा मोटा दांणा उछळ-उछळ नैं भींचा पड़ता हा। जितरै तो एक जोर रो हब्बोड़ो लाग्यो अर म्हारी फेर टूटी। रामगढ़ आयग्यो हो। मोटर ठमता इ लोग-बाग चढ़ण उतरण लाग्या। म्हू ई नीचै उतरियो अर बेग उठायनै रवानै व्हियो। भीड़ मूं बारै निकळ्यो तो धका मायै ऊभा एक टाबर मायै निजर पड़ी। मन में वैम व्हियो-किसनू तो नीं है कठैई ? ना-ना, ओ किसनू हरगिज नीं व्है सकै। बाल बिखरयोड़ा, हाथा-पगां पर मेल रा पापड़ा जम्योड़ा, अर शरीर पर फगत एक मैलो सीक कुड़तियो। मूंडा में हाथ री अंगूठी घाल्यां वो घरी मोट सू मोटर कानी देखै हो। म्हूं नैड़ो गयो। अरे ! ओ तो सागैई किसनू इज दीसै। म्हारै अचूभा री तो ठिकाणोई नीं रह्यो। म्हैं उणनैं धीरैसीक बतळायो—किसनू ? पण उणै ध्यान इज नी दियो। वो तो अंगूठी चूसतो, आंख्यां फाड़-फाड़ नै मोटर कानी देखै हो।

म्है फेरूं जोर सूं कह्यो भाणू ! अबकै उणै म्हारै कानी देख्यो। मोटी-मोटी आंख्यां, सफेद-सफेद कोयां में नैनी-नैनी कीकियां, गाला मायै आसूवां रा टेरा सूखोड़ा। छिन भर तो वो देखतो इज रह्यो। पछै एक दम मुळक नै बोल्यो-मामोसा थे आयग्या। म्हूं तो रोज थारै साम्हा मोटर मायै आवूं।

—अरे इज तो म्हूं थनै मिळण नै आयो हूं भाणू !

—पण म्हारी बाई कठै मामोसा ? भाई सा तो रोज कैवे के अबै उणनै सफाखाना सूं छुट्टी मिळ जाएला अर थारै मामोसा उणनै लेयनै आवैला। वो अठी-उठी देखनै बिलखो पड़ग्यो अर म्हनै जवाब देवणो भारी पड़ग्यो। म्हूं अबै उण भोळा कमेड़ा नैं काई जवाब देवतो। उणरा विस्वास नै किया पंडत करतो। जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो उणनैं किया तोड़तो। जिण बरत रै सहारै वो बेरा में उतरियोड़ो हो,

उणनै [illegible] म्हैं थांरी समझ नै [illegible]

—[illegible] है भाई, [illegible] नीं [illegible] उणनै मना-

[illegible] छुट्टी मिळै [illegible]। म्हैं उणनै [illegible] लिखो।

—कदै छुट्टी मिळैला ? थे [illegible] हौ, म्हनै [illegible]।

वो आसी आयनै [illegible]। म्हैं उणनै [illegible] नैं [illegible]

[illegible] नीं [illegible]। म्हैं नीठ [illegible] नै [illegible] राखियो।

[illegible] तूं नीं समझणो है भी आप ! आठै [illegible] दिन पछै मांदी पड़ी ही, अबै [illegible] नीं [illegible] ? ठीक व्हैताईं म्हैं उणनैं मेल नैं आवूं ला। [illegible] उणै [illegible] है अर [illegible] है कै इण मे तू धापू नैं [illegible] मत दीजै।

अबै जावतो उणनैं थोड़ो [illegible] आयो। वो आंख्यां पूछती बोल्यो —

म्हनैं ई बाई कनै ले चालो नीं मामोसा ! म्हूं उणनैं कोई दुख नीं दूला। बाई बिना म्हनैं काई चोखो नीं लागै। अठै म्हनैं भाईसा लड़ै अर धापूड़ी रांड म्हनैं रोज कूटै। बाई तो म्हारै हाथ ई नीं लगावती।

—थूं नांनीजी कनै चालैला किसनू ? वे थारो घणो लाड राखैला अर उठै थनै कोई नीं कूटैला।

म्हारी बात उणनैं जची को नी। थोड़ी ताळ वो ठैर नै वो बोल्यो—

— म्हारै तो बाई कनै जावणो है, नांनीजी कनै नीं जावणो। पछै म्हारो हाथ पकड़नैं फेर बोल्यो --

—मांमोसा छोरा म्हनैं कैवै के थारी बाई तो मरगी ' मन में एक धक्को सो लाग्यो, तो ई म्हैं कह्यौ—

—सफा कूड़ बोलै नकटा, वे थनैं यूं ई चिड़ावै। घरां आयनैं म्हैं उणनैं नीचौ आंगणै उतार दियौ। पण हे रांम ! इण घर री आ हालत ! कठै तो वो बुहारियौ-झाड़ियौ, नीपियौ-गूंपियौ देवता रमै जिसौ कुंपली व्है जिसौ घर अर कठै ओ भूत खांनौ। ठौड-ठौड़ कचरा रा ढ़िगळा, आंगणा रा नींबड़ा हेटै बींटां रा थोकड़ा,ऐंठवाड़ा वासण,उघाड़ौ पणेरौ अर भरणाट करती माखियां। सगळा घर माथै एक अजांणी उदासी, एक अणबोली छिया।

म्हैं धापू नैं हाकौ कियौ तो वा पाडौस रा घर सूं दौड़ी आई। पण सदैई का ज्यूं आयनैं पगां में बाथ नीं घाली। दस बरस री छोरी छः महीनां

मे इज जाणें डोकरी व्हैगी ही। मूखोड़ौ मूडौ, मैला-मैला गाभा, माथौ जाणें सूगणियां रौ माळौ। म्हैं माथै हाथ फेरियौ तौ वा छिवरा-छिबरा रोवण लागी। नीठ बोली राखी।

हाथौ हाथ घर री सफाई करनै नीवड़ा री छिया में मांचा माथै बैठ्यौ तो मन जाणें कियांई व्हैग्यौ। घर रा सूना-सूना सू थाई री याद जुड़ियोड़ी ही। यू लाग्यौ जाणें वा रसोड़ा मे बैठी रसोई बणाय री है अर अबार म्हनै बुलाय लेला। जाणें वा व्याड़ी में बैठी गाय दूह री है अर अबार किसनू नै गिलास लावण रौ हाको कर देला। जाणें डालिया मे बैठी खरटी फेर री है अर अबार बीरौ गावणौ सरू कर देला।

म्हनै बीरौ सुणण रौ अर बाई नै बीरौ गावण रौ कितरौ कोड ही, जिणरौ कोई पार नी। म्हूं आवतौ जितरी वार लारै पड़ जावतौ—बाई एकर तौ बीरौ सुणाय दे! अर वा झीणा कंठ सू सरू कर देवती। आज ई इण अळस दो पार रो मो'र में यू लाग्यौ जाणें वा साम्हा बैठी बीरौ गाय री है—

बागा में बाज्या जंगी ढोल
सहरा मे बाजी सहनाईजी
आयौ म्हारौ जामणजायौ बीर
चूंनड़ तो ल्यायौ रेसमीजी
... ...
मेलू तो छाब भरीज
तोलू तो तोला तीसजी
ओढू तो हीरा खिरजाय
भरू तो हाथ पचासजी
... ...
बागा मे बाज्या जंगी ढोल
सहरा मे बाजी सहनाईजी
आयौ म्हारौ जामण जायौ बीर
चूंनड़ तो ल्यायो रेसमीजी

लारली सात म्हूं आयौ जद बैठौ-बैठौ बीरौ सुणतौ हौ अर बाई गावती ही, उण वखत न जाणें गावतां-गावतां काई व्हियौ सो उणरौ कंठ धूजण लाग्यौ अर आंख्या भरीजगी। म्हैं उणरौ हाथ पकड़नै कह्यौ—ओ म्हू

वाई ? तो बोली—कांई ठी रे बीरा, मन जाणै गूं ई किणां ई व्हैग्यो। सोच्यो थूं रोज बीरी गवावै पण कुण जाणै, लागण काम पड़्यां जद म्हूं रैस्यूं के नीं ?

—थूं इसो गराव सोचै ईज क्यूं ? म्हैं कह्यो।

—यूं ई रे भाई, इण कानी कागा रो कांई भरोसो, आज है अर काल नीं। दूजो जिणनैं जिण चीज री हूंस घणी व्है, वा पूरी नीं व्हिया करै।

गळा में कांटा-सा अटकण लाग्या अर नींवड़ा माथै होड कागला बोलण लाग्या—कां···कां···कां ! किसनूं कठी गयो ? रसोड़ा में धापू एकली बैठी साग बनारती ही, उणनैं पूछ्यां तो जाण पड़ी के गनला कमरा में सूतो व्हैला। जाय नै देख्यो तो आंगणा माथै फाटा-तूटा गाभा बिछायनैं सूतो हो अर वाथ में एक ओरणी भरयोड़ी ही। म्हूं खासी ताळ ऊभी-ऊभो उणरा भोळा-ढाळा चेहरा नै देखतो रह्यो। वो रैय-रैयनैं आपरा नैना-नैना होठां नै भेळा करनै ऊंघ में ईज बोबो चूंघतो व्है ज्यूं वसड़-वसड़ करतो हो।

धापू बोली—ओ रात रा यूं इज सोवै मामोसा ! जे बाई रा कपड़ा इणनैं ओढ़ण बिछावण नैं नीं देवां तो इणनैं ऊंघ ई नीं आवै। एक रात ओ भाईसा साथै सूतो तो सगळी रात जकियो। ओ कैवै के इण कपड़ां में म्हनैं बाई री वास आवै, जिण सूं ऊंघ झट आय जावै। इण वास्तै इज भाईसा ए कपड़ा धुपावै कोनीं।

म्हनैं म्हारी पीळकी गाय री वो लवारियो याद आयग्यो जिकी फगत वीसेक दिन री हो के उणरी मा मरगी। तीन दिन तांई वो ठांण सूंधतो रह्यौ, जठै उणरी मा वांधती। सेवट चौथे दिन डेंडाड़ करतै प्रांण छोड़ दिया। अर ओ लवारिया जिसो इज अवोध किसनू जो फगत पांच वरस रो है अर इणरी जांमण मरगी, उणनैं जे मायड़ रा परसेवा री वास सूंध्यां बिना ऊंघ नीं आवै तो इणमें इचरज री वात ई कांई ?

थोड़ी ताळ में वो जाग्यो तो म्हैं उणनैं कह्यौ—चाल भांणू थनैं सिनांन कराय दूं। देख थारै डील माथै कितरौ मैल जमग्यो है अर कुड़तौ किसौक मैलौ घांण व्हैग्यो है। थनैं सूग ई नीं आवै भोळा ? पे' ली तो थूं कितरौ साफ-सुथरौ अर फूटरौ फर रौ रैवतौ। अबै थारै कांई व्हैग्यौ है ? वो एक सवद ई नीं बोल्यौ, चुपचाप म्हारै लारै आयग्यौ। पण म्हूं उणरौ कुरतौ

उतरावण लाग्यो तो वो एकदम रीसा वळतो बोल्यो—

पे'ली माथो मत काढो नै पे'लो बांयां उतारो—यूं—वो आपरो नैनो सोक हाथ ऊचो करनै बोल्यो। म्हैं उणैं कह्यो ज्यूं पे' ली बांया में सूं हाथ काढ नै पछै उणनै बाल्टी रे खनै बिठाय नै लोटो भरनै उणरै माथा पर कुडण लाग्यो, तो एक दम लोटो म्हारै हाथ सूं झड़पनै फेंकतो थको बोल्यो—

—पे'ली हाथां पगां रे मैल करै के पे'ली माथा माथै पांणी नांखै! इतरा मोटा व्हैग्या तो ई सिनांन करावणो ई नीं आवै। बाई तो सब सूं पे' ली म्हारा हाथ-पग भिगोय नै धीरै-धीरै मैल करती। पछै मूंडो धोय नै लाड करती अर पछै माथा माथै पाणी नामती ए तो ले पाणी नै धड़ ड़ ड़! आ धापूड़ी ई रांड रोज यूं इज करै, अरै इज तो म्हूं सिनांन नी करूं।

म्हनै दुख में ई हसणी आयग्यो। म्हैं कह्यो ले भाई, थाईकरावै ज्यूं इज सिनांन करावूंला थनै। पछै तो कांई नीं? म्हूं उणरा हाथ-पग भिगोय नै डरतो-डरतो धीरै-धीरै मैल करण लाग्यो। कांई भरोसो रीसां बळतो अबकै लोठो लेयनै म्हारा माथा में नी ठरकाय दे। पण इसी कोई बात नी व्ही। काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वो बातां करण लाग्यो—

—बाई तो म्हनै खोळा में बिठाय नै धीरै-धीरै दूध पांवती। गरम व्हैतो तो पे'ली आंगळी घाल नै देख लेवती। फीको व्हैतो तो घाजनै खांड थोड़ी फेर नाखती। अर ए भाई सा तो साम्ही बैठनै भाहाणी पावै। दूध में घी नांख देवै अर पछै जोर कर-कर नै कैवै—पीई! पीई! पीई! अर आ धापूड़ी रांड लारै ही लारै…पीए क्यूं नीरे! पीए क्यू नी रे! है इज किसी रांड, डकण व्हे जिसी। रीस तो इसी आवै के रांड रा लटिया तोड़ नै नाख दूं। म्हनैं दूध में तारा देखनै ऊबका आवै। एक दिन तो उल्टी व्हे जाती। पण नी पीऊं तो भाई सा कूटै। मामोसा बाई आवै जितरै ये अठैइज रही जो, आईजो मती, हो!

म्हैं उणनै यावस देवतां कह्यो—अबै थूं खासो मोटो व्हैग्यो है गेला, कोई दोवो धूंपतो नैनो टाबर तो है कोयनीं। आखो दिन बाई-बाई कांई करै?

… चढ़ाय नै बोल्यो—

… ? बाई तो थवेई म्हनै रोज

[illegible] आवै ।

[illegible] नग-नग में आवै [illegible] अंगूठै री [illegible] कीमीज में [illegible] म्हनै याद [illegible] । [illegible] उणनै पूछ्यो [illegible] पड़्यो हो । [illegible] आवै है सिनान ? [illegible] बींनो [illegible] आवै । [illegible] ताळ आंगणा रा [illegible] आवै, म्हारो

[illegible] गाज [illegible] नीवड़ा [illegible] ऊभी [illegible] । [illegible] म्हनै बींनो [illegible] ।

—नित [illegible] आवै ?

— नित रोज ।

[illegible] गळती नीं करै ?

— [illegible] म्हूं [illegible] सूनी हो ।

उण रात बाई [illegible] आई । नीं तो रोज आवै म्हूं उणनैं सिनांन कराय नैं कपड़ा पेहराय दिया । बाल ठीक करनैं आंख्यां में काजळ घाल्यो तो खासो ठीक दीखण लाग्यो म्हूं कह्यो देख भाणू, यूं सफाई सूं रैवणी, जिणसूं बाई थारी घणी लाड रागैला । अर यूं मैलो-कुचैलो घांण व्हैं ज्यूं रह्यो तो बा आवैला ई नीं ।

म्हारी बात उणरै हीयै ढूक गी । पांटकी हिलावतो बोल्यो— अबै रोज सिनांन करूंला- कपड़ा ई नवा पेहरूंला ।

धीरै-धीरै दिन ढळग्यो । आंगणा री तावड़ो रसोई रा नेवां माथै पूगग्यो, नींवड़ा माथै पंखेरू किचकिचाट करण लागा, ग्वाड़ी में ऊभी टोगड़ी तो वाड़ण लागी अर जीजाजी रे घरै आवण री वेळा व्हैगी ।

बाई रांम चरण हुयां पछै वांरी कांई हालत ही, म्हैं सगला समाचार सुण लिया हा । जे इण टाबरियां रौ बंधण नीं व्हैतो तो वे कदैई ओ घर-बार छोड़नैं नाठ गया व्हैता । पण आ एक इसी बेड़ी ही जो काटियां नीं कटती ही । इण वास्तै नीं चावतां थकांई वांनैं दुकान माथै बैठणौ पड़तौ अर दोन्यूं वखत काया नैं पण शाड़ौ देवणौ पड़तौ ।

टगू-मगू दिन रह्यां वे घरां आया अर म्हनैं मिळनैं काम में लागग्या । दिन आथमियां गाय दूह नैं धापू रै हाथ रा काचा पाका टुकड़ा खायां पछै वातां होवण लागी । बाई री चरचा आवतां ई वांरी आंख्यां जळ जळी व्हैगी । वे बोल्या —म्हारी चिंता नैं म्हूं सहन कर सकूं हूं: पण इण टाबरियां

6925

रा दुख नैं सहन करणौ म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है। धापू नैं तो फेर किंयांई धावस देय सकां, समझाय सकां, उणरा दुखनै थोड़ौ हळकौ ई कर सकां। पण इण पसुड़ा नैं कियां समझावां,इणनैं कांई कैयनै धीरज बंधावां ? इणरै दुख री तो नी दिन रा पातरौ पड़ै अर नीं रात रा। जिण विस्वास री डोर माथै ओ जीवै है, वा जे आज टूट जावै तो इणरौ जीवणौ कठण है, आ पक्की बात है।

जिण दिन सूं म्हूं इणरी मा नैं सांधै मळायनै पुगाय नैं आयौ हूं, उण दिन सूं लगाय नै आज दिन तांई ओ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवण री वाट उडीकै। मोटर पांच-दस मिनट लेट भलाई व्हौ पण इणरै जावण में जेज नीं व्है।

बोलतां-बोलता फेर वारी गळौ भरीजग्यौ अर म्हारी आंख्यां पण जळजळी व्हैगी।

रामगढ़ म्हूं पूरा सात दिन ठहरियौ अर आठमैं दिन रात री मोटर सूं रवानै व्हियौ तो किसनू उण वखत गहरी नींद में सूतौ हो। म्हैं उणनैं जगावण री विचार कियौ तो दिमाग में एक झटकौ सो लाग्यौ। कुण जाणै वाई नींदड़ा रै नीचै ऊभी व्हैला के गोदी में ऊंचाय नै उणनैं चूंधावणौ सरू कर दियौ व्हैला। सो मूनीड़ा रै इज एक हल्कौ सीक वाल्हौ देय'र म्हूं रवानै व्हैग्यौ।

6925

भारत भाग विधाता

एक नैंनीसीक गांमड़ौ। नीठ सौ सवा सौ घरां री बस्ती। रेल्वाई ठेसण अठा सूं बारै कोस पड़ै। बस कठैई आघी-नैड़ी ई नीं चालै। गांम दुसाखियौ होवण सूं गांम वाळां नैं फगत लूंण मोल लेवणौ पड़ै। बाकी सगळी चीजां तौ उठै इज पाक जावै। गांम में घणौ दूध, घणौ घी, कोठियां-कणारां में ऊन्हौ-ठाडौ धांन, राजा राज नैं प्रजा चैन। नीं कोई दुख अर नीं कोई दुआळ। लोगड़ा प्रभु छांना दिन काढ़ै।

पण उण गांम में एक नवी वात वणी। उठै राज री स्कूल खुली। जांणै भरिया तळाव में किणी भाठौ नांख दियौ अर पांणी हिलोळै चढ़ग्यौ।

टीपरिया जितरौ गांम, वात फैलतां कांई जेज लागै।

......रांमा बापू रै नोहरा में स्कूल खुलैला—इसकोल नीं स्कूल!
—राज रौ मास्तर आयौ है—सरकारी एलकार—पटिया पाड़ियोड़ा—धारीदार ढीली-ढीलौ जांघियौ नैं कुड़तौ—आंख्यां माथै चस्मौ—डोळा जांणै मारकणी भैंस—ध्यान नीं राख्यौ तौ अवार सींगड़ौ घुसेड़ दे ला—
अळगा रहीजौ—राज री वेली है भाई...

राजा जोगी अगन जळ, यां री उल्टी रीत
डरता रहीजै फरसराम, थोड़ी पाळै प्रीत...

पांणी चिलम भरै जितरी जेज में गांम रा सगळा छोकरा भेळा व्हैग्या। पांणी जाती पणिहारियां रा पग ठमग्या अर चिलमां पीवता अमलियां री चिलमां हाथ में इज रैयगी। देखतां-देखतां रांमा बापू रौ नोहरौ थवौथव भरी-

अग्यो । कांणा घूंघटा में नूरिया पिंजारा री बीबी चिमूड़ी बोली —

—ए मा ! मास्तर रै तो डाढ़ी मूछ ई कोनीं साफा टांवर इज दी सैं ।

सनैं ऊभी बरजू भुआ नैं आ बात जची कोनी । वा फाटोड़ा बांस री गळाई भरड़ा सुर में बोली—कोई मरतंग व्हियो व्हेला बापड़ारे, जिण सूं भद्दर व्हियोड़ो है । बाकी नैनो कैण रो, घणोई मातो-मणगो है । गांमसाऊ पाडा व्हे जिसो ।

मास्तर मलूकदास तीसरी पास अर चोथी फेल हो । बाप नैनपण में इज मरग्यो अर मा अणूंती लाड राख्यो जिण सूं पूत परवार ग्या । घणा बरस तांई तो कोतमिया री मंडळी में भरती होयनैं—झट जावो चंदणहार ल्यावो-घूंघट नहीं खोलूंगी—गावतो अर घुघरा बजावतो गांम-गांम फिरतो रह्यो । पण भलो व्हेजो भारत सरकार रो सो मुलक में पंचसाला योजनावां सरू व्हेगी । जिणसूं मलूकदास नैं ई बी० डी० ओ० ऑफिस में चपरासी री नौकरी मिळगी । मलूकदास, चपरासी मलूकदास बणग्यो ।

भाग सूं उणरी ड्यूटी बी० डी० ओ० सा'ब रै घरै इज लागी । वो जितरो नाचण-गावण में हुसियार हो, उतरोई हाजरी साजण में पण पाटक हो । सा'ब रे पग दबावण सूं लगायनैं बीबीजी रै पेट मसळणो, अर टाबरां रे डूगा धोवण तक रो सगळो चार्ज उणं आपरै हाथ में ले लियो । अर साल भर में तो बी० डी० ओ० सा'ब नैं गाळ नै पांणी-पांणी कर दिया । एस० डी० आई० सा'ब री सलाह सूं तिकड़मबाजी सूं बंबई हिन्दी विद्यापीट री सर्टिफिकेट कबाड़ नै देखतां-देखतां चपरासी सूं मास्टर बणग्यो ।

इण भांत पे'ली तकदीर खुल्यी मलूकदास री अर अबै इण गांम री ।

धाड़ा मे भीड़ घणी होवती देख नैं रांमो बापू सैंखारो करतां छोकरां री पलटण कांनी देख नै बोल्या—घणा दिन व्हिया है डीकरां उद्यम फिरता नै, अबै फावड़िया उठैला अरै ठा पड़ैला । भणेतर घणी दोरी है । कह्यो है—धी दोई लो सासरो अर पूत दोई लो पोसाळ ।

इतरो सुणतां इज दो एक बीकण छोरा तो हिरण्यां रै ज्यूं कांन ऊंचा करनैं पड़ भागा । अर लारली नागी-तड़ंग पलटण पण लटपट-लटपट करती थाडै चूंटी थारा कांन । जाणैं चिड़ियां में ढळ पड़ग्यो ।

चिमूड़ी ही…ही…ही…करनैं हसण लागी ही…ही…ही…ही!
मास्तर चस्मो उतार नैं खरी मीट सूं उण कांनी देखण लाग्यो । जितरैं तो बरजू भुआ चिमूड़ी कांनी देखनैं बोली—कोई छोटो गिणैं न कोई मोटो

अर आयो दिन ओ पांणी री [illegible] ओ [illegible] री [illegible]। लुगाई री आन है, थोड़ी पांणी ओ [illegible] सागणो चाहिजे।

[illegible] गुणता इज निमूळी [illegible] पांणी पुरसो लाग लियो अर दूजी लुगायां पण [illegible] तळाव पांणी न्हांणे चोखी। मलूकदास ई पाळो [illegible] लियो। गुसल माना री नहलो धे'र लियो।

दूजोड़े दिन इज स्कूल री [illegible] लियो। टावर टोळी मना [illegible] अर मिन्दर है, गाली [illegible] किया जाई री। [illegible] नाळेरां री [illegible] लाग नाळेर नेग-नेग नै [illegible] किया। [illegible] गयो अर पैसां नै टेबल री सांनी भरीजग्यो।

गांम वाळां मिळनै [illegible] कियो — मास्तर परदेसी पंछी — आंपणै गांम में आयो है। कुण तो उणरै दीनैला अर कुण उणरै पीवैला। एकलो जीव है — सो पांनांरी लकड़ी अर [illegible] री बोझ। टावर जितरा पढ़ण नै आवै, वां रै हिसाब सूं वारी बांध दी जावै। मास्तर घर-घर जाय नै जीम लेसी अर सांझ-सवार वारी-सर दूध री लोटी पण मंगाय लेसी।

इण भांत मलूकदास रै तो मास्तरी फाचरै आई पण आई। कठै तो वे बी॰ डी॰ ओ॰ रा ऐंठा-जूंठा बासण मांजनै लूखा-सूखा टुकड़ा खावणा अर कठै आ सायबी भोगणी। रोज टैमसर जीमण नै नूंतो आय जावतो अर वो वांनै बैठ्योड़ा बींद रै ज्यूं रोज बण-ठण नै नित्त नवै घर जीमण नै पूग जावतो। टावरां रा माईत सोचता — महीणै में एकर वारी आवै, मास्तर नै चोखी रोटी घालणी चाहिजै। खावै मूंडो अर लाजै आंख। आंपणै टावर माथै पूरी मैंणत करैला इणारै पढ़ायोड़ा इज मुंसी अर थांणा-दार वणै। कुण जाणै आंपणै छोकरा रा ई तकदीर खुल जावै।

इण वास्तै जिको मावां पोता रा टावरां नै तो बिलोवणा वारी रै दिन पण एक टीपरिया सूं वेसी घी मांगणै पर ठोला ठरकावती, वे इज वारी वाळै दिन मलूकदास नै ताजा घी में धपटमा गळगच्च चूरमा करा-वती। घर में तो टावर दूध री खुरचण वास्तै ई कूटीजता पण मास्तर रै वास्तै निवांणिया दूध री लोटी जळोजळ भरीज नै टैमसर पूग जावती। थोड़ा दिनां में इज मलूकदास रे डील मातै पसम आयगी। कपड़ां लत्तां में ई फ़रक आयग्यो अर आदतां ई खासी वदलगी। धीरै-धीरै देसाई बीड़ी छोड़नै पनामा सिगरेट पीवणी सरू कर दी। वो मन में सोचतो — उमर रा पाछला दिन तो फोगट इज गमाया।

अमर चूंनड़ी

रामा बापू रा बाड़ा में जठै स्कूल खुली ही, दो मोटा-मोटा झूंपा हा। वां में सूं एक में स्कूल चालतो अर दूजोड़ै में मास्टर रैवतो। बाड़ा में चौगान मोकळो हो, इण वास्तै एक खूणा में गांम साऊ फाटक सातर ढींगी-ढींगी बाड़ रो एक बाड़ोटियो बणायोड़ो हो—जिणरै आगै एक जंगी नींबड़ो ऊभो हो। बाड़ा में मास्टर रैवण सूं रामा बापू रै फाटक री दैण मिटगी ही। वाइपंच होवता थकांई बापू ठोट हा। इण वास्तै फाटक में आयोड़ा म्हैसियार ढांडां री रसीदां काटण में वांनै पूरी दिक्कत रैवती। मास्टर रै कारण वांरी आ दिक्कत मिटगी। मास्टर नै रसीद बुक सूंप नै बापू तो छूटा व्हैगा अर मास्टर निहाल व्हैग्यो।

मलूकदास घाट-घाट रो पांणी पियोड़ो एक छंटमी रकम ही। उणै देख्यो कै गांम में गीन च्यारेक आसामियां इसी है कै वांनै 'फैवर' में राखणी घणी जरूरी है। वो आ बात पण आछी तरै सूं जांणै हो कै मालिमो गुड़ सूं राजी रैवै। इण वास्तै उणै नींबड़ा रै नीचै चूल्हो बणाय नै चाय रो इंतजाम कर दियो अर गनै ढाळियो भरनै अरदो पण धर दियो। भायां नै दूजो चाहिजै ई कांई ? दिन उगतां ई जाजम जम जावती। हांडी भरनै चाय ऊकळती, अमलां री मनवारां व्हैती अर चिलमां सूं धूंआ रा गोट उठता। गांम री भली-भूंडी बातां व्हैती अर आप री टंटा री पंचायतां बैठती, डंड-भूळ घलीजता अर डंड रो गांम-साऊ हिसाब मास्टर नै सूंपीजतो।

चाय री चुस्कियां अर चिलमां री फूकां रै विचाळै मास्टर मलूकदास री तारीफां रा पुल बांधता—वाहरे मास्टर वाह ! है पूरो खानदानी आदमी। दूजोड़ो कैवतो—अम्मीरा भाग है जरै इसो हीरो मिळ्यो है, नी तो इण जमाना में इसा आदमी सोध्या ई को लाधेनी। तीजोड़ो टेको राखतो—दो एक बरस ए अठै रैयग्या तो गांम रा सगळा छोकरा 'फिरंट' व्है जाएला। म्हारो पोतो तो अबै सूं इज इंगरेजी बोलण लागग्यो है, म्हनै कैवै—यू डेम फूल ! म्हूं कैवूं रे बनिया फूल तो सूं है, म्है तो पाका पांन हां। मोटोड़ो मारो ई नाक में गुणगुणावतो— क्यूं नी सा इंगरेजी बोलणो कांई बड़ी बात है, मास्टर बड़ा विदमान है। कितरा तो इणा नै पळभी गाणा आवै अर कितरा इणांनै नाच आवै। मूंडा सूं बाजो बजावै जांणै सागी साग इंगरेजी वाजो बाजण लाग्यो। म्हारै रामूड़ो ई थोड़ो-थोड़ो बजावणो सीखग्यो है। होठां आडी ऊभी हथाळी राखनै यूं बजावै

[illegible] ? [illegible]!
माडो —[illegible] —हू···
[illegible] एक गावै [illegible]
हू··· हू··! [illegible] आव जावनी
जावना।

[illegible] काई है ? [illegible] फली [illegible] मानो। सगळांई [illegible] आवो। [illegible] है, सो [illegible] दांता, [illegible] लेवै ज्यूं [illegible] रा दूजा [illegible] पूरी गांम [illegible] गाम देखता [illegible] आवैला। इण जमाना में रेडियो गांम री रूपक है। [illegible] आप [illegible] रुपियां री

[illegible] आपरै हाथ री वात है वाकी तो सगळो गांम म्हारी मुट्ठी में है, धारां जियां कराय सकां। अर आगै जायनै वापड़ा रेडिया री जिनात ई कांई? एक वळद री मोल! गांम रै वास्तै भार ई कांई है। गांमसाऊ रुपिया आपरै गनैइज है। आप जोधपुर जाय नै रेडियो लेय पधारो। अठै विराजो जितरै खूब धूं धावो अर वदळी व्हैनै पधारो जद रेडियो आपरो नैं आपरै वापरो। गांम री तरफ सूं आपनै भेंट। आप म्हांरै ऊपर इतरी मेहरवानी राखी, म्हांरै टावरां नै जिनावरां सूं मिनख वणावो तो म्है कोई नुगरा थोड़ा इज हां।

अर महीना भर में स्कूल में साचांणी रेडियो आयग्यो। असली फलीप्स रेडियो—लौड स्पीकर समेत। पूरा गांम में खलबली मचगी। एक अनोखी चीज गांम में आई—जो चावी फेरियां मिनख रे ज्यूं बोलै

अवै रोज दिन उगै अर नींवड़ा पर सूं पूरा गांम में आवाज आवै—ये रेडियो सीलोन का व्यापार विभाग है—अब सुनिये मोहम्मद रफी को, दिल तेरा दीवाना में—

लाल-लाल-गाल! लाल-लाल गाल! ···और अब सुनिये एक बेहतरीन और दिलकश तस्वीर प्यार की रात में लता मंगेशकर को —

बिछिया मोरा छम छम बाजै !

बिछिया मोरा छम छम बाजै !

अर माथा पर बैठ्यो सिगरेट री फूंक नांखतो मास्टर, नीचै बैठ्या भाय री चुस्किया लेवता मारा, स्कूल रै पिछवाड़ै घर री कांम-काज करती बिगूड़ी, पणघट पर पाणी भरती पणिहारियां, गैला काटती जावता मोटयार दर पोडा पापड़ी छोरियां-सगळो गाम एक सागै इण माथा हिन्नाय नैं गुणगुणावण लाग जावै—

बिछिया मोरा छम छम बाजै !

बिछिया मोरा छम छम बाजै !

अर उटीनै जिनावर सू मिनख बणण री कोसिस करता छोरा आपस में बातां करै—

—ए बरगू थैं बाल यू काई ओंमिया रे ?

—कीकर ?—पाटी रै थूक लगावतो दूजो बोलै।

—अटीनै म्हारै कानी देख ! दोन्यू कानी गुफाचा बीच में फूल अर सारै मरमरिया।

मिसाक फूटरा दीसै ? माटसा'ब रै ज्यू रा ज्यू है कै नी ?

—हूं ! 'बाळां मे गु फाया है तो काई व्हियो—

बुसट्ट कठै ? फाटोड़ी सो अंगरखियो अर बाल सिणगार नैं पधारया है। म्हारै बुसट्ट नैं देख, मायै फलमी आदमिया रा फोटू है। माट सा'ब रै ही शट्ट माथे ई दसा रा इसा फोटू है।

—जाए नी बापड़ आधी। मोटी घणी आई बुसट्ट वाळी एक झीगरी फराम लियो सो मिजाज बतावै। म्हारै काको अमदावाद जासी जद म्हूं ई मंगाय लेसू। थारै तो दूण झीपरा मायै फल्मी आदमियो रा फोटू है अर म्हारै बुसट्ट मायै फल्मी लुगाया रा फोटू व्हैला। पण बेदा थनै तो आज माट सा'ब मार नांखला।

—क्यू ?

—काले साल रा थारी बारी ही अर यू माट सा'ब रा पग दबावण नैं क्यू नीं आयो ? म्हे तो सगळा आया हा।

—अरे यार माटसा'ब नैं याद मत दिराई जै यार, आंपां दोस्त हा नी यार !

—थू तो थारै बुसट्ट री मिजाज बतावै हो नीं रे। खैर अबै पक्को

दोस्त बणणो व्है तो एक काम कर ।

—काई ?

—म्हारा घर में एक कणियो लागनै ऊभो है । घर में ऊभो गुण लागण दे। ठा पड़

—कणियां कठा सूं लावूं यार ! जावै तो काको म्हारी टाट पोली कर दे यार !

—धीरै बोल स्याणा !

—थूं कणिया रो काई करसी यार ?

—बीड़ी नै माचिस लावूंला ।

—थूं बीड़ी पीवै ?

—हां, हां, पीवूं, फरर्र जोर ।

…छोरा पावड़ा जोर-जोर सूं बोलनै लिगो रे ए नांगिया-सिट डौन-सिटडौन !

…एक दू दू…दो दूना च्यार…दो दूना च्यार !

—बीड़ी में थनै काई मजो आवै यार ?

—थूं बापड़ काई समझै इण बातां नै । बीड़ी पीवण में कई गुण है, देख—

एक तो बीड़ी पीवण सूं मूछां वेगी आवै । दूजी बीड़ी पीवण सूं ताकत वधै अर तीजी ठाट कितरो रैवै —अपटूडेट वणयोड़ा व्हां—यूं दोन्यूं आंगळियां रे बीच में बीड़ी पकड़योड़ी व्है, पे'ली लांबी फूंक सांच नै धीरे-धीरे नाक सूं धुंओ काढां, पछै मूंडो ऊंचो अर होट भेळा करनैं तलवार कट मूंछां रे नीचै सूं फु ऊ ऊ ऊ ऊ ! जांणै अंजण आयो ।

बुसट्ट वाळो छोरो हसतो थको बोल्यो-तलवार कट मूंछां केड़ी व्है यार ?

—आंपणै मलूकिया माट सा'व रे केडी है, दिखै कोनीं । पण म्हूं मोटो होस्यूं जद बंदूक कट राखस्यूं—देख यूं-पछै फु ऊ ऊ ऊ ! बुसट्ट वाळो छोरो पाटी में माथो घालनैं फेर हसण लाग्यो ।

—हसै कांई रे वोफा ! बीड़ी में गुण नीं व्हैता तो ए मोटा-मोटा आदमी क्यूं पीवता ?

—आंपणै माट सा'व तो धोळी बीड़ी पीवै यार !

—अरे देखली मलूकिया मास्टरिया री धोळी बीड़ी, आंपां काळी पीवांला । थूं रूपियौ तो लाव दोस्त, पछै देख थनैं फिरंट बणावूं । बोल

सागीक ?

—सावूंला

—पिनारी ?

—जिसम

—मिळारो हाथ माई डियर—यू डेम फूल !

…अरे आज हाल तांई दूध री लोटी क्यूं नीं आई रे ? किण री बारी है ?

—आज राजिया री बारी है सा ।

—स्साला राजिये का बच्चा ! दूध क्यू नीं लायोरे ?

—आज भैंस गुमगी सा, म्हारी मा ढूंढण नै गई है ।

—भैंस पड़ी कुआ में अर ऊपर पड़ी थारी मा । दूध टैमसर आवणों चाहिजै । नी तो मार मार नै टाट पोली कर दूला ।

★ ★ ★

रोज री एक लोटी तो महीना री तीस लोटी । बरस रा महीना व्है बारै, अर तीन बरस रा छत्तीस । दिन आवता कांई जेज लागै । हांकरतां तीन बरस बीतग्या । मलूकदास रै पेट में गांम रो मणावध दूध भर भी पूगग्यो ।

पण मलूकदास ई नुगरो नीं हो । उणै गांम सूं जितरो लियो । उणसूं ई बेसी पाछो देय दियो । लियो जिणरी कीमत तो उणरै-पोतारै पंडताइज ही पण दियो जिणरी थाग पीढ़ियां लग हो । स्कूल में छोरा दो दूनी च्यार सूं आगै तीन दूनी छः भलाई नी सीख्या व्हो, पण बीड़ी पीवणी चोरी करणी, कूड़बोलणो अर आगा-पाछो करणो आछी तरियां सीखग्या । घरटी फेरतां हरजस तो बंद व्हैग्या अर फिल्मी गीत गूंजण लाग्या—अंखियां मिलाके—जिया भरमाके—चले नहीं जाना हो हो चले नहीं जाना । गांम में दो च्यार मुकद्मा ई चालू व्हैग्या, जिणसूं लोग-बाग कई दफा रा जाणकार व्हैग्या । कैवण रो मतळब ओ के गांम रो मोकळो सांस्कृतिक विकास व्हैग्यो ।

पण इतरो लियां पछैई गांमवाळां नै संतोस नीं हो । भुगरापणा सूं सांग मांयनै रा मांयनै धच-भच करण लाग्या—

…मास्तर आयै बरसाळै सालो साल खेती करावै, टको एक खरच नीं करै अर मणां बंद धांन मुफ्त में कवाड़ लेवै ।

दोस्त बणणो व्है तो एक काम कर।

—कांई ?

—थारा घर में एक रुपियो लावणै म्हनै दे।

—रुपियो कठा सूं लावूं यार ! घर में म्हनै कुण लावण दे। ठा पड़ जावै तो काको म्हारी टाट पांनी गी कर दे यार !

—धीरै बोल स्साला !

—थूं रुपिया री कांई करसी यार ?

—बीड़ी नै माचिस लावूंला।

—थूं बीड़ी पीवै ?

—हां, हां, पीवूं, करनै जोर।

...छोरो पावड़ा जोर-जोर सूं बोलनै लियो रे ए नौथिया-सिट डौन-सिटडौन !

...एक दू दू...दो दूना च्यार...दो दूना च्यार !

—बीड़ी में थनै कांई मजो आवै यार ?

—थूं बाघड़ कांई समझै उण बातां नै। बीड़ी पीवण में कई गुण है, देख—

एक तो बीड़ी पीवण सूं मूंछा वेगी आवै। दूजी बीड़ी पीवण सूं ताकत वधै अर तीजो ठाट कितरो रैवै—अपटूडेट वणयोड़ा व्हां—यूं दोन्यूं आंगळियां रे बीच में बीड़ी पकड़योड़ी व्है, पे'ली लांबी फूंक खांच नै धीरे-धीरे नाक सूं धुंओ काढां, पछै मूंडी ऊंची अर होट भेळा करनै तलवार कट मूंछां रे नीचै सूं फु ऊ ऊ ऊ ऊ ! जांणै अंजण आयो।

बुसट्ट वाळो छोरो हसतो थको बोल्यो-तलवार कट मूंछां केड़ी व्है यार ?

—आंपणै मलूकिया माट सा'व रे केडी है, दिखै कोनीं। पण म्हूं मोटो होस्यूं जद बंदूक कट राखस्यूं—देख यूं-पछै फु ऊ ऊ ऊ ! बुसट्ट वाळो छोरो पाटी में माथो घालनै फेर हसण लाग्यो।

—हसै कांई रे वोफा ! बीड़ी में गुण नीं व्हैता तो ए मोटा-मोटा आदमी क्यूं पीवता ?

—आंपणै माट सा'व तो धोळी बीड़ी पीवै यार !

—अरे देखली मलूकिया मास्टरिया री धोळी बीड़ी, आंपां काळी पीवांला। थूं रूपियो तो लाव दोस्त, पछै देख थनै फिरंट बणावूं। बोल

साधीड़ ?

—गाडूला

—किसरो ?

—किसन

—किसनो हाथ मांई दिखर —हू हेप यूप !

…अरे आज हाल तांई दूध री मोटी कटू मी आई रै ? किण री बारी है ?

—आज पार्जिता री बारी है मा।

—म्हारा पार्जिये का बच्चा ! दूध कटू मी माजीरै ?

—आज भेंस गुमगी मा, म्हारी मा हूरण में गई है।

—भेंस थारी गुमा में अर ऊतर पड़ी थारी मा। दूध टेमसर आवणो चाहिजै। नीं तो थारे मार में हाड पोली कर दूंला।

* * *

गेज री एक मोटी नी महीना री तीन मोटी। बरस रा महीना म्है बारै, अर तीन बरस रा छत्तीस। किन आवणा बारै जेज लागै। हाकरनो तीन बरस बीतग्या। मनूबदास रै नेट में गाम री मलायेध दूध घर नी पूगाद्यो।

पण मनूबदास ई सुगरो नीं हो। उणे गाम सूं जिसगे लियो। उणसूं ई बेगो पाछो देय दियो। मियो जिणरी कोमन तो उणरै पोसारै पकवाइज ही पण दियो जिणरो पाण पीढ़िया लग ही। स्कूल में छोरा दो दूणी च्यार सूं आगै तीन दूणी छः भणाई नीं सीखता म्हौ, पण बीड़ी पीवणी चोरी करणी, कूड़बोलणो अर खाणा-खाणो करणी आछी तरियां सीखग्या। परदेसी पैसो हरजग तो बद म्हैग्या अर जिस्पी तीन गूजण लाग्या—अंखियां मिलाके—जिया भरमाके—चले नहीं जाना हो हो चले नहीं जाना। गांव में दो च्यार मुकदमा ई चालू म्हैग्या, जिणसूं लोग-बाग कई दफा रा जाणकार म्हैग्या। कैवण री मतलब ओ के गांव रो मोकळो सांस्कृतिक विकास म्हैग्यो।

पण इणरी किया पछैई गांमवाळा नै संतोष नीं हो। गुमरापणा सूं लोग मांयनै रा मांयनै चर्चा करण लाग्या—

" सागर आयो बरसाळै गाळो घास लेनी चरायें, टको एक लरच नीं करै अर मणां बद धान गुरुन ने कबाड़ लेवे।

·· मास्तर ठाकरां री हुक्म बेन साथै उर कामरिया टाबरां रेग जावै ।

···मास्तर एस० डी० आई० नै घी रा पालिया पुगावै अर बी० डी० ओ० आवै जद दारू री बोतल तैयार राखै ।

···मास्तर एलकारां सूं मिळ नै गांम रै नाम सूं सिमंट अर पतरां रा झूठा परमट कढावै अर ऊपर रा ऊपर पैसा खाय जावै ।

···मास्तर पनरै दिन रोजनो फिरै अर छोरां नै आखर एक नीं पढावै।

···मास्तर गांम में धोड़ा घलावै अर मुकदमा बाजी करावै ।

···मास्तर नूरिया पिंजारा रै अठै रात-बिरात जावतौ रेवै अर आधी-आधी रात तांई बैठका करै । नागड़ी रांड बिमूड़ी ही ही करनै हंसती रैवै अर वो सिगरेटां फूंकतौ रैवै ।

रांमा बापू रे जीव नै गिरै व्हैगी । ओ सगै ह्याया गांम में कोढ़ी दुख घालियौ । सूती बैठी डोकरी नै घर में घाल्यो घोड़ो । इसी ठा व्है तो तो स्कूल रै लारै पावड़ै-पावड़ै धूड़ बाळता । इसी पढाई पांत तो गांम रा छोकरा ठोट रैय जावता तो कोई खोटी बात नीं ही । गाडर पाळी ऊन नैं अर ऊ भी चरै कपास । पगरखी सुख नैं पे' रीजै । माथा फोड़ी करनैं स्कूल खुलवाई तो इण वास्तै ही के गांम रा टाबर पढ़ लिख नैं हुंसियार वणैला अर गांम रौ सुधारो व्हैला । पण ओ तो जबरो सुधारो व्हियौ । अवै करणी तो कांई करणी ? आ तो जबरी दैण व्ही ?

तीन वरसां में स्कूल में टाबरां री संख्या घटती-घटती च्यार-पांचेक व्हैगी । वे ई मरजी पड़ै जद आवता अर मरजी पड़ै जद छुट्टी मनाय लेवता । स्कूल तिकड़म बाजी री अड्डो बाणग्यौ । गांम में नेखम दो पार्टियां पड़गी । व्हेतां-व्हेतां एक दिन इसी आयी के आपसरी में भिडंत व्हैगी । लाठियां वाजी अर दो तीनेक रा माथा फाटग्या । कहावत है के घर घांचियां रा वळै जद ऊंदरा पण भेळा इ ज सिकै, सो मास्तर मलूकदास पण लपेटा में आयग्यौ अर बळदां रे खांधै चढ़ नैं सफाखानैं पूग्यौ ।

★ ★ ★

रात वीत्यां दिन उग्यौ । आज स्कूल रौ भूंपौ सूनौ पड़चौ हो अर लगातार तीन वरस सूं बौलतौ लौडस्पैकर मूंडौ लटकायां नीं बड़ा माथै चुपचाप पड़चौ हो । नींबड़ा री टींग माथै एक भूडौ गिरजड़ौ आंख्यां मींच्यां अर नाड नीची कियां बैठ्यौ हो । नींबड़ा रै नीचै चाय वाळी हांडी ऊंधी पड़ी हीं अर चूल्हा री राख में एक पांवरियौ कुत्तौ सूतौ हो ।

बदळौ

संसार मे सगळा दुख चोखा पण पेट री [illegible]। [illegible]
भव रा वैरी दुस्मण नै ई पेट री दास [illegible]
पछै टाण सूंपनी अर डैराड़ करनी [illegible]। [illegible]
गूंटा पछै डाफ। चूक छिपोड़ी [illegible]
गूंगा जिनावरां री बानां है। मांनखा [illegible]
इण आफत री काई माप ? इण [illegible]
मोटपार बेटो बुढापा मे [illegible]
उण बायल री काई मवम ? [illegible]
उण बिपदा मे कुण आण [illegible]
जिणरै पीड़। घायल री [illegible]

इण वास्ते डोकरा नाए [illegible]
बिचाळै मायो पाल्या [illegible]
सरीर हिल आवतो। मुक्ता [illegible]
डाई ही। रमम-रिवाज [illegible]
तो वानै बावस देवना [illegible]
डोकरो नाय मायो [illegible]

उणांरो एकलड़ [illegible]
उमर रो आधार, [illegible]
दिन छिपता पईं [illegible]

नीं लाग्यो।

नाथू गांम रो सैणो कोरा भलाई वाळो अगवाण अर भलो आदमी हो।। उणरै बडेरां लांबी-चवड़ी भलाई करी थी कै, उणरै वास्तै तो दूजा री चीज हराम बरोबर ही। अर उणरो बेटो पनियो तो उण सूं ई दो पावडा आगै हो। गांम अठै री गाय। नीं गांई री हरी में अर नीं कोई री भली में। आपरा सैणी रा गांम सूं उणनै दुस्मन ई कोनी मिळतो। पच्चीस बरसां रो हुयो पण कांई री आंख में गाल्यो ई कोनी गुड्यो। पण फांसी पुळ आवै जद गीग नै नीं आवै। उण बगत पेट रा गाभा ई दुस्मण बण जावै। सो पनियो सैणो बालक अर निरदोस होतां थकांई एक चोरी रा मामला में फसाईजग्यो। कारण रा कसूर फगत इतरो इज हो के वो जात सूं सैणो अर उमर सूं मोटयार हो।

किसनजी गांम में एक मोतबिर आदमी गिणीजतो। पीढ़ियां सूं जग्योड़ी घर होवण सूं वांरै घर में रामजी राजी हा। तीन दिनां पे'ली किसनजी रै घर में एक मोटी चोरी हुई अर चोर हजारां रो माल लेयग्या। इण सूं गांम में तो कांई पण चोवळा में ई हाहू मचगी। पुलिस री कार-वाई सरु हुई अर सूका-नीला भेळाइज बळण लाग्या। इण धा-धूं में पनियो ई लपेटा में आयग्यो। पुलिस मार-मार नै उणरा हाडजोजरा कर नांख्या। उणरै पसवाड़ां अर गुप्त अंगां मायै मरम री चोटां लागी। जिण सूं तीन दिनां तांई खून थूक नै सेवट उणनै मरणो पड़ियो।

अर इणरै पनरै दिन पछै डोकरी ई रात'र दिन बेटा रै वास्तै झुर-झुर नैं हाय-हाय करतां आपरा प्राण छोड़ दिया।

डोकरी नैं बाळ नैं नाथू घरै आयौ तो संसार उणनैं सूनो लागण लाग्यौ। पनिये उणरी कमर तोड नांखी ही अर रही-सही कसर डोकरी पूरी कर दी।

नाथू आपरा मोटयार पणा में बड़ो सुखी हो। पूंगळगढ़ री पदमणी व्है जिसी आपरी लुगाई पारू अर राजकुंवर व्है जिसा पनिया नैं देखनैं उणनैं आभो टोपाळी जितरो निजर आवतो। नैंहचा सूं बैठनैं पारू री भूरी-भूरी आंख्यां में आपरी तस्वीर देखतौ वो कदैई थाकतौ ई नीं हो। इण वास्तै जिको संसार उणनैं इंदरापुरी सूं ई इदको लागतो वो इज आज आकड़ा सूं ई खारो लागण लाग्यो। उठतां-बैठतां, खावतां-पीवतां हरदम उणरी आंख्यां रे आगै वा काळी अंधारी मौत सूं ई डरावणी रात फिरण

लागतौ, जिण रात पनियै दिनूगा तांई खून थूकयौ अर सेवट हिचकी खाय नै गावड़ एक कांनी लटकाय नांखी ही।

उणनै याद आयौ किसनजी रे ई एकाएक बेटी है—नरपत-अर उणरे मांयली सैतांन जागनै जोर-जोर सूं हसण लाग्यौ।

थोड़ा दिनां में नाथू अधगेलो व्है ज्यूं व्हैग्यौ। उणनै नी तो पोतारै कपड़ां-लत्तां री सुध-बुध ही अर नीं पोतारै पंडरी। वो तो रात'र दिन पळवट में छुरी अर हाथ में लट्ठ लियां गांम में फिरतौ रैवतौ। अंधारी रात रा सरणाटा में जिण वेळा दुनिया सुख री नींद सोवै, नाथू किसनजी रै घर रै च्यारूंमेर थांटा देवतौ। लोग-बाग उणनैं देखनै डरण लागग्या। हरदम उणरी आंख्यां सूं अंगारा झरता रैवता अर इसौ मालूम व्हैतौ के जाणै इण अंगरां में बळनै किसनजी रो परिवार भस्म व्है जाएला।

नरपत अर ठाकुर रा कुंवर रै आपसरी में बड़ो मेळ हो। बारै एकण दांतै रोटी तूटती। कुंवर रोटी घरै खावतौ तो कुरलौ नरपत रे घरै आयनै थूकतौ। नरपत ई कूंवर रे लारै छिया री गळाई लाग्योड़ो रैवतौ। कुंवर नै सूरां री सिकार रो बड़ो चाव हो सो नरपत पण करेई-करेई जायबो करतौ।

एकर भादवा री महीनो हो अर प्रभात री वेळा। जमांनो उण बरस चोखौ पाक्योड़ो हो। गाम सूं उगमणा आयोड़ा डूंगर नीला हेवन व्हैग्या हा अर वांरे ढाळ में आयोड़ा कोसां लांबा खेत, इसा लागता हा जाणै हरियल जाजम बिछायोड़ी व्है। डूंगर सबळ होवण सूं यां में मोकळा जिनावर रैवता। सूरां री तो ओ खास ठायो हो। वे डारां री डारां निसंक फिरता अर देखतां-देखतां मैंणत सूं तैयार कियोड़ी करसां री कमाण नै धूड़ धांणी कर नांखता।

उण दिन प्रभात रा इज कुंवर नै सिकार जावण री जची। वो नरपत अर कई आदमियां रे सागै घोड़ां माथै चढ़नै कुत्ता री पळटण लियां डूंगरां री ढाळ में पूग्यो। सूरां री डारा रात-रात भर खाखा बरबाद करती अर दिन उग्यां पे'ली-पे'ली आयनै झाड़िया में बैठ जावती। एक झाडी में रात भर मलाजा खावण सूं, पेट फुलाय नै मस्त व्हियोड़ो डार पड़ी ही। या हा हूं सुणनै बारै निकळगी। सूरां नै देखतां ई घोड़ा रे एड़िया लागी अर घोड़ा हवा सूं बातां करण लाग्या। घोड़ा री टापां अर बदूका रे धम्मीड़ां सूं डूंगर गूंजण लाग्या।

बदळौ

नाथू एक सूनका भाठा रै ओळै छिप्यो सगळा [illegible] अर बावळा सगवारा रो खेल देखै हो। जिणनै भी उणगी गमगी झाड़ी में सूं अरड़ाट करतो एक डरावणो सूर निकळ्यो। झाड़ी रा कांकरा चरड़-चरड़ करती कांनी अर वो नाथै सामी ऊभो व्हे'गो। मान भर तो नाथियो व्हे जियो डीगो अर मोटो फेर व्हे जिगो। मूंडा मां दीगी-लांबी दातरड़ियां जिगां पूरो साठ बरस रो जवान हो।

कुंवर री निजर उण माथै पड़ी अर घोड़ो लारै फेंक दियो। कुत्तां अर घोड़ां नै लारै आवता देख नै सूर ई भागण लाग्यो। पण भागतोड़ा सूर रै पीठ में कुंवर रै हाथ री गोळी सरणाट करतोड़ी लागी अर सूर घायल व्हेग्यो।

गोळी लागतांई उणरू अरड़ाट कियो अर सम्मुख आई झाड़ी में बड़ग्यो। कुंवर अर उणरा साथीड़ा सगळाई झाड़ी नै घेर नै ऊभा व्हेग्या। जोर री हाकल हुई। सूर घायल व्हियोड़ो अर बिफरयोड़ो झाड़ी रै मांयनै बैठ्यो हो। एक दो सिकारी कुत्ता हिम्मत करनै झाड़ी रै मांयनै घुसिया तो घुसतां पांण डाकी वांनै कागद रे ज्यूं चरड़ करता चीर नै थूंट सूं बारै उछाळ दिया। कुत्ता काऊ-काऊ करता जमीन माथै आय पड़्या अर आंतरड़ा बारै निकळग्या।

झाड़ी माथै गोळियां रीं बरखा सी होवण लागी तो सेवट विकराल व्हियोड़ो सूर बारै निकळ्यो। आंख्यां सूं आग बरसै ही अर वो चरड़-चरड़ करतो दातरडियां पिसै हो। उण बखत नरपत आपरो घोड़ो सावितात उण काळ कांनी वदाय दियो। सरपट आवता घोड़ा नैं देख नैं सूर तारा री गळाई सांम्ही तूटो। अबै उणनैं मौत री ई भौ मिटग्यो हो। सरणाट करती एग गोळी चाली पण ऊपर होय नैं निकळगी।

जिण भाठा रै ओळै नाथू छिप्यो हो उणरै ठीक सांम्ही नरपत अर सूर री टक्कर हुई। चरड़ाट करती दातरड़ी बाजी अर हाथ भरियो घोड़ा री पसवाड़ी फाड़ नांख्यो। घोड़ो सरणाट नै एक दम आभै कांनी उछळियो अर नरपत जमीं माथै आवतां वाजियो।

सूर आधोक खेत रवा दौड़नैं पाछो फ़िरची। अबकी फेट में जमीं माथै पड़्या नरपत री वारी ही। —दातरड़ी चालैला चरड़ करती—अर आंतरड़ियां बारै—नाथू मन में सोच्यो। उणरी आंख्यां चमकण लागी। वो खुसी सूं नाचण लाग्यो। आंख्यां ठंडी करण नैं वो उछळ नैं आगै आयग्यो

अर मोर-ओर सूं ताळियां बजाय-बजाय नैं हसण लाग्यो—हा-हा-हा...हा !

उणैं देख्यो के कुंवर अर दूजा सगळाई साथी बाकौ फाड़ियां अळगा ऊभा हा अर नरपत घायल व्हियोड़ो जमीं माथै पड़्यो हो अर उठी नैं सूर आवतो हो पवन रै वेग रै उनमान बरड़ाट कियोड़ो। पण ओ कांई ? उणरो हीयो ठाडो पड़ण रै बदळै बळण क्यूं लाग्यो ?

बिजळी रै पळाका रै ज्यूं दिमाग में एक विचार आयो—अरे बाप रो एकाएक बेटो मर जासी—म्हारी आंख्यां रै सांम्ही अबार देखतां-देखतां मर जासी। म्हारै लाडके पनियैं रै ज्यूं ऊमां-ऊमां खतम व्है जासी। म्हारो पनियो, म्हारो नरपत ! उणमें सोळूं आना मिनखपणो जागग्यो।

अर वो आंख्यां मींच नैं कूद पड्यो नरपत—नीं-नीं पनिया नैं बचावण नैं। हाथ में उणरै हाथ में वा सागण छुरी ही, जिकण सूं नरपत रो खून करणो चावै हो। भाठा सूं भाठो आफळै ज्यूं टक्कर हुई अर छुरी ठेट डांडा तांई सूर रै पेट में घुसगी। पण सागै-सागै नाथू रो पेट पण ठेट ना भी सूं लगाय नै काळजा तांई चिरीजग्यो।

कांनी कांनी सूं बंदूकां रा फायर हुआ धड़ाम ! धड़ाम ! अर सूर ठंडो व्हैग्यो। नरपत रै आंख्यां सूं आंसूड़ा टपक्या टप टप। अर मरतां-मरतां नाथू रै होठां माथै मुळक आई।

खूंटारी आवरू

राजू पटेल री घर गांम में तो कांई पण चौगळा में ई चावो हो। सात पीढ़ी सूं जम्योड़ी ग्वाड़ी माथै रांमजी री किरपा होवण सूं लिछमी री उठै नेम्म वासो हो। पटेल नै वळदां री अणूंतो कोड हो। इण कारण उणरी वळदारी में कोई वीस नेड़ी जोड़ियां हरदम लाधती। जात-जात री अर भांत-भांत री। सांचोरी, नागोरी अर धाटी। एक-एक सूं आगळी। वळदां री चाकरी पण पटेल उतार ही। इण कारण वळद पण सगळाई थूथकारिया पाबूजी रे पड़ में मांडै जिसा हा। इतरी व्है तां थकांई पटेल रो मन नीं पतीजतो अर वो आई साल तिलवाड़ै, नागोर अर पोकरजी पूग जावतो नैं उठा सूं एकाध टाळमी जोड़ी लेय आवतो।

यूं पटेल जोड़ियां मोकळी लीवी अर मोकळी वेची पण अवकाळै जिको जोड़ी तिलवाड़ा रे मेळा सूं लायो, उणैं सगळी जोड़ियां नैं मात कर दी। वळद पटेल रे कानां तां ई डीगा अर धवला सफेद बगला री जात हा। डील माथै पसम इसी के माखी वैठी व्है तो पितळ जाए। नैंनी मूंडी, छोटा सींग, भूलती कांवळ, पतळी पूंछ अर गोळ गट्ट थूंवी। सागी साग जांणै सिवजी रा नांदिया। पटेल चाकरी करण में ई पछै पाछ नीं राखी। पाला अर फळ-गटी सूं ठांण भरया रैवता। इण रै उपरांत दो न्यूं वखत जव-ग्वार री वांटौ, सियाळा में तिलां री सैलाण्यां अर ऊपर सूं गावा घी री नालां। वळद वण्या तो पछै वे वण्या के चालै तो ई जाणै जमीं थरकै।

गिणगौरां री मेळो आयो। पटेल रे अबकै भगवान जांणै कांई जची सो

जाय नैं गाम रा ठाकर नैं अरज कीवी—ठाकरां गुन्हौ माफकरावौ तो एक अरज करूं—अबकाळै गिणगौर रा मेळा में आपरै अवलख घोड़ा सागै म्हारै बळदां री दौड़ करावणी चावूं।

ठाकरां थोड़ा मुळक नैं हूंकारौ दे दियौ। पटेल री जोड़ी चोखळै चावी ही तो रावळौ घोड़ो पण हजारां में एक हो। बात फैलतां काई जेज लागै। गिणगौर रै दिन मिनखां री तौ थट्ट लाग्यौ। हियौ-हियौ दळीजै। थाळी फेंकी व्है तो नीची नी पड़ै।

सगळा री आंख्यां मैदान कांनी'ज लाग्योड़ी ही के रावळौ घोड़ो अर राजू पटेल रौ रेवळौ एक सार्थे इज मैदान में उतरिया। हांकरतां दौड़ सरू व्हैगी। पवन रै उनमांन घोड़ौ उडियौ अर आधी रैंदोट री गळाई बळद ई उपड़िया। देखण वाळां नैं तो फगत धूड़ री गोट इज निजर आयौ। हांका-धाकां में जोड़ी आगै निकळगी अर घोड़ो लारै रैग्यौ। ठाकर चौधरी रा मौ'र थापौटिया।—घणा रंग है थनै अर थारी जोड़ी नै। बळद व्है तो इसा व्है।

संजोग री बात इसी बणी के वाइज जोड़ी महीना भर पछै चोरीजगी अंधारी पड़तांई चोर बाड़ तोड़ नैं बळदां नैं लेय उडग्या। चौधरी बळदारी में थारी मांखण नै गयौ तो खूंटी खाली मिळयौ। वो डाफाचूक व्हियौड़ौ सीधौ ठाकरां कनै पूगो।

—धणियां चोरां बळद काढ़ दिया है सो फुरती सूं वार चाढौ। इसी नीं व्है के जोड़ी हाथ में सूं जावती रैवै।

ठाकर नै मसखरी करण री मौको मिळयौ। बोल्या—पटेल थारी जोड़ी नैं म्हारौ घोड़ौ तो पूग नी सकै। पछै यूं कैवै ज्यूं करां।—सांमदां ओ मसखरी करण री वखत नी है, ओ तो गांम री इज्जत रौ सवाल है सो फुरती करावौ।

ठाकर नैं तो फगत कौतक इज करणी ही सो चिलम भरै जितरी जेज में ऊंटां अर घोड़ां माथ वार चढ़ी। चोर तीन-च्यार कोस गया व्हैला के वार लारै पूगगी। ठाकर अवलख घोड़ा माथै सवार हा अर चौधरी ताजणी तोड पर। ठाकर नैं फेर मसखरी सूझी।

—कांई रे पटेल था वाळी जोड़ी तो ताकड़ी धणी गिणी जती ही। आज यूं कीकर व्हियौ? ए रिय दिया तो तीन कोस ई कोनी आया के वार

पेट री दाझ

यूं तो गांम राम है। मंदिर है तो उखरड़ा पण है। कई भली-भूंडी बातां होवती रेवै। पण धानपुर गाम थप्यां लग होयनै आज दिन तांई इसी अजोगी बात कदैई सुणण में कोनी आई इसो नांजोगो काम कदैई कोनी व्हियो। दिन उगतांई [गाम में हाको सो फूटग्यो। जणीका-जणीका री जबांन माथै एक इज बात। ग्वाड़िया, गळियां, खेतां अर खळां मे ठौड़-ठौड़ एक इज चरचा। जगै-जगै मिनखां रा टोळा रा टोळा ऊभा। सगळां रा मूंडा याप खायोड़ा। आंख्यां में एक अणआप्यो भौ भरयोड़ो। सगळां रै मन में एक इज बात, सगळा रै मन में एक इज सवाल के गांम मे इसौ कुण चंडाल दुस्टी जनम्यो के जिणै इसौ अक्रम कर नाख्यौ। मिनख व्हैतांई इसौ रागसी काम कियो के जिनवरा ने ई लारै छोड दिया। खाणका सूं खाणको कुत्तो अर जहरी सूं जहरी नाग पण नैन्या टाबर रो तौ नाम नी लें, पण इण पापी तो तीन बरस रो भोळा टाबरिया नै लोभ रै खातर टूपौ देयनै मार नाख्यौ।

—रांम, रांम, रांम, सिवहरै, सिवहरै, घोर कळजुग आयग्यौ। इण गांम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी। अबै तो इण गांम माथै जरूर कोई आफत आवैला—पणघट पर तांबा री कळसी मांजतां पुजारी बोल्या अर पछै चसमा रै ऊपर होय नै खनै पांणी भरतो लुगायां कांनी खरी मोट सूं झाकण लाग्या। पुजारी री बात सुणनै काछड़ा मारियां गोडां-गोडां लग पाणी में अध ओगड़ी ऊभी लुगायां घाघरा थौड़ा नीचा कर लिया। मरियोड़ा टाबर

री [illegible] करनै कडैया री [illegible] सावण री पाणी आगमी, त
कडैया री [illegible] आगमी सू मारै हांनळां में
पाणी आगमी।

— जिनड़ै-जिनड़ै, [illegible] उण दरोगी री, कोड उबड़
नै [illegible] कोरा पड़ैला उण दुरती रै, जिनड़ै-जिनड़ै पीर गळजुग
आगमी।

पण सबळी लुगायी री रह सुननै री एक आधरा लुगायां एक दूजी रै सांम्ही देखनै हसण लागी। मा सू लुगायां री चरित्तर ई छांनौ कोनीं हो।

दूणी देस नै मारियो जिको टाबर लाभूजी सुनार रो हो। लाभूजी बापड़ो असराफ आदमी, अल्ला री गाय, नीं कोई री लेणी में अर नीं कोई री भरी में। सीधै रास्तै चालणियो। कदेई चालती कीड़ी नै ई कोनीं दुभाई के कोई रै आंख में घालियो ई कोनीं गार गारियो। यूं सुनार रीं जात छाकटी गिणीजै। वांरै धंधा में वे सगी मा री ई लिहाज कोनीं राखै। पण लाभू बापड़ो इसो नीं हो। वो मजूरी पूरी लेवतो अर काम पण सातरी बंद करनै देवतो। दूजोड़ा सुनारां रै ज्यूं खोट भेळ नै गैणो घड़णो उणरै वास्तै हरांम बरोबर हो। इण वास्तै पूरा चोताळा में ई उणरी पैंठ जम्योड़ी ही। पण इसा भला आदमी रै ई भगवांन लारै उतरियोड़ो हो। घर में आठ टाबर जनम्या अर आठूं ई पेट बाळणी करनै चालता रह्या। ओ नवमो कोड़ी-लियो तीन बरसां पे'ली भगवांन दियो हो, जिण सूं धणी लुगाई रो जीव ठंडो हो। इण टाबर माथै इज वांरो ऊगतो आथमतो। इणरी मूंडो देख-देख नैं इज वे दिन तोड़ता। टाबर पण टाबरां जोग हो। गोरी निछोर, दोवड़ै हाड़, प्याला जिसी मोटी-मोटी आंख्यां अर गोळ गट्ट चेहरो अर भूरी-भूरी लटुरियां। राजा री कुंवर ई उणरै आगै पाणी भरै।

इण वास्तै मा टाबर नैं हथाळी रा छाळा रे ज्यूं राखती। हरदम उणरी आइज मंसा रैवती के वो कठै चालै अर कठै हाथ राखूं। उण मौकै दीवाळी रौ तिंवार होवण सूं मा उणनैं घणा कोड सूं नवा-नवा कपड़ा पेहराया। कानां में नगदार लूंग, हाथां मैं सोना री माठियां अर पगां में झांझरिया घालिया। रांमा-सांमा रै दिन वाल ओस, काजळ घाल, अर लिलाड़ माथै निजर री काळौ टीकौ लगायनै उणनैं वास ग्वाड़ में तुळसीम करण वास्तै भेजियौ। थोड़ी ताळ में इज टाबर मे'ल माळियां सूं कुड़ता री फड़क भरनैं पाछौ आयौ अर ऊभौ-ऊभौ इज वांनैं आंगणा रे सैं

बीच मांगनै रमण नैं बारैं नाटग्यो। कोई ओण री बात इसी वणी के मा बाप तो बापड़ा आवना टावर री पूठ इज देखी। बो तो गयो सो गयो इज गयो। पाछो आयो इज नीं। रोटी वेळा ताई तो उणरी मा इण भरोसैं वैठी रही के वो बारे रमतो व्हेला अर अवार आय जावैला। पण रोटी वेळा री तो दोपार व्हैगी अर दोपार बीरया सांझ पड़गी पण टावर रो तो कठैई पतौ इज नीं। मां बाप बापड़ा फिर-फिर नैं हैरान व्हैग्या। घर, गळिया, खेत, तळा आवरिया, तळाव, कुआ-बावड़ी समळाई देस-देस नैं तळा री माटी कर नाखी, पण टावर तो जाणैं हार मोर इज व्हैग्यो, जाणैं मोर ऊंबी गिटली के जाणैं जीवता नैं धरती इकारगी।

साभू रै घर मे कूका-रोळो माचग्यो। सुनार-सुनारी बापड़ा मूड़ी ढाळै डाडण लाग्या। पूरा गाम में तळ तळो मचग्यो। घरां में हांडिया बाधगी। मिनख लालटेणां लेय-लेय नैं कांनी-कांनी टावर नैं जोवण नैं रवानैं व्हिया। पण कठैई पतौ नीं लागो। पूरी रात गांम मे सोपो कोनी पड़यो। मिनख झीवना रह्या, कुत्ता ऊंचो मूंडो कर कर नैं कूकता रह्या अर धानपूर री कांकड़ में रात भर मामाजी री होड री गळाई झपाझप करती लालटेणां फिरती री।

ज्यूं-त्यूं करतै दिन ऊगो। मिनख दिसा-फरागती जावण लाग्या तो मसाणां कानी गिरजड़ता भमता निगै आया। देखण वाळां नैं वहम व्हियो। जायनै देखै तो बाटका रै ओळैं साभू रै छोकरा री लास पड़ी। पांट की मासोड़ी, आंख्यां फाटोड़ी अर जीभ बारैं निकळयोड़ी। फूल जिसो कवळी टावर जिको काले दोटा देवतो फिरतो हो आज मसाणां री धरती माथै उगराणै पड्यो हो। चिलम भरै जितरी जेज मे मसाणा में ठमठोर गाम भेळो व्हैग्यो। सुनार-सुनारी नैं छावणा मुसकल व्हैग्यो। सुनारी तो गाय डाडै ज्यू इज डाडण लागी। लुगायां उणनै मीठ पकड़'र पाछी घरां लेयगी। लास रै खनै ऊभैं पुजारी लेबो होठ कियां जरदा री पिचकारी छोड़ता कह्यो—सिवहरे, सिवहरे, घोर कळजुग आयग्यो। इण गाम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी?

मारण वाळैं दुस्टी टावर रैं सरीर माथै सूं सोवरी तोब उतार लीवी ही। कायदे सर पुलिस नैं इतला देवणी पड़ी। लास री पोस्ट मारटम हुयी अर तीजैं दिन जावतां लास नैं दाग पड़यो। साभू रे घर रौ तो दोवो बुझ्यो इज पण गांम माथैं ई जाणैं आफत आयगी। पूरा गांम री गिरै दसा

गोड़ी भागगी। पुलिस गांव मायनै रा पनरै आदमियां नै पकड़'र लेगी अर नै जागनै हरामण सम किया नीं पछै भतनो रै भीड़ गांव नै। मार-मार नै सगळा रा ई हाड ओअग कर नांख्या। भाभू रा पड़ोसी कांनिया नाई नै मांनी मार नै मनमानणी सम कियो नीं नाईड़ो कूकियो -- थांरी मिन्नी मांग हूं रे थांणादारां, म्हनै छोड़ दो, म्हूं थांनै सगळी बात बताय दूंला। पण मांना रा नीनो उतारियो तो सफा नटग्यो -- के म्हनै की ठा व्है तो रैन भगत री सोगन, म्हूं तो मार रा भो सूं यूं ई कैवतो हो। थांणादार म्हीम वगत नै छाळ कूटी, वां दो तीन कीमती गाळा कर काय नै लै डंडो नै टिकियो सो मार-मार नै बापड़ा नाईड़ा रो पोंगाळो कर दियो, फूस काढ नांख्यो। नाई अचेत व्हैग्यो अर इण भांत रात भर थांणो नरक बण्योड़ो रह्यो।

दिनूंगै थांणादार कोटर में गयो तो ग्यारै टाबरां री मा (बार मो टाबर पेट में हो) बीबी जुबैदा आंख्यां में खुमार लियां बोली--या खुदा, परवरदिगार पुलिस री नौकरी ई कोई नोकरी है ? रात-दिन मिनखां नैं मारणा'र कूटणा। चोबीसां घंटा हाय-तोबा ! बाल बच्चांदार आदमी हो थोड़ी घणी तो दया-मया राख्या करो। कठैई कोई गरीब री बददुआ नीं लाग जावै।

इतरी कैयनै वा पोतारा रिडक-भिडक कांनीं देखण लागी, जो पूरा आंगणा में मतीरां री गळाई गुड़्या पड़्या हा।

खां सा'ब बड़ो रसियौ आदमी हो। वो बीबी री काजळ विखारी अर खुमार भरी आंख्यां में झांक नैं उणरी हिचकी पकड़तां बोल्यौ—जानेमन थूं लुगाई री जात है, थारो मन घणो कोमळ है। थूं इण दुनियादारी री बातां नैं नीं समझ सकै। बिना मारियां कूटियां कोई ओ कैय सकै के म्हैं चोरी कीवी है, के म्हैं खून कियौ है। संसार बदमासां अर गुंडां सूं भरियौ पड़्यौ है। जिण भांत जहर सूं जहर दबै उणीज भांत ए चोर-गुंडा। पुलिस सूं दबै। पुलिस जे मार कूट नीं करै तो ए लुच्चा लफंगा आभै रे फांडौ कर नांखै। भला मिनखां री संसार में जीवणौ मुसकल कर दे।

बीबी नैं खांमद री बात रो कोई ठीक पडुत्तर नीं सूझ्यौ तो वा बोली—पण कम सूं कम मूंडा में सूं फाटौ तो नीं बोलणौ चाहिजै। थे रात दिन थांणा में ममौ-चचौ बोलता रैवौ अर थांरा ए मोटा-मोटा छोरा-छोरी सुणता रैवै। बोलौ इणां पर कांई असर पड़ै ? अर संसार में 'मा' सबद

कांई इतरौ हल्कौ व्हैग्यौ है के उणरौ यूं अपमांन कियौ जावै। मा जनम री देणार व्है। था सगळा रै ई बराबर व्है, उण सगती रौ यूं अपमांन करतां थारी जीभ कट जावणी चाहिजै।

अबकै खां सा'ब सचकांणा पड़ग्या। बोल्या—ठीक है, ठीक है, अबै ध्यान राखूंला। थू चाय झट बणाय दे।

धांनपुरा में ई रात भर पंचायती चालती री। गांम रा पनरै आदमी थांणा में बंद होवण सूं घर-घर कळकळौ मच्योड़ौ हो। गाम में दो आदमी पुलिस रा खास मांनीता हा—पुजारी परमानंद अर चौवटियौ फौजराज। थांणा में नवौ थांणादार आवतौ जरै करैई एक रौ पलड़ौ भारी रैवतौ तो करैई दूजा रौ। अबार फौजा रौ सितारौ तेज हो। वो थांणादार री मूछ रौ बाल बण्यौड़ौ हो। लटरा कद रौ फौजो चौवटियौ घर में एकल बादर हज हो। नीं रांड रोवण नैं ही, नीं भैंस दोवणनैं अरनी सूपड़ौ सोवण नैं। आगै ई हाथ अर लारै ई हाथ, रक्षा करै गुरु गोरखनाथ। चूंधी सीक आंख्यां, भारत रौ नकसौ व्है जिसौ चे'रौ, जावड़ा दोनूं कांनी बैठोड़ा, आगै एक कांनी हिंद महासागर अर दूजै कांनी, बंगाल री खाड़ी। हाथां-पगांरी नाड़ा निकळयोड़ी पण जबांन ठाला मूला री डोढ हाथ लांबी। असली कबड़ियौ—खापरियौ कैवणो चाहिजै थाइज मूरत। कोई भूठौ मुकदमौ करणो व्है, कोई खोटा खत में साख घालणी व्है, कोई कूड़ी गवाही देवणी व्है तो ए काम फौजा रा। पुलिस रै वास्तै वो घणौ काम रौ आदमी हो। भठी उठी री खबरा लावणी, थांणादारां री गाय वास्तै फळगटी अर मुंसीजी री बकरिया वास्तै पाला रौ इंतजाम करणौ ए सगळाई काम फौजा रै जिम्मै हा। इण वास्तै पुलिस जठै चूरमा करती ऐठी-भूठी इणनैं ई मिळ जावती।

दिनूगै गाम वाळा भेळा होय नै फौजराज खनै पूगा अर कैवण लाग्या—चौवटियाजी, अबै गामरी इज्जत आपरै हाथ है। कियांई करनै आप थांणादार नै मनावौ अर आंपण आदमियां नैं छुड़ाय नैं लावौ।

फौजो आंख्यां मिचमिचाय नैं खंखारो करतो बोल्यो—म्हूं थांनै कैवूं देखौ भई, थाणादार म्हारै काका रौ बेटौ तो लागै कोनीं, कांमौ हरांमी है अर पेट सबरा पोला है। म्हूं थांनैं कैवूं कतल रौ केस ठैरियो सो कोरे मांगै सो आरती व्हैनी अर थोड़ा घास सूं दोस्ती रासै तो खावै किणनै? इण वास्तै जे फी आदमी एक सौ रुपिया रौ इंतजाम बैठतौ व्है तो म्हू

[illegible] । [illegible] अर [illegible] लियो।
आगै ज्यूं ओम है ज्यूं [illegible] । पछै [illegible] दोस मत दीजो।

[illegible] काई बात के [illegible] । [illegible] भविस्य में [illegible] पनरै सौ [illegible] फौजा रै [illegible] में [illegible] अर दिन आथमिया पैली पनरैई आदमी [illegible] पाछा [illegible] । नांणी कांई नीं करै। [illegible] करै। पण मार ताय-ताव मैं [illegible] मन में तो ओ [illegible] री गळाई सालतो हो के जे गुणी री पतो नीं लाग्यो तो सगळां नैई पाछो भांणै जावणो पड़ैला। अर भांणै पाछो आवण रो मतळब हो के मौत रा मूंडा में जावणो। सो पूरा ई गांम इण कोसिस में लागग्यो के किणांई करनै असली गुणी री पतो लाग जावै तो कसूरवार नैं डंड मिळै अर दूजां री गाळी निकळै।

गांम रांम है, लारै पड़ जावै तो पतो कांई नीं लागै कोसिस करण सूं ठा पड़ी के जिण दिन टावर री गुन हुयो, उण दिन गांम रै गोर में नटियां रा डेरा पड़्या हा, जिको दूजै दिन इज आगै चालता वण्या। नटिया ई चोर नटिया हा, राज नट नीं हा। दूजी बात, उण दिन गांम रै खरनै होय नैं वाळद निकळी ही। अर तीजी खबर आ मिळी के कांन जी रा बेटा बळदेव नैं, जो कॉलिज री छुट्टियां में घरै आयोड़ो हो, उणीज दिन उण सुनार रा बेटा रे सागै टावरां देख्यो हो।

कांनजी रे सागै फौजराज चौवटिया अर परमानंद पुजारी री जूंनी अदावदी चालती ही। कारण के चौवटियो तो दो-तीन वार गांम में वाड़ कूदतौ पकड़ी ज्यो जद कांन जी इणनैं क्षाल नैं सागैड़ो वजायौ हो अर पुजारी महाराज ई कई वार लपेटा में आया हा अर दांतां तिरणा लेय नैं छूटा हा। कांन जी घर में खावतौ-पीवतौ होवण सूं नांम में कईयां रे आंखै चढ़ौड़ो हो। पण रास्तै चालणियो होवण सूं उणनैं दवावण री कोई नैं कदै ई मौको इज नीं मिळ्यो। कांनजी मिलट्री रौ रिटायर हेंड एक साधारण घर धणी आदमी हो। घर में सुलक्खणी रजपूतांणी, मोट्यार वेटौ, वडेरां रे हाथ री काजू जमीन अर पेंसन री रकम सूं वांरौ गाडौ मजा सूं गुड़कतौ हो। गांम में उणांरौ ओ ढंग हो के नीं किणी सूं दोस्ती अर नीं किणी सूं वैर। मारग आवणो अर मारग जावणो। खड़ी खाणी न कोई पड़ी उठावणी। पोतारी मौज में मस्त रैवणौ। पण एक

बात कानजी में बड़ी जोर की ही, वा आ के बानैं लुच्चाई-लफंगाई अर चोरी-जारी सूं बड़ी चिड़ ही। गांम में जद कदै ई इसी बात सुणणमें आवती उणरी लोही ऊकळण लाग जावतो। उणरी बस चालती तो वो कवढिया लापरिया री घांटकी मुरड़'र नांख देवती।

कानजी री लुगाई इण मामला में उण सूं ई दो पांवडा आगै ही। पूरी मरदानी ओरत ही। वा कह्या करती के साफी बांधै जितरा सगळाई आदमी नीं व्है अर ओरणी ओढ़ै जितरी सगळी ई लुगायां नीं व्है। धान-पुर गांम लूटांणी जद कानजी तो घरै नीं हो पण आ डाकण बंदूक झाल'र फळसा माथै ऊभी व्हेगी ही। घणी दोरी लोगां उणनै पकड़'र घर में बिठाई ही।

कानजी रै बेटा री नाम इण कतल रा मामला में आवण सूं पुजारी परमानंद जोर-जोर सूं बोलण लाग्यौ—सिवहरै, सिवहरै, घोर कळजुग आयग्यो। इण गांम री पुन्याई अबै खतम व्हेगी। फौजो चौवटियौ बोल्यौ —म्हूं थानैं कैवूं, समझ्या के नी, म्हनैं तो आ पैंलीज ठा ही के इण कतल रा मामला में कोई मोटी मुरगी री हाथ व्हैणौ चाहिजै। हरांम खोर बगला भगत बण्या फिरै—म्हूं थानैं कैवूं अर इसा नीच काम करै —चोरां रा सिरिपूज। अर इसा नीच काम करै—चोरां रा सिरिपूज। इसा नालायकां री मूडौ देख्यां ई पाप लागै। घणा दिन व्हिया है कानजी ठाकरां नैं डोढ़ा-डोढ़ा चालतां नैं, अबके रेवड़ी री फेंट में आया है, समझ्या के नीं। जे तीन सौ दो में फसाय नैं सगळी ठेंटाई नीं काढ दूं, म्हूं थानैं कैवूं तो म्हारी नाम फौजो चौवटियौ नी।

* * *

थांणा में नव नटिया अर चार बाळदिया पकड़ीज्या। तीन दिनां तांई अरंद उडता रह्या। बाळदिया कूकता रह्या—

—दादा रै दादा! मत मार रै दादा! कबूतरियां कूकती री—बाप रै बाप! क्यूं मारे रै बाप! अर थांणा रा कोटर में जूबैदा कूकती रीं—खुदा रै खुदा! यूं ही मालिक है रै खुदा!

पण नतीजौ कांई नी निकळ्यौ। चौथै दिन नटिया अर वणजारा तौ पुलिस-देवता नैं नाळेर समेत भोक देय नैं भाग छूटा पण बळदेव वल्द कांनजी री गिरैंदसा वोदी आयगी। उणनैं कांनेब में इज गिरफ्तार कियौ अर रातौ रात लायनैं थांणा में दाखल कर दियौ। उठीनै सूरज ऊगौ

अर अठीनै उणरै भरया उजला गम किया···हे···हे···हे··· है ! साहिब ···साहिब · साहिब ! म्हारा उपर नांगी पण म्हारो भाठो बोलै तो मूंडै बोलै। पुलिस मार-मार नै हैरान करेगी। थांणादार बोल्यो— मून सिपाय नै ऊंधो लटकाय दो सा ळागै।

हुकम री तामील हुई। आधाक घंटा में वो नै भांन व्हेग्यो। वो नेता चूक होय नै कुणियो-कळी छोड़ दी-म्हूं सब बताय दूंला। सिपाहियां नीचो उतार दियो। थांणादार नेड़ै आवतां ई उणरै मुंडा माथै एक ठोकर जमाई, बोल साळा नीं तो फाड़ नै रख नाखूंला। वो डाफा चूक होय नै अटकतो अटकतो बोल्यो—

—छोरा नै म्हे मारियो

किणां मारियो ?

—टूंपो देय नै मारियो।

—क्यूं मारियो रे ?

—म्हूं उणनै मारणो तो नीं चावै हो फगत उणरो गैणो उतार नै लेवणो चावै हो। इण वास्तै म्हूं उणनै पोटाय नै गोदी में ऊंचायां मसांण कांनी लेय नै गयो। उठै गैणो उतारियो तो वो कैवण लाग्यो म्हारै बावै नैं कैय दूंला अर रोवण लागग्यो। म्हैं बदनामी रे डर सूं उणरै टूंपो देय दियो।

—वो सगळो गैणो कठै ?

—आधोक तो वेच दियो अर आधो म्हारी होस्टल रे भींत लारै जमीन में गाड्योड़ो है।

—थें उण पैसां रो कांई कर्‌यो ?

—आधा पैसा तो दारू सिनेमा अर खावण-पीवण में खरच व्हैग्या अर आधा मांगता पेटै दे दिया।

—मर स्साळा हरामी तेरी···थांणादार एक वजनी गाळ ठरकाय दी अर कागदिया पूरा करनैं मुलजिम नैं हवालात में बंद कर दियौ।

चोखी वात फैलतां नैं जेज लागै पण भूंडी वात तो पवन रे वेग उडै। रेडियौ में खबर पूगै ज्यूं आ खबर धानपुर पूगी तो गांम में खळबली माचगी। मिनखां रा अबै मूंडा जितरी ई वातां। कांनजी माथै तो जांणै विजळी पड़गी। पगां हेटै सूं धरती खिसकगी। उणनैं सुपना में ई आ ठा नीं है के उणरी संतान इसी नां जोगी निपजैला। लड़का नै सहर में भेज्यौ

तो इण वास्तै हो के पढ़ लिख'र हुंसियार बणैला अर कुळ रो नाम वधा-वैला। पण इण नालायक तो कुळ नैं डुबोय नांख्यो।

उणनैं मन में आ सोच'र संतोस व्हियो के छोरा नै फांसी जरूर व्है जाएला। पण थोड़ी 'क ताळ में मन जाणै कीकर ई होवण लाग्यो अर आंख्यां सूं काळजो सूटण लाग्यो। बाप रो जीव हो अर एकाएक टाबर। फांसी रो ध्यान आवतां ई माथो भमण लाग्यो। इणरै सागै-सागै कानजी नैं घर ग्वाड़ी री मांन मरजाद रो ख्याल आयो अर याद आयी फौजी चौवटियो नैं परमानन्द पुजारी। उणरो विचार एक दम बदळग्यो। किमाई व्ही,घर, ग्वाड़ी अर बं'रां री इज्जत नैं बचावणो पड़ैला दोखिया अर दुस्मणां नैं तो दबावणा इज पड़ैला।

घर रे मांयनै सूं रोवण री आवाज आई। कानजी घर में गयो। आज उणरी जिंदगी में ओ पे'लो मोको हो के उणै आपरी लुगाई नैं इण भांत रोवता देखी ही। कानजी नैं देखतां ई वा भजन करती बैठी व्हैगी। बाल बिखरयोड़ा अर आंख्यां राती चट्ट-जांणै रोरा धुकै,विकराळ रूप व्हियोड़ी। वा बोली --इण पापी तो म्हारी कूख लजाय नांखी, म्हारा दूध में दाग लगाय दियो। म्हारो फरजंद अर इसो मांजोगो ? उणरै किण बात री कमी ही ? इसो नां जोगी काम क्यूं कियो ? म्हैं उणरै जनमतां पांण टूंपो क्यूं नी दे दियो, म्हूं पापण क्यूं नव महीना इण दुस्टी रो भार ऊंचायां फिरी ! लावो छुरी लावो अर म्हारा इण नकामा पेट नैं काट'र नाख दो, जिणमें ओ पापी नव महीना लोटियो, म्हारै इण जहरी हांचळां रा टूकड़ा-टूकड़ा कर नांखो, जिणां नै चूस'र ओ काळो नाग मोटो व्हियो।

कानजी हाक-बाक व्हैग्यो। वो आपरी लुगाई री रीस नैं आछी तरियां जांणै हो। उणै कह्यो-थोड़ी धीरै बोल भली मिनख, कोई खाड़ कोटी सुणैला, बतख री बाथली है अर हाल मुकदमो ई दरज व्हैणो है।

--म्हूं धीरै बोलूं ? इण दुस्टी रा पाप नै छिपावण नै म्हूं धीरै बोलूं ? साची कैय दूं ओ थारो अंस इज व्हैला है। थे एकर नी चार कैय दो के ओ म्हारो अंस इज नी है। इण मूं म्हारी बदनामी व्हैला पण म्हनै म्हारी बदनामी रो एक रत्ती भर ई भी नी है। म्हारी कूख नैं तो दाग लगा इज गियो, पण कम सूं कम थारो पख तो उजळो रैय जावैला।

कानजी कांनां में आंगळियां घाल दी। उणरो माथो भमण लाग्यो। उणै कह्यो-ओ थारो भरम है के म्हनैं उणनालायक सूं मोह है। म्हारो बस

नाळै नी अबार उणरा टुकड़ा-टुकड़ा कर नांखूं । पण मसाल उण नालायक री नीं है, मसाल भर अर म्हारी री इज्जत री है । समाज बैठ्यां री मान मरजादा री है अर सब सूं बड़ी समाज मांय मांगना उण कमलिया, गाप-रिया अर सोनिया री है । जिकां नै म्हे संग उमर रमागनै राख्या पण आज वे आपा माथै मुसीबत आई देखनै फाटनां कूटै है । सो थांरा मरमट गाळण वास्तै नीं नाचनां भकाई एकर तो म्हनै उण नालायक नै म्हारी बेगी करावणी इज पड़ैला । भलै ई उणरै माथै घर धोगनै धवळो कर देवणो पड़ै । पछै म्हूं उण दुस्टी रो मूंडो ई नीं देखणो चावूं ।

*　　　*　　　*

जिण वगत कानजी थांणा में पूगो उण वगत थांणादार रहीमबगस नमाज पढ़'र कोटर बारै आयो इज हो । वो उणनै देख'र बोल्यो– कहो सिरिमानजी, म्हूं आपरी कांई सेवा कर सकूं ?

कांनजी भागोड़ी बैंचड़ी माथै बैठ'र निसासा नांखतो बोल्यो—हजूर म्हूं उण अभागिया छोरा रो बाप हूं जो कतल रा केस में आपरा थांणा में बंद है ।

—ठीक तो थूं उणरो बाप है । बड़ो खतरनाक छोरो है । उण माथै तीन सौ दो पूरी लागू व्हैग्यी है, बचणो मुसकल है ।

—हजूर आप बड़ा हो, सामरथ हो, इणनैं कियांई बचाय दो, म्हारो एका एक छोरो है । म्हूं आपरी हर तरै सूं सेवा करण नैं तैयार हूं । अबै मरणवाळो तो मरग्यो, वो तो पाछो आवै नीं अर एक हत्या, फेर व्है जाएला । इतरो कैयनैं कांनजी एक हजार रा नोट काढ़ नैं मेज माथै राख दिया । खां सा'ब देल्यो के मुरगी तो माती दीसै । वो बोल्यौ—नीं, नीं, इणरी कोई जरूरत नीं है । ओ कतल रो केस है, कोई हंसी ठट्ठा नीं है ।

कांनजी पांच सौ रा नोट काढ़ नैं और धर दिया अर हाथ जोड़नैं बोल्यो—हजूर गरीब आदमी हूं, थोड़ी दया करो, उमर भर आपरौ एह-सान नीं भूलूं ला ।

—सिरिमानजी ओ तीन सौ दो रौ मामलो है, आपनैं ध्यान व्हैणौ चाहिजै । तीन हजार सूं एक पाई कम नीं चालै ।

सेवट हां-मां करनैं दो हजार में मामलो बैठग्यौ ।

थांणादार कह्यौ—म्हारी तरफ सूं म्हूं अदालत में बेगा सूं बेगौ चालान पेस कर दंला । मौका रौ अर चस्मदीद गवाह म्हूं होवण दूंला

नीं। पण इण पे'ली थांनै पी० आई० सा'ब, सरकल सा'ब अर डी० एस० पी० सा'ब नै मिळणो पड़ैला। कोई ढंग रो वकील ई करणो पड़ैला। इणरै अलावा एस० पी० अर जज माथै कोर्ड ऊपर सूं दवांण नाखण री कोसिस करणो पड़ैला, जद कठैई जायनै मामलो बैठो तो बैठैला। एक बात फेर कैय दूं। इण पैसां रो कठैई जिकर मत कीजो, म्हूं इण मे सूं एक पाई पण कोई नै नीं दूला, सो आ बात पण पे'ली समझ लीजो।

पछै नोट उठायनै कोट री मांयली जेब में हिफाजत सूं घालतो बोल्यो—

दुनिया साळी कैवे के पुलिस बेईमान है, म्हूं पूछू के आज रै जमांना मे कुण बेईमान नी है? ए ब्लेक करणिया बैपारी, ए रिस्वतां ठोकणिया मोटा-मोटा अफसर, ए ठेका परमिट देवणिया नेता, सगळाई तो म्हारा भाई बन्द है। पछै म्हानै इज क्यूं बदनाम किया जावै?

—आपरो फरमावणो वाजव है हजूर, कुए भाग पड़घोड़ी है। कोई नै दोस देवण रो काम कोनी। कानजी खुसामद रे सुर मे बोल्यो अर रामा सांमा करतै थांणा रे बारै निकळग्यो तो जांणै गढ़ जीत लियो।

ऊथळ में माथो दियां पछै घम्मीड़ा सूं काई डरणो सो थाणादार री सलाह माफक कानजी पी० आई०, सरकल अर डी० एस० पी० सगळा नै ई मिळ लियो। पण हाल ताई तो दो देवता अणपूजिया बैठया हा—एस० पी० अर जज। बारै वास्तै ऊपरला दबाण री जरूरत ही। कानजी नै अर्खैराज एम० एल० ए० याद आयो। सात भूडो तो ई जात भाई हो। इण अबखी वेळा मे वो काम नीं आवैला तो कठै मुरगां मे आडो आवैला। वो दूजोड़ै दिन इज एम० एल० ए० सा'ब रे बंगळै आय नै हाजर व्हियो।

माया थारा तीन नाम—फूसी, फरसो, फरसराम। एमनै सा'ब रै जनम रो नाम उखरड़ो होपण ज्यार पैसा कमाया तो ओगाराम व्हैग्यो अर धीरे-धीरे अर्खैराज व्हैग्यो। अर्खैराज रो बाप एक दो भैंस्यां राखतो अर घर-घर फिरनै दूध बेचतो। स्यात् अर्खैराज पण सेंग उमर दूध ईज बेचतो पण करम कोई कुणरा कोननै देख्या है। पांचवी-सातवीं ताईं पढ़ लियो। आवारागरदी मे फिरता-फिरता भासन देवणा सीख लिया अर धीरै-धीरै छोटो-मोटो नेता बणग्यो। बोलणो ढंग सर आवतो कोनी सो जयहिन्द नै जायहिंद कैवतो अर सुराज नै धू राज, तो ई गामड़ा मे तो वो नेता इज गिणीजतो।

आजादी री आंधी आई सो गोरां री ठौड़ काळा पड़ग्या अर काळां री ठौड़ गोरा बणग्या। मुलक रो मोको आयां री गाड़ी फिरगी अर न्यात-गंगा री किरपा सूं जीत नै विधानसभा में पूगग्यो। अबै क्यूं पूछो अणीगाजणी सारी बातां। तीन-च्यार बरसां में तो गांम में पक्को बंगळो बणग्यो अर भैंस्यां बाखळी उण ठौड़ जीप ऊभी रैवण लागी। मोटोड़ो बेटो मिडल फेल हो, सो जिला में एक सेठ री हिस्सादारी में सिमंट री होल सेल डीलर बणग्यो अर छोटोड़ो इंजिनियरिंग कालेज जोधपुर में पढ़ण लाग्यो।

कानजी जाय'र एमलै सा'ब नै रांमा सांमा किया तो आप बोला---जायहिंद ! आवो कानजी, आज तो मारग भूलग्या कांई ?

कानजी आपरी पूरी रामायण सुणाय दी। पूरी बात सुण'र एमलै सा'ब थोड़ी जेज तो चुप रैयग्या, पछै धीरे सीक बोल्या—

हूंऽऽऽऽऽऽ तो आ बात है। पण कोई बात नीं। थे कोई चिंता मत करो। अठै तो कांई पण ठेट दिल्ली तांई आंपणी पूछ है, पछै बापड़ी एस० पी० अर जज किण बाग री मूळी है। म्हनैं कमसल बैंक अर डफलफमेंट डिपाट-मेंट में काम सूं जावणो है, उण मोकै इण सरकारी मुलाजिमां नैं ई मिळतो आवूंला। (एमलै सा'ब कॉमरसियल बैंक नैं कमसल बैंक, डेवलपमेंट डिपार्टमेंट नैं डफलफमेंट डिपाटमेंट अर सरकारी मुलिजमान नै सरकारी मुलजिम इज कैवता) सो इण केस री तो आप फिकर इज छोड़ दो। आगलो चुणाव नजदीक आय रह्यो है उणरी चिंता राखो। पे'ली ज्यूं आंपणी न्यात री पक्की संगठन रैवणो चाहिजे।

थोड़ी जेज ठैरनैं एमलै सा'व आगै बोल्या—सरकारी मुलजिम ई आजकल बड़ा हरांमी व्हैग्या है। बिना मतळब तो माटा बात ई नीं करै। फेर ओ कतळ री केस ठैरयो। आप जांणो के गरज पड़ै जद गधा नैं ई बाप बणावणो पड़ै।

कानजी एमलै सा'व रौ इसारी समझग्यौ। लारला दिनां में उणनैं खासौ अनुभव व्हैग्यौ हो। उणैं झट च्यार हजार रा नोट काढ़ नैं एमलै सा'व से आगै धर दिया। एमलै सा'व बोल्या—ना, ना, म्हनैं इणारी जरूरत नीं है। थे थारै हाथ सूं इज दे दीजौ। म्हारौ काम तो फगत जनता री सेवा करणौ है। म्हूं गरीबां रौ दुख नीं देख सक्यौ इण वास्तै इज तो म्हनैं चुनाव में खड़ौ होवणौ पड़्यौ। बोलौ, आज म्हूं नीं व्हैतौ तो थां

जिता परघणी आदमी री कुण मदद करतो ?

कानजी हाथ जोड़ दिया।

—आपरो आसरो है, इण वास्तै इज तो आपरै चरणां में आयो हूं। मोटा अफसरां नै तो पैसा आपरै हाथ सूं देवणा इज ठीक रैवैला, सो किरपा करनै पैसा तो आपरै खनै इज रगावो।

एमसे सा'ब बेपरवाही सू एहसान जतावतां नोट ले'र धोळा री जेब में घाल दिया। इणरै पछै कितरा नोट तो ठिकाणै सर पूगा, अर कितरा उण जेब में इज रह्या इणरो हिसाब तो सावरियो जाणै, पण अदालत में न्याव रो एक नाटक जरूर हुयौ—पी० आई० कितणियां री मळाई पग पटकतो रह्यो, वकील थूक उछाळतो रह्यो अर जज कदैई चस्मा रे ऊपर सूं अर कदैई नीचै सूं उण दोन्यूं नै देखतो रह्यौ। दो-तीन पेसियां पछै मुकद्‌मो खारज व्हैग्यो अर बळदेव बरी व्हैग्यौ।

फैसला री वखत कानजी, फौजी चौवटियो, परमानन्द पुजारी, काळू सिंह सरपंच, गणपत पटवारी अर धानपुर रा बीसूं आदमी अदालत में मौजूद हा। मुकद्‌मा रै दरम्यांन कानजी आपरै बेटा कांनी आख उठाय नै देख्यौ तकात नीं। फैसलो होवता ई कानजी चुपचाप अदालत सूं रवानै व्हैग्यौ। जिण-दिन सूं पुलिस अर कानजी री सांठ-गांठ हुई ही, उण दिन सूं फौजी चौवटियो मोळो पड़ग्यो हो। फैसला री वखत तो पायौइज पलटग्यो। उणै देख्यो के अबै कानजी सूं अदावदी राखणी, उल्टी आंपां नै नुकसाण पुगावैला। पण हालताई उणनै कोई इसो मौको नीं मिळ्यो हो के वो कानजी सूं राजीपो करतो। अदालत मे उणै देख्यो के बेटो बरी व्हियां ई बाप नै कोई खुसी नी व्ही। स्यात् कानजी नै रीस आयोड़ी व्हैला। अर छोरौ सरमां मरतो बोल्यो नी व्हैला। आंपां नै बाप-बेटा नै मिळावण रौ काम करणौ चाहिजै। वो बळदेव रे लारै लारै उणरै होस्टल तांई गयौ अर पोटाय-पुटाय नै उणनै घरै चालण नै राजी कर लियौ।

★ ★ ★

पूनम री घट्ट चांदणी रात। वे दोनूं जणा धानपुर पूगा जितरै ब्याळू वेळा व्हैगी। गांम रा गोर मे छोरा कब्बडी रमता हा अर चांवटै बैठ्या लोग-बाग बाता करता हा। बळदेव नै फौजा रे सागै आवतो देख नै छोरा कानजी रे घरां समाचार देवण नै दौड़िया। कानजी घर रे सांम्ही माथा मार्यां बैठ्यौ हो, समाचार सुण'र हाक बाक व्हैग्यौ। उणनै ध्यांन इज नी

पेट री दाझ

लाग्यो कै अबै काईं करणो चाहिजै । बो मामला में पड़णो कै उणनैं टाळ देणो चाहिजै कै गांव । उणनैं आ सुपना में ई उम्मीद नीं ही कै वो निगरमो रा घरै आग जावैला अर यां ई फौजिया रै मारै । उणरै गळा में एक अटकग्यो अर कांटा री ज्यूं चुभण लाग्यो— नीं गुटीजनै हो अर नीं गिटीजतो ।

माथा पर आयोड़ा पसेवा नैं अंगोछा सूं पूंछ'र कानजी मांचा माथै सूं ऊभो होग्यो । पण अबै आगै काईं करणो, आ उणनैं दिस नीं लाधी । उणनैं आपरी लुगाई रो ध्यान आयो अर उणरा रूंगटा ऊभा व्हैग्या । उण नालायक नै देख'र वा कठैई येरो-चावड़ी नी करलै । उण पग में एक पगरखी घाली अर दूजी पेरिया बिना इज पाछो बिचार में पड़ग्यो ।

जितरै तो उणनैं चावटा कांनी सूं बळदेव, फौजो चोवटियो अर लारै निरी ई भीड़ आवती निगै आई । उणनैं भमळ आयगी, वो माथो पकड'र पाछो मांचा माथै बैठग्यो भीड़ थोड़ी फेर नेड़ी आयगी । इतरै तो बिजळी रै पळाका रै ज्यू कांनजी रै ओळ री मेड़ी सूं बंदूक रा तीन फायर हुया-धड़ाम ! …धड़ाम ! …धड़ाम ! बळदेव रै गोळी छाती में लागी ही अर फौजा चोवटिया रै माथा में । भीड़ तो इसी नाठी जांणै चिड़ियां में दळ पड़ियो । कानजी मेड़ी माथै जायनै देख्यो तो मारण वाळो पण मरगो ही अर बंदूक खनैं इज पड़ी ही । कांन जी माथो फोड़ लियो ।

लक्की स्टोन

संध्या री वेळा बंबई री झवेरी बजार इंदरापुरी बण जावै। जठीनै देखो उठीनै ई च्यानणो पळका-पळक करै। नजर ई नीं थमै। रात अठै दिन पात ई सुहांमणी लागै। कीमती काचरी अलमारियां में जगमग करता हीरा मोती अर नरम-नरम गादियां माथै पसरयोड़ा मोटी तूद अर गंजी खोपड़ियां वाळा सेठ लोग मरकरी चादणा में सगळाई चमाचम करै। कोई गुजराती, कोई पंजाबी अर कोई सिंधी। पण सगळाई एक इज माळा रा मणिया, एक इज सांचा में ढळियोड़ा। चीकणा चेहरा अर बगला री पांख ज्यूं जिसा सफेद झबक कपड़ा, जांणै अलकापुरी रा भाड बैठ्या।

सड़क पर भीड़ री ठेलमठेल माच री। खांधा सूं खांधो रगड़ीजै। पण घण खरा लोग इसा के जिणा नै इण हीरा मोतियां सूं कोई मतलब नीं। वे सगळाई पोत पोतारा ध्यान में नीचा माथा कियोड़ा खाता-खाता चाल रह्या। बारै एक कांनी मोटरां री लैण चाल री-धीरै-धीरै। इसो लागै जाणै कीड़ी नगरी जागगी। भांत-भांत री कोड़ियां-नीली, पीळी, धवळी, काळी, सिंदूरी, ऊमणी, पांखाळी अर रूंआळी सगळाई नमूना तैयार। देखण वाळो भलाई थाकी पण ओ रैलो नी टूटै।

इणीज कतार में सू चमाचम करतोड़ी एक नवी केडलोक टळी अर सेठ नगीनदास सामळदास रे आगै आय नै ठैरी। सेठ नगीनदास बम्बई रा सयसूं मोटा झवेरी गिणीजै। इसा वैपारी री दुकान रे ठाट री पछै पूछणी

इज कांई ? गाडी देखो नी आंख्यां चूंधीज जावै। पेढी चढ़णो नीं घणी मोटी बात है पण थोरो फालो तो उठीनै मूंडो ई नीं कर सकै। सेठ नगीन-दास पोतै गाडी सामै बैठा इज हा के मोटर में सूं एक परदेसी जोड़ी उतरियो। मिस्टर कपलिंग अर उणरी मेमड़ी। सेठ हीरा-मोती वेचतां-वेचतां धवळा जिया हा, इण गाडी हीरां रै सागै-सागै वां मिनखां री पण पक्को पारखी व्हैग्यो हो।

वो पेढी चढ़ता गिराक नै एक मिनट में इज तोल लेवतो। देखतां पांण पत्तो लेवतो के इण मिनखां में कितरोक तेल है। किसा गिराक सूं किसो मोल-तोल करणो वो उणियारो देख नै इज तय कर लेवतो। बंबई रा झवेरी बजार में सेंग तरै रा गिराक आवै। हुंसियार सूं हुंसियार जिको झवेरियां नै ई कांन पकड़ाय दे अर डफोळ सूं डफोळ जिको एक हजार री हीरो पांच हजार में लेयनै जावै अर फेरूं पाछो हंसता हंसता आवै। गिराक नैं पटावण में पण दुकान रा सेल्समेन पण एक-एक सूं आगळा। मजाल है पेढी चढ़यो कोई गिराक जेब हल्की कियां बिना नीचो उतर जावै। मोटर में बैठयां पछै घणी ताळ ग्याज नीं रिर्ण जरै सेठ नगीनदास री पेढी चढ़यो ई कांई।

दुकान कांनी आवतोड़ा सा'ब अर मेमड़ी माथै सेठ री निजर पड़ी। आंख रूपी ताकड़ी आपरो कांम करण लागी। नवी चमाचम करतोड़ी साठ हजार री कीमती केडलॉक, जवान परदेसी जोड़ी, फर अर गेवरडीन री कीमती पोसाकां, गळा में गूंधा मोतियां रा हार अर अंगूठियां में जगमग-जगमग करतोड़ा कीमती हीरा। गिराक तो कोई ताजो जच्यो। सेठ अर सेल्समेन सगळाई सावचेत व्हैग्या। नेड़ा आयां उणियारो देखण सूं आई जांण पड़ी के सा'व बम्बई रो कायम रैवासी कोनीं। कोई ऊंचै घराणा रो आदमी हिन्दुस्तान देखण नैं आयो दीसै। सेठ रो अंदाज सोळूं आना सही निकळयो।

मिस्टर कपलिंग इंग्लैंड रै लार्ड घराणा रो जवांन अदन में कोई ऊंचा ओहदा माथै कांम करै। उणरो व्याव अवार इज हुयो हो सो हनीमून मनावण नैं संसार री जात्रा माथै निकळयो हो।

सा'व नैं सो रूम में वैठाय नैं सेठ एक सेलसमेन नैं कह्यौ–एल्या, एक सौ त्रण ! एक सौ त्रण सेठ रौ कोडवर्ड हो। गिराक जिण ढंग रौ व्है तौ, सेठ उण हिसाव सूं इज आंक बोलतौ। उण हिसाव सूं इज उणरी खातरी

हीरो अर उण देस री ढब उणनै माल बणायो जावतो । सो मूं ऊपर आक उणरै भाव ई बोलीजतो जिसो गिराक एकस्सा ओळियरो जचतो । सो मिस्टर कर्पालिया अर उणरी मेमरी रै वास्तै आक ई हुया एक सौ पण ।

सेठ रो हुकम सामलो पाण बागी मूंघी सूं मूंघो सामानरी होवण लागी । मेमरी दफ्तर में बैठगी अर सा'ब री बळी-बळी गिलगी । इणरै पछै सा'ब एक चोखा कीमती हीरारी मांग कीवी । सेठ बाळै चोखा सूं चोखा पनरै बीस हीरा बताया । एक-एक सूं इदका अर एक-एक सूं आपळा । कीमत पांच हजार सूं लगाय नै पचास हजार तांई । हरेक बार नवो हीरो देखता टज एक बार तो मेमरी री आंख्यां चमकण लागती पण थोड़ीक जेज में पाछी मगगी पड़ जावती । वा हीरो देखनै पाछो सोंपता सेठ में समाय जावती जाणै राखा में चूकरियो चूल्यो । सा'ब उणरै कानी देखनै पाछो सेठ कानी देखतो पण हरेक बार मैणत फोगट जावती । सेवट सेठ पोतै उठ्यो अर सेफ में सूं एक अमोली चीज उठायनै लायो । एक जगमग करतोड़ो हीरो, भरपूर पाणी वाळो, मावै निजर ई नीं ठैरै ।

सेठ बोल्यो — ओ हीरो म्हैं अमुक रियासत रा महाराजा खना सूं दस दिनां पे'लीज साठ हजार में लियो हो । काले इज एक गिराक इणनै स्वीटजरलैंड जावता वगत पसंद करनै गयो है । पण आपनै जे ओइज दाय आय जावै तो उण गिराक वास्तै कोई दूजो प्रबंध कर दियो जासी । बंबई रा बजार में आपनै आज री तारीख में इण सूं बढ़िया हीरो नीं मिळ सकै । भलाई आप फिरनै तपास कर लिरावो । दूजो म्हारो ख्याल है मेम सा'ब नै पण ओ हीरो जरूर दाय आयो व्हैला । कारण के आ चीज आपरै लायक है । अर अब की बार मिसेज कर्पालिया नै हीरो साचाणी दाय आयग्यो । सा सा'ब कानी देख'र थोड़ी मुळकी अर सा'ब हीरो मोल ले लियो ।

गिराक पेढी नीचा उतरता ई सेठ नगीनदास सेल्समेन देसाई कानी देख'र थोड़ा मुळक्या । देसाई ही···ही··· करतो पाळियोड़ा कुत्ता री गळाई पूंछ हिलावण लाग्यो । सेठ याद करण लाग्यो आज दिनूंगै किणरो मूंडो देख्यो हो ? सेठाणी रो के बेटा रो ? पे'ली चोट में इज पौबारै पच्चीस । एक चोट ई पूरा बीस हजार री । दो दिनां पे'ली ओ इज हीरो एक गिराक नै चाळीस हजार में दे'वण नै सेठ घणा थोथा किया हा पण चीकू गिराक मानियो कोनीं ।

झवेरी बजार री भीड़ लिछमी री रेळ-पेळ में आपरी सुभाविक गति

सूं वातचीत री अर मिस्टर कर्पलिंग री हिदायतां रा माथै रा मामदंर में एक मिलती म्हार री सफाई समझाणी ।

रुत आई अर रुत गई । इण बात नै छः महीना बीतग्या । सेठ नगीन-दास री तालकी रखी निजर मिलापां में नौकरी री पण इसो तागो मिलाप फेरूं नीं आयो । छः महीनां रो अरसो वातचीत नीं रो । सेठ तो मिस्टर कर्प-लिंग नै भूल-भुलायग्या हा के एक दिन अदन सूं सेठ रै नांव एक कागद आयो । लिख्यो हो -- आपरै अठा सूं मोल लियोड़ै हीरै म्हांरा तो भाग खोल दिया । हीरो म्हारै वास्तै वडो भागशाळी निवड़ियो । उणरै घर में आयां पछै म्हनै फायदो इज फायदो हुयो । म्हारै ओहदा री तरक्की हुई, मेम सा'व नै वांरै बाप रो अथाग धन मिळ्यो अर सब सूं मोटी बात आ के पूरा पैंतीस बरसां पछै म्हारै कडूंबा में टाबर घरै आयो । हीरो वडो सुलखणो निवड़ियो अबै एक तकलीफ आपनै फेरूं देवणी चावूं । म्हनै इणरै जोड़ी रा एक इसा रा इसा हीरा री जोजवांण है । इण वास्तै मेम-सा'व म्हारा नित रोज कांन खावै सो आप किरपा करनै भारत में सूं जठै होवै उठा सूं ई तपास करनै इसो रो इसो हीरो म्हनै इंश्योर्ड व्ही० पी० पी० सूं अठै वेगो भेज दिराईजो । कीमत री आप कोई चिंता मत करा-ईजो । एक लाख रुपिया लाग जावै तो ई कोई परवा जिसी बात नीं । पण हीरो इसो रो इसो होवणो चाहिजे । म्हनै जठा तांई याद है, भारत री जात्रा करतां वखत एक इसो रो इसो हीरो कलकत्ता में निगै आयो हो । उठै आप जरूर तपास कराईजो । ओ काम आपरै सिवाय दूजा सूं होवणो कठण है । इण वास्तै आपनै इज तकलीफ देवूं सो माफी बख्साईजो । उम्मीद करूं के म्हारा काम नै आप जरूर पार घालीला ।

कागद वाच'र सेठ घणा राजी व्हिया । सा'व री कागद कांई आयो जांणै लिछमी टीलो काढ़ियो । हुंसियारी सूं कांम कियो तो सीधी तीस-चालीस हजार री चोट ही । सेठ नैं मिसेज कर्पलिंग री चमकतोड़ी आंख्यां याद आयगी ।

अबै हीरा री तपास सरू हुई । पे'लोड़ै दिन झवैरी बजार में अर दूजोड़ै दिन खास-खास ठायां माथै । टेलीफोन करनैं मोकळा मिनखांनैं ई भळांमण घाली पण दौड़ भाग फिजूल गई । बीसां हीरा देख्या पण उण जिसौ हीरौ तो निगै नीं आयौ सो नीं ज आयौ । सेवट हार खायनैं सेठ कलकत्ता कांनी रवानै व्हिया अर देसाई नैं दिल्ली कांनी दौड़ायौ ।

सेठ तीन दिनां तांई कलकत्ता री सड़कां नापी जरै कठैई जावता चौथीड़ै दिन ठीक विसो री विसो इज हीरो एक देसी फर्म में निगै आयो। देखतां पांण सेठ रो जीव राजी व्हियो। उणरी निजरां आगै सा'ब अर मेंमडी रा हंसतोड़ा उणियारा फिरण लाग्या। सेठ नै पक्कायत विस्वास व्हैग्यो के हीरो वांनै सोळूं आना दाय आवैला।

हां नां करनै हीरो एक लाख में हाथ लाग्यो। सेठ बंबई आयग्या। दूजै ई दिन इज कागद में लिख्या ठिकाणा मार्थं सवा लाख री इंस्योर्ड व्ही० पी० सूं हीरो अदन रवानै कर दियो। अबै जावतां सेठ रै जीव नै कठैई नेहचो व्हियो।

पण अजोगी बात आ बणी के हीरो तो बारमै दिन इज अदन री मुसाफरी करनै पाछो आयग्यो। डाक तार रै महकमैं लिख्यो हो के इण नाम रो कोई आदमी उण ठिकाणै नीं है। सेठ रै पेट में ढबको पड़ग्यो। मन में बहम रा गोट उठण लाग्या। पैकैज खोलनै हीरो खरी निजर सूं मींटाय नै देख्यो तो ओळखता जेज नीं लागी। ओ तो सागण वो इज हीरो हो जिको छः महीनां पे'ली मिस्टर कर्पालिंग नै बेच्यो हो। झवेरी बजार में मोटरां री चालती कतार में एक सिनेमा की गाडी निकळी—जिणमें रेकर्ड बाजती ही—दुनिया में सब चोर-चोर...कोई छोटा चोर कोई बड़ा चोर...!

अमर चूंनड़ी

अठारवीं शताब्दी री बात। सियाळा री मौसम। प्रभात री वेळा। एक रथ जोधपुर सूं पाली कांनी एक बरगड़ै दौड़तौ जावै। आगै लारै पचासेक घुड़सवार। सस्तर पाटी सूं लैस। सियाळौ व्हेतां थकां ई रथ रा बैलिया अर घोड़ा हांण फांण व्हियोड़ा। परसेवा रा टपा पड़। फुरणियां में सांस नीं मावै। तो ई आंधी रा दोट व्है ज्यूं जावै। लारै धूड़ रा गैतूळ उडै। तीस चाळीस जवांन सागै रा सागै लारै पैदल दौड़ता आवै।

घड़ीक दिन चढ़्यौ अर लस्कर लूणी लांघ नैं गुड़ा-मोगड़ा री कांकड़ में पूगौ। पैदल जवांना नैं मारग में बकरियां रौ एक एवड़ चरतौ निगै आयौ। एवड़ री बकरौ मातौ-मतवाळौ, करारौ घोर व्हियोड़ौ। जवांनां रौ मन डुळग्यौ, सो बकरानैं खाजरू वास्तै उचकाय लियौ। रबारी कूकियौ—वापसी बकरा नैं छोड़ दो, एवड़ एक राजपूत रौ है, सो एक जिनावर रै खातर कठैई विघन पैदा व्हैला अर मिनख मरैला।

जवांन रबारी री बात सुणनैं हंसण लाग्या। वे बोल्या—थनैं इण बात री जांण है के नीं थूं पाली रा पट्टा में ऊभौ है। आगै रथ गयौ उणमें पाली ठाकर मुकनसिंह जी अर वांरी ठकरांणी विराज्या है। एवड़ रा धणी नैं जायनैं कैय दीजै के बकरौ तो खाजरू वास्तै थारौ बाप पाली ठाकर लेयग्यौ। पाछौ लावण री हिम्मत व्है तो लारै जा परौ।

रबारी लचकांणौ पड़नैं नीची धूण घाल्यां रवांनै व्हैग्यौ अर जवांन बकरा नैं लेयनैं आपरै मारगै पड़िया।

★ ★ ★

दिल्ली रा तखत माथै उण वखत औरंगजेब राज करै अर मारवाड़

री गादी माथै महाराजा अजीतसिंह। राजा अजीतसिंह कानां रौ काचौ अर मन रौ मोळो। सुणै जिकी ई मान लै। इण धोगा मस्ती में लोगा राठौड़ दुरगादास नै देस निकाळो दिराय दियौ। राज दरबार खुसाम-दिया अरजी हजूरियां रौ अखाड़ो बण्योड़ो। जठै नित नवा साग बणै। पाली टाकर मुकनसिंह मुसाहब रै रूप में दीवाण रै ओहदा माथै काम करै। वे ओ रासो देखनै मन रा मन में बळै पण कांई बस नीं लागै। वे दरबार नै चोखी सलाह देवणी चावै, राज काज रौ ढंग सुधारणो चावै पण कोई बात भरै नीं पड़ै।

उठीनै खुसालपुरै ठाकर प्रतापसिंह दरबार रै मूंढ रौ बाळ बण्योड़ा। दरबार रै कांन भिलराई पावड़ा भरै। सो उणां एक दिन राजा नै उल्टी पाटी पढ़ाई

—अन्नदाता मुकनसिंह बादसाह औरंगजेब रौ खास आदमी है। वो सामंतां री धूंण लावनै धूण हरामी पणौ करै। आपतो उणनै दीवाण बणायो है अर वो जिण हांडी में खावै उणनै इज फोड़ै। मारवाड़ सू नित रोज आपरी साची झूठी सिकायता दिल्ली पुगावै। अन्नदाता तो देवता मिनख हो सो पोता में तो इण बातरी जाण पड़ै कोयनीं अर म्हनै इसी ससायै कै कठैई अन्नदाता नै गादी माथै सूं उतारण रौ दिल्ली सू परवांणी नीं आय जावै।

दरबार नै खुद रा आदमियां माथै अमरोसो अर दिल्ली सू सतरी ही इज सो पाली ठाकर वाळी बात अगी अंग लागगी। सोळू आना जचगी। दिनूगै मुकनसिंह किला मे आवै जदै माथो वाढण री योजना बणगी।

पण राजमहल री दास दासियां अर चाकर बागरुआ में मुकनसिंह रा मिनख ई मौजूद हा। वारै कांनां में भणक पड़तां ई उणां रातो रात खबर पाली री हवेली पुगाय दी। बात सुण'र ठाकर ठकरांणी रै मन में पक्की सतरी पैठग्यो। जिको आदमी दुरगादास जिसा सांमधरमी नै ई देस निकाळो देय सकै, उणनै मुकनसिंह रो माथो बढावतां कांई जेज लागै। दोनूं जणा आपसरी में सलाह कीवी। खास भरोसा रा आदमी साथै लिया अर रथ जोताय नै रातूरात पाली कांनी रवांनै व्हिया।

* * *

गुडा मोगड़ा री कांकड़ मे दो आदमी खेत में ऊभा पाणी वाढ़ै।

धनजी राठोड़ अर भीमो गहलोत। धनजी मामो अर भीम जी भाणेज। गरधणी आदमी, गैरी पाणी करै अर गुजारा खातर एक रेवड़ियो ई राखै। मामो-भाणेज दोन्यूं डील रा गैणाग अर छाती रा वज्जर। काळजो इसो के दोन्यूं मिळनै हजारां मिनखां रो सामनो करण री हिम्मत राखै। रबारी आयनै खबर दीनी के पाली ठाकर रा आदमी एवड़ में सूं गाजरू वास्तै बकरियो खांडणी उठायनै लेग्या तो। सुणनै भीमा रै झाळो झाळ लागगी। वो रबारी माथै फरसो उठायनो फिरकनै बोल्यो निजरां आगै सूं मिनख बकरो उठायनै लेग्या अर थूं अठै जीवतो म्हांनै रोवण नै आयो है? निकळ जा निजरां आगै सूं, नीं तो अबार माथो वाढ दूला।

अर सानाणी जे धनजी आडो नी फिरै तो विना कसूर एक रबारण रांड व्है जाती। रबारी तो उठा सूं नेठीसा भगाया। अबै दोन्यूं मामा-भाणेज रै आंख्यां में जाणै भैरू रमिया। हाथां रै वटका भरै। म्हांरै एवड़ में सूं इज बकरो लेयग्या? अर कोई जोर रै जरकै? वाघ रै गळै वाड़ला नै हाथ नांखियो। मूंटो भूंडो वापड़ा पाली ठाकर रो, म्हारा बकरिया नै खाय जावै? डाढां नीं उखेल नांखूं। रजपूतण रा जाया सूं कदेई कांम कोनीं पड़ची दीसै!…मामै भाणेज पाला वाढण रा फरसा वेवला तो आगा फेंक्या अर खेजड़ी रै टिरता खांडा लेयनै बांधै कीना। एवड़ चरती उठै जायनै पग टोळिया तो पाली रै राज पंथ माथै धोम पग मंडिया। रथ रा चईलां माथै घोड़ां रा पोड़ अर पोड़ां माथै पैदल आदमियां रा पग मंडियोड़ा। दोन्यूं जणा पगां रा पगां लारै अरवड़ियोड़ा गया। पण गया-गया जितरै ठाकर री धागड़ी काकांणी गांम पूगग्यी।

काकांणी पाली रै पट्टा रो गाम, सो ठाकर जायनैं कोटड़ी में डेरा किया। किनात खांच ठकरांणी मांयनैं विराजिया अर ठाकर प्रोळ में। ग्राम में हाको फूटग्यो—धिन घड़ी धिन भाग! ठाकर पोतै गांम में पधारिया। नाई, कुम्हार, भांवी सगळा कमीण कारू पोत पोतारै कांम लाग्या। गांम रा मौजीज आदमियां आयनैं रावळै मुजरो अरज कियौ अर जाजम ढाळ नैं गांम में अमल री हाको करायो। घोड़ां ने दांणो अर वेलियां नैं गुळ फटकड़ी दिरीजी! रोटां वास्तै आटो गूंदीजियौ, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालो पीसतां सिला लोडी वाजण लागी। ठाकर रा आदमियां खाजरू करनैं वकरौ ऊंचौ टेर दियौ अर विचार कियौ के मसालौ तैयार व्है जितरैं अमलड़ा लेय लां अर पछै इणनैं पकाय नांखांला। भींत

रै आगै गादी माथै ठाकर पोतै बैठा अर आजू-बाजू बारा आदमी। आजम माथै पूरो गाम पटोपट बैठो। कोटड़ी में साथा सूं साधो रगड़ीजै, पण रासण में ई जागानी, अमल री गळणी टप टप करती टपक री। नक्काशी चित्रोड़ा खरड़ियां में असल बसूवो केसर रै कुनमाल हिलोळा खाय रह्यो। लोवा-लोवा भर-भर नैं आम्हा-साम्हो मनवारा व्हैरी। इतरै तो मांमो भाणेज आय पूगा।

पिरोळ बारै छिनेक ऊभ नै मामै भाणेज वांनी देख्यो। भाणेज बात नैं ताड़ग्यो। वो बोल्यो—आप बारै ऊभा रैवाडो अर म्हू माय नै जावूं। उम्मीद तो कम के बकरियां सेय नैं जीवती बारै आय जाऊंला, पण जे कदास काम आयग्यो तो लारलो रामत आप संभाल लिराई ओ। मामै उणरै पोतिया रै वाल्हो दियो अर मो'र वापोट नैं रवानै कियो। भीमड़ो पिरोळ रै मायनै पूगो। आंख्या रा डोळा राता चुट्ट व्हियोड़ा, गिणण-गिणण भमै, जाणै मायनै मेंह गिरै। परतख काळ रूप धर्योड़ो। भक्ख करतोड़ी भवानी म्यान में सूं बारै काढ़ी। पळाको पड़्यो पळाक करतो अर ठाकर री सभातो जाणै काटा री मूरत बणगी। कोई बोलै न कोई चालै, कोई हिलै न कोई डुलै, कोई चूकारो ई नी करै। भीमड़ा री निजर ऊंचा टिरता नाकड़ माथै पड़ी। वो धम-धम करतो चौकी माथै चढ़्यो, खाजरू खोल पछेवड़ी में लपेट मो'रा माथै बांध्यो अर आयो ज्यूं ई बतूळा रै वेग री गळाई हाथ में तलवार लिया एक छिन में पाछो पिरोळ बारै निकळग्यो।

बारै आया मामा-भाणेज री आस मिळी तो मामो अचूंभा में पड़ग्यो, गतागम में पजग्यो। वे किण विचार सूं अठै आया हा अर ओ कांई रासो व्हैग्यो। वानै इण कौतक री एक रत्ती भर ई उम्मीद नी ही। वे तो आ सोचनै आया हा के आज राटक उडैला। बकरिया रै बदळै पचास-पचीस री खाजरू व्हैला गेहरी घमसाण व्हैला अर माथो हथाळी में राख्यां बिना बकरियो पाछो हाथ नीं आवैला। पण अठै तो रामत खफाइज परवारगी। बकरियो तो मरियो सो मरियो इज पण पिरोळ में बैठा ठाकर समेत सैंकड़ू आदमियां रो अंस ई निकळग्यो। एकाध जणो जबान फोड़नै भीमानै टोकियो व्हैतो तो ई मांमा भाणेज रै जीवनै संतोख रैवतो।

धनजी कह्यो—बोल भांणू अबै कांई करणो ?

—आप फरमावो ज्यूं करां-नीचौ धूंण घाल्यां भीमैं पडुत्तर दियो।

—साम्हो कोई जीवता मिनख व्हैता, बारै मांयने ई थोड़ो घणो

आराम री अंग खोसी, तो बकरियो पाछो लिजावण में ई मजेदारी ही। पण ए तो सगळाई मुरदा है, सफा नाजोगा कायर है, इणां सूं बकरियो खोसनै पाछो लिजावता ई भूंडा लागां रे आपां, सो आपनै लायो जठै इणनै पाछो नाख दे।

धनजी निराशा सागनै कह्यो।

बातसी भीमा नै ई जचगी। गळीनियां सूं कांई रार करणी अर कायरां सूं कांई मान खोसणो। सो उणीज पगं पाछो बळियो अर शिरोळ में जायनै भडौल करतां बकरिया रो नांखणो नोकी माथे नांखतां ठाकर कांनी मूंडो करनै बोल्यो - ठाकरा थांरा आदमियां म्हांरो बकरो लाय नै घणो अजोगो कांम कियो अर उण सूं ई बणावट कांम कायरता बतावनै कियो। वां में इतरोइज तंत हो तो भूंडागड़जी वणनै बकरियो उठायनै लाया'इज क्यूं? चीज खोसनै लिजावण री मजी तो जद आवै के बरोबरी रो सांमनो व्हे। जीवता मिनखां सूं काम पड़ै अर वीरां सूं भिड़ंत व्हे। मुड़दां सूं कांई खोसनै लिजावां अर कायरां नै कांई कूटां? सो ओ बकरियो तो पाछो नांखनै जावूं हूं पण एक बात आपनै कैयनै जावूं सो गांठ बांध लीजो के आपरी इण परधै रै भरोसै आप आईन्दा कठैई वाघ तो कांई पण हिरण्या नै ई मत छेड़जो।

ठाकर री जीभ तो जांणै ताळवा रै चैठगी अर सभा सगळी जांणै पाबूजी रा पड़ में मंडनै चित्रांम वणगी। मांमो-भांणज पाछा रवांनै व्हेग्या। ठकरांणी किनात में बैठी आ सगळी रांमत देखै ही। उणै तुरत डावड़ी नैं भेजनैं ठाकर नैं बुलाया अर बोली—ठाकरां, म्हारै मत सूं पें'ली गळती तो आ हुई के आंपणा आदमी इण राजपूतां रै एवड़ में सूं बकरियो उटायनैं लाया अर अबै दूजी गळती आ हुवै है के ए हाथां में आयोड़ा हीरा पाछा जावै है आप तुरत आदमी भेज नैं इण दोन्यूं जणां नैं पाछा बुलावो अर म्हारै खनै भेजावो। पधारो फुरती करावो।

ठाकर रे तो कीं समझ में नीं आयो। ठकरांणी रे कह्या माफक वांरै लारै आदमी दौड़ाय दियो अर पोतै अणमणा सा सभा में जायनै बैठग्या। लारै हेलो सुणनैं मांमै भांणेज पाछळ फेरी—देख्यो एक आदमी दौड़ियो आवै। नैड़ो आयां पूछियो।

—कांई वात है भाई!

—आप पाछा पधारो।

—क्यूं !

—आपनै ठकराणी सा बुलावै ।

—किसी ठकराणी सा ?

—पाली ठाकर मुकनसिंह जी रे लाडीसा ।

—क्यू कांई काम है ?

—काम रो तो म्हनै ठा कोनीं पण । आपनै पाछा बुलाया जरूर है । मामै भाणैज दोन्यू जणा एक दूजा रै मूढा कांनीं देख्यो अर लारै आयोड़ा आदमी सागै-सागै पाछा रवानै व्हैग्या । कोटड़ी रै मायनै ठेट कनात खनै जायनै हाजर व्हिया ।

—थे कुण हो ? कनात रे मांयनै सू आवाज आई ।

— राजपूत रा बेटा ।

—केहड़ा राजपूत ?

—ओ गहलोत है अर म्हू राठौड़ ।

—किसो गाम-थांरो ?

—गुढ़ो—मोगड़ो ।

—कांई नाम थारा ?

—धन्नो अर भीमो ।

—कांई धंधो करो ?

—खेती-बाड़ी ।

—बकरियो थांरै एवड़ रो हो ?

—हा, हुकम ।

—थारे में सू नैन्हो व्है जिको कनात में हाथ आगो करो ।

—क्यूं ?

—म्हूं डोरो बांधणो चावू ।

भींमै कनात मे पुणचो आगो कियो अर ठकराणी डोरो बाध दियो । दोन्यू जणां नै मोळिया बंधवाय दिया । वे सोचण लाग्या—संजोग री बात देखो, पासो'ईज पलटग्यो । कठै तो वे मरण-मारण नै आया हा अर कठै काचा तातण में बंधग्या । धनजी अरज करी—

— बाईसा आप म्हानै आ इज्जत बख्सी है तो म्हारो भूंपड़ी तांई पधारो म्है ई म्हानै मिळै जेहड़ी आपनै चूनड़ी ओढ़ायनैं भाई रो फरज पूरो करा ।

—म्हैं इण सागा रण चूनड़ी सारू थारै डोरो नीं बांध्यो है बीरा, थारै कानी सूं तो म्हनैं अमर चूनड़ी मिळणी चाहिजै। ठकरांणी ठीमर सुर बोली।

—अमर चूनड़ी ? दोन्यूं मामो भाणेज एक सागै इज हळफळता बोल्या।

—हां, हां अमर चूनड़ी बीरा अमर चूनड़ी, थे अमर चूंनड़ी ओढावण जोग हो। इण वास्तै इज म्हैं आज थारै डोरो बांध्यो है।

अर पछै ठकरांणी ठाकर माथै आयोड़ी विपदा री सगळी गाथा धुर-मूळ सूं मांडनै सुणाय दी। बात री गंभीरता नै समझनै उणांई ठकरांणी नै अरज करी—

आप म्हानैं इण जोग समझिया आ आपरी बडापणो है। बाकी जिण विस्वास सूं आप म्हानैं भार सूंप्यो उणनै तो भगवान'इज पार लगावेला। मिनख वापड़ा री कांई जिनात सो उणरा काम में लिगार ई फेर फार कर सकै। पण एक बात म्हारी ई आपनै मानणी पड़ैला।

—वा कांई !

—वा आइज के ठाकर म्हा परवारी एक पांवडो ई अठी उठी नीं देय सकै। म्है रात'र दिन हर वखत ठाकर रै सागै रैवांला।

—तो इण में कांई अजोगी वात है ? आ तो आप म्हारै मन री वात कही। म्हारी तो खुद री आइज मंसा है के आप दोन्यूं जणा हर वखत वांरै सागै छियां री गळाई रैवाड़ी। जदै'इज तो ओ विखो पार पड़ैला। नीं तो आप जांणो के नवकूंटी मारवाड़ रै धणी रा हाथ घणा लांवा है।

—पण मारवाड़ रै धणी करतां इण संसार रै धणीरा हाथ तेर घणा लांवा है वाईसा। रांमजी राखै तो कोई नीं चाखै। अर ओ आप पूरौ भरोसो रखावो के पे'ली ए दोन्यूं लोथां जमीं माथै पड़ैला अर पछै'इज कोई ठाकर कांनी हाथ आगो करैला।

—म्हनैं पूरो भरोसो है बीरा थांरै बाहुंवळ रो अर इण भरोसारै पांण इज तो थां सूं सुहाग री भीख मांगती थकी अमर चूनड़ी री ओढांमणी चावूं।

पछै धनजी अर भीमो दोन्यूं जणा ठाकर मुकनसिंह रे हरदम खनैं रैवण लाग्या। साचांणी छियारी गळाई अस्ट पोर वे वांनैं छोड़ता'इज कोनीं ठकरांणी नैं आ देख'र घणौ नेहचौ व्हियो।

उठीनै जोधपुर सूं जिण दिन ठाकर नाठ नै पाली ग्राया, उण दिन सू इज वानै पाछा जोधपुर बुलावण री तरकीवां सोचीजण लागी। थोड़ाक दिन बीतया पछै दरबार री तरफ सूं परवांणा ऊपर परवाणा पाली पूगण लाग्या। ठाकर नैं भांत-भांत सू समझाय नै वेगा सू वेगा जोधपुर पूगण री ताकीद की जावण लागी।

—आप मारवाड़ राज रा दीवाण हो, यूं बिना पूछ्यां इज पाली कींकर पधारग्या? आपरै बिना राज-काज रा सैंकडू काम अधूरा पड़्या है। आपनैं वेगो पधारणो चाहिजै। पाली जे कोई काम अड़ाऊ व्है तौ एकर अठै पधारनै काम काज री मळामण घालनै पाछा पधार सको। इण भात एकर तो आपनै तुरत जोधपुर आवणो है, इणमें गळती नी रैवै।

कई महीना ताई लगातार परवाणा आवण सू हार खायनै ठाकर-ठकराणी आपस मे सलाह कीवी के एकर धनजी भीमजी सागै जोधपुर जायनै दीवाणगिरी सू स्तीफो पेस करदेवणो चाहिजै। ठकराणी रवानै होवती वखत ठाकरनै भात-भात सू समझायनै भेज्या अर उण दोनू जणा नै ई अंतसरी मळामण दीनी।

रातवासो पाली री हवेली मे लेय नै ठाकर दिनूगै किलै वहीर व्हिया तो मामो भाणेज वांरै सागै हा। उठै कावतरो घड़ियो-घड़ायो तैयार हो इण वास्तै किला री पिरोळ पूगताई हुकम व्हियौ के ड्योढ़ी छूट नी है, इण कारण दो आदमी सार्थ नी जाय सकै। ठाकर इण बात माथै अड़्या के ए दोन्यू म्हारा खास आदमी है, इण वास्तै यांरे बिना तो म्हूं एक पावडौ ई आगै नी देय सकू. दरबार नै अरज कराय दी जावै अर जे हुकम नीं व्है तौ म्हूं पाछो जावण नै तैयार हूं। किला रै मायनै सल्लाह-सून व्ही। नै व्हियौ के एक मायौ वहैला ज्यू तीन ई भेळा वहैला, काई फरक पडै सो तीनू नै ई आवण दो। तीनू जणा किला रे मायनै पूग्या। दरबार नै मुजरौ अरज कियौ। बैठा, वातांचीता व्ही, राज-काज री सलाह लिरीजी। पण सुमाल-पुरै प्रतापसिंह पोतारो काम नी सार सक्यो। ठाकर रै डावै अर जीमणै दोन्यू वानी जाणै भैरव बैठा, जिकौ ठाकर रै माथै घाव किया पे'लांज घाव करण वाळा रौ माथो धूड़ भेळो कर नाखै।

दो घड़ी किला मे ठैर नै ठाकर पाछा हवेली आया अर इण भात नितरोज किलै आवणो-जावणो सरू व्हियो। नितरोज तीनू जणा माथै रा साथै किलै चढै अर साथै रा साथै नीचै उतरै। प्रतापसिंह री कानीं सू

सेन सूं पिरोळ रा दरवाजा बन्द कर दिया।

किला में पूरो आवतो कियोड़ो हो। दरबार रै धर्न पूगता पें'लीज ठाकर रै दोळै घेरो लागग्यो। ठाकर खतरा नै समझ नै पोता री भूल माथै पछतावो करण लाग्या। पण अबै कांई व्है? धनजी भीमजी सूं तो जोजन कोस री छेटी पड़ी। बीच में भाखर व्है ज्यूं किला रो दरवाजो ऊभो। प्रतापसिंह नै सांम्ही आवतो देखनै ठाकर म्यान सूं तलवार बारै काढली। घेरो नेन्हो होवण लाग्यो अर ठाकर वार करै उण पें'लीज प्रतापसिंह री तलवार वूई सो ठाकर री गाभो बाढ नांख्यो। दुसिमयां रै मन चीती व्ही।

★ ★ ★

धनजी-भीमजी पाछा हवेली पूगा तो ठा पड़ी के भावी तो भरीजगी। गजब व्हैग्या। ठकराणी नै कोकर मूंडो बतावाला? उणरी अमर चूनड़ी वाळी साधनै कोकर पूरी करांला? ठाकर माथै ई धणी झूंझळ आई पण अबै कांई व्है, अबै तो हुई सो भाग री। सोच-विचार करण रो बखत नीं हो। भाखतणै फहकड़ै कुण जाणै कांई होय! सो भवानी नै सुमर, ले लाडा हाथ में अर मामो भाणेज जोधांणा रा किला कांनी रवानै व्हिया। धर धणी आदमियां नै मारवाड़ रा नाथ सूं टक्कर लेवणी ही। धरती माथै ऊभा आभा सूं भेटो खावणी ही, माटी रा दीवाटियां नै आंधी रै झपाटा सूं मुकाबलो करणो हो। पण मनोबल री ताकत संसार में सब सूं मोटी व्हिया करै। उणरी सामरथ रो कोई पार नीं व्है।

पिरोळ माथै पूगा तो दरवाजो बंद। किला रो दरवाजो भाखर रै उन-मान ऊंचो मायो किया मानखा री निबळाई माथै हंसण लाग्यो। तीखा-तीखा लोवंड रा सिरिया रूपी दांत लियां वो हाथियां सूं हुल्दीड़ा लेवण री हिम्मत राखै तो मिनख बापड़ा री कांई जिनात सो उणरै सांम्हा देख ई सकै। पण मांमै भाणेज कांनी खरी मीट सूं देख्यो अर भाणेज री निजर पण मांमा री लोरा ज्यूं धुकती आंख्यां सूं मिळी। जांणै वे कैवै ही—

किताक रासै काळजो, किताक नर झूंझार
आमंत्रण आयो अठै, आज मरण त्यूंहार।

भाणेज मुळक नै मांमा रै चरणां में हाथ लगायो अर मांमै उणनै छाती सूं चेप लियो। एक नै किला रो दरवाजो तोड़णो हो अर दूजा नै किला रै मांय नै जाय नै मरण त्यूंहार मनावणो हो। मामो बेठां भाणेज सुरग सिधार जावै आ अणहूणी बात गिणीजै सो धनजी दरवाजो तोड़णनै तैयार व्हियो।

अमर चूंनड़ी

नित नवा कामतरा घड़ीजै पण कोई बात भरैनी पड़ै । दोन्यूं भाई हर वगत साथै रैवै जिण सूं ठाकर माथै हाथ घालण री कोई री हिम्मत'इज नीं पड़ै ।

सेवट आपस में सलाह हुई के यूं काम भरै नी पड़ै । इण बातरो पतो लगावो के ठाकर एकलो किण वगत रैवै । उण वेळा उणनैं तुरत किलै बुलायनैं घात कर नांखो तो काम बण सकै ।

नोकर रूप सूं निगै दिया सूं जाण पड़ी के ठाकर सोमवार री एकासणी राखै अर प्रभात रा पोहर दिन चढ़्यां शिवजी री पूजा करण नैं जावै । उण वगत सागै भरियो एकलो रैवै । धनजी भीमजी उण वेळा सागै नीं व्है । अस्ट पोहर बदोकड़ी में रैवण सूं ना उणारै ज्ञा री मेला व्है तो उण वगत ताको साझ सकै तो सझ सकै ।

दूजोड़ै दिन अठीनै तो ठाकर पूजा सूं निवड़नै शिवाळा सूं वारै निकळ्यो अर उठीनै दरवार सूं हलकारो परवांणो लेय नैं हाजर व्हियो । कोई जरूरी कांम वास्ते ठाकर नै ऊभै पगे तुरत किला में बुलाया हा । पण हवेली पूगण सूं जांण पड़ी के धनजी-भीमजी तो कठैई वारै गयोड़ा है । ठाकर विचार में पड़ग्या । वांनै गतागम में पड़्या देखनै ठाकर रा दूजोड़ा नोकर-चाकर जिको ठेट सूं उण दोन्यूं जणां सूं ईसको राखता, ठाकर नै समझावण लाग्या —अन्नदाता आप महीनो भर व्हियो नित रोज किला में पधारो । घात व्हैणी व्हैती तो कदैई व्है जाती । धनजी-भीमजी माथै आपरो विस्वास है जिको चोखो इज है, पण कांई ए दो आदमी दरवार सूं ई वत्ता सांमरथ है ? दरवार तो आप रै माथै पूरा मेहरवांन है । आपनै नाराजगी रो फगत वहम है । आप निसंक होयनै किलै पधारो । म्हे दो च्यार आदमी आपरै साथै चालां । कांई धनजी भीमजी व्हे जठै इज दिन ऊगै ? नीं तो कांई अधारो इज रैवै ? वे दो न्यूं जणा तो आज वजार कांनी गयोड़ा है, कुण जाणै पाछा करै वावड़ै अर आपनैं तो हुकम परवांणै तुरत किलै पूगणो चाहिजै ।

कुमत आवै जरै कंयनैं नीं आवै अर भावी भरीज जावै जरै उणरौ कोई इलाज नीं लागै । ठाकर परधै री वातां में आयग्या अर च्यारेक आटा खाऊ साथै लेय नैं किला कांनी रवानै व्हिया पिरोळ रे दरवाजै पूगतांई पे'लै दिन वाळी सागैई वात व्ही, डचोढ़ी छूट नीं होवण री वहानौ वणायनैं च्यारूं आदमियां नैं तो वारै राख दिया अर ठाकर नैं चालाकी सूं मायनैं

लेय नै पिरोळ रा दरवाजा बन्द कर दिया।

किला में पूरो आवतो कियोड़ो हो। दरवार रै धनै चूगता पे'लीज ठाकर रै होळे घेरो लाग्यो। ठाकर सतरा नै समझ नै पोता री भूल माथै पछतावो करण लाग्या। पण अबै काई व्है ? धनजी भीमजी सू तो जोजन कोस री छेटी पड़ी। बीच में भाखर व्हे ज्यूं किला रो दरवाजो ऊभो। प्रतापसिह नै सांम्हो आवतो देखनै ठाकर म्यान सू तलवार बारै काढली। घेरो नेन्हो होवण लाग्यो अर ठाकर वार करै उण पे'लीज प्रतापसिह री तलवार दुई सो ठाकर रो माथो वाढ़ नांख्यो। दुस्मियां रे मन चींती व्ही।

* * *

धनजी-भीमजी पाछा हवेली पूगा तो ठा पड़ी के माजी तो भरीजगी। गजब व्हैग्या। ठकराणी नै कोकर मूंडो बतावांला ? उणरी अमर चूंनड़ी वाळी साधनै कीकर पूरी करांला ? ठाकर माथै ई धणी झूसळ आई पण अबै कांई व्है, अबै तो हुई सो भाग री। सोच-विचार करण रो वखत नी हो। मांखतणै फलकड़ कुण जाणै काई होय ! सो भवानी नै सुमर, ले सांडा हाय में अर मामो भांणेज ओधांणा रा किला कानी रवांनै व्हिया। घर धणी आदमियां नै मारवाड़ रा नाथ सूं टक्कर लेवणी ही। धरती माथै ऊभा आभा सू भेटी खावणी ही, माटी रा दीवाटियां नै आंधी रै झपाटां सू मुकाबलो करणो हो। पण मनोबल री ताकत संसार में सब सू मोटी व्हिया करै। उणरी सामरथ रो कोई पार नीं व्है।

पिरोळ माथै पूगा तो दरवाजो बंद। किला रो दरवाजो भाखर रे उन-मान ऊंचो माथो कियां मानखा री निवळाई माथै हंसण लाग्यो। तीखा-तीखा लोखंड रा सिरिया रूपी दांत सिर्यां सो हाथियां सू हव्वीड़ा लेवण री हिम्मत राखै तो मिनख बापड़ा री कांई जिनात सो उणरै सांम्हा देख ई सकै। पण मांमै भांणेज कानी खरी मीट सूं देख्यो अर भांणेज री निजर पण मामा री छोरा ज्यूं घुकती आंख्यां सूं मिली। जाणै वे कैवे हो—

किताक राखैं काळजो, किताक मर जूंझार
आमंत्रण आयो अठै, आज मरण त्यूंहार।

भांणेज मुळक नै मामा रै चरणां में हाथ लगायो अर माथै उणनै छाती सू भेप लियो। एक नै किला रो दरवाजो तोड़णो हो अर दूजा नै किला रे मांय नै जाय नै मरण त्यूंहार मनावणो हो। मामो बेटा भांणेज सुरग सिधार आवै आ अणहूणी बात गिणोड़े सो धनजी दरवाजो तोड़णनै तैयार व्हियो।

[illegible] [illegible] माथै मूगी।

दरवाजो तूटण सूं किला में खळबळी माचगी। [illegible] नांगावन्दी [illegible] बळियो। पण सिरै ड्योढी पगना-पगनां [illegible] तूटो, जदै नागली माथै निजर पड़ता ई वो नाग री गळाई उण [illegible] वीण नै वीर भीड़ माथै आय पड़ी [illegible] आयोड़ा तीन च्यारां नै [illegible] निजर आयो। री [illegible] वुई तो प्रतापसिंह रो माथो जमीं माथै गुडतो निजर आयो [illegible] च्यारूं मेर सूं घेर प्रतापसिंह पड़तां ई जोर रो हाको कियो अर भीमड़ा नै [illegible] लियो। झाटक बाजण लाग्यो। तड़ाक-तड़ाक करता माथा उडण लाग्या। जोर री हुंकार हुई। सादूळो सिवजी री गळाई तांडव निरत करण लाग्यो। भच्चा-भच्च ! …भच्चा-भच्च ! भवांनी भख भरण लागी। सिरै ड्योढी में लोही अर मांस रे लोथड़ां री कीच माचगी। एकल वीर जोधांणा रा किला में त्राहिमाम् मचाय दी।

केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगला कीध
हंसां नग हर नूं तुचा, अर दोत किरातां दीध
केहर कुंभ विदारियो, गज मोती खिरियाह
जांणैं काळा जळद सूं, ओळा ओसरियाह

धमचक माची तो पछै वा माची के घड़ी भर सूरज रथ थामै जेहड़ी वात वणी। भीमड़ो वुरी तरै सूं घायल व्हैग्यो। एक पड़ै तो ग्यारै आवै। वार पर वार होवण लाग्या। सरीर सूं लोही री पड़नाळो वग्ग-वग्ग करतोड़ो वैवण लाग्यो। सेवट मुकन रौ वैर वाळनैं सादूळो किला में कांम आयो। मांमै गढ री दरवाजो ढावियो तो भांणैज सिरै ड्योढी में डेरा किया। कवियां री वांणी माथै सुरसत आय विराजी—

आज्रूणी अधरात, महला रोई मुकनरी
(पण) पातल री परभात, भली रोवाड़ी भीमड़ा।

पाती जोधपुर सूं नैड़ी पई अर लुमाळपुरो पोड़ो आगो, सो ठाकर मुकनसिंह री ठकरांणी तो आधी रात रा रोई अर प्रताप री ठकरांणी नै ई भीमड़ै परभात रा पोहर में रोवाड़ नाखी।

पाघ धारी लग प्रोळ, जड़ी रही जोधांण री
गड़ में रौळा-रौळ, थै भली मचाई भीमड़ा।

(सुरगा में)

बूझै मुकनो बात, कद्दी पातल आया करै?
सुरगा एकण साथ, भेळाई मेल्या भीमड़ै।
वैर मुकन रो वाळ, पछै किला मे पोढियौ
थारी थरियां थाळ, भला बजायो भीमड़ा।

खेत वाळी वात

उतरतौ आसोज अर लागती काती। बाजरियां सांगो पांग पाकोड़ी। बांस-बांस ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा। दांणा देखो तो जांणै परड़ रा डोळा। मूगां चवळां री फळियां गुरजी भेस रा सींग व्है जिसी अर मतीरा कानरां री डाफळ पांणी वेळा पग-पग माथै पाथरीजियोडी। पाछतरा तिल गवार नीला डेडार करतोड़ा, जांणै मेहूड़ो अवार'इज वरस नैं गयो। वस्ती पांत रोही सुहामणी लागै कुदरत रा सिणगार नैं आंख्यां फाड़-फाड़ नैं देखता'इज जाओ पण जीव तिरपत नीं व्है। मन ठालो भूलो धापै इज नीं। उठा सूं सरकण री मंसा ई नीं व्है।

गांम री कांकड़ माथै चोधरी रो एक टणको खेत आयोड़ो। तीन वीसी हळवा रो एकठो चक। भगवांन री किरपा सूं इण पूरा चक में अवकै बाजर चैंठो तो पछै वो चैंठो के देखतांई भूख भागै जिसो। मिनख मारग वैवतांई थूथकी नांखै।

खेत रे सैं वीच एक लूंठो खेजड़ ऊभौ। टणकौ गोड अर लांवा-लांवा डाळा। कदीम सूं उणरै माथै माळो वणै। साख में दांणौ पड़तां ई चौधरी गोफण लेय नैं माळा माथै चढ़ जावैसो कातीसरो निवड़ियां इज पाछो नीचौ उतरै। गोफणियां रा सरणाट उड़ै। सूंतमी चांमडपोस गोफण, गोळ गोळ एक माप रा गौफणिया अर चौधरी रे वाहुड़ां रौ करार। दो च्यार वार भमाय नैं गोफण रौ फटकारौ लागै सो जाणै वंदूक में सूं गोळी छूटी।

अमर चूंनड़ी

गोफणियो उडै सूंसाड़ करतोड़ो। मजाल है कोई चिड़ी गी जायी ई नान डुबोयदे के मिनख रो जायो मेन में पावडो ई धर दे।

तावड़ो तपियां भातो लावण नै चौधरी माळा सूं नीचो उतरै अर तावड़ो टाळनै पाछो माथै चढ़ जावै। मिनख मेत री रुखाळी अर चौधरी रै सुभाव सूं आछी तरियां वाकब इण वास्तै कोई उणरै मेत कांनी मूंढो इज नीं करै। लावणी ताईं धान सफा नकेवळो ऊभो रैवै अर काचरा मतीरा सफा अबोट पड़िया रैवै।

समाजोग री वात के एक दिन उठारो राजा सिकार नै निकळयो। आथूंणा भाखर री ढाळ में झाडी झाडी आपोडी। जिण में सूंरां री डारा री डारां मछरो करै। दस बीस घोड़ा सूं टाळमा मोटयार लेय नै राजा उण बनकटी में वळियो। झाडी उठै इतरी जाडी के ताळी देय नै माठ जावो तो पतो नी लागै। राजा रो घोड़ो थोडोक आगै वधियो के एक अरड़ाट करतो एकलसूर झाड़ी में सूं बारै निकळयो राजा। घोडो लारै नांख दियो। बरगड़ां बरगड़ां···बरगड़ां! आगै सूर नै लारै घोड़ो। घड़ीक जेज में पाच दस कोस रो आंतरो पडग्यो। मोटयार सगळाई लारै छूटग्या अर राजा एकलो पड़ग्यो। असैंदी भोम अर उजाड मारग। राजा सूर रै लारै धूड़ बाळ नै घोड़ो राम भरोसै छोड़ दियो। चालता-चालता करड़ी रोटी वेळा व्हैगी। सूरज मथारै आयग्यो। आसोज रो तावड़ो लाय बरसावण लाग्यो अर राजा रो सास सोली में आयग्यो। तिरसा मरता री आंख्या फूटै। पण कठैई पांणी निजर नीं आवै।

सेवट राजा फिरतो-फिरतो उण चौधरी रै मेत कनै पूगो। माळा माथै मिनख ऊभो देखनै उणरै जीव में धावस बाधी। घोड़ो एकर कांनी बाळनै वो बाजरी में अरड़ियो। पग-पग माथै काचरा मतीरां री वेला पाथरी-जियोडी पडी। वळा में आंटिया आवण लागी। नीचै धरा कांनी देख्यो तो पड़ा रै उनमान टणका-टणका मतीरा पड़िया। राजा री देखतै ई तिरपत व्हैग्यो। घोड़ो थोड़ोक आगै बधियो तो एक डाबम दांती वेल निगै आ में पाथरीजियोडी निजर आई। पतरा झीना बच अर ताजो राहडी री गडाई बांटा दियोडो। उण माथै मायलोरा एक बालैंडा मतीरा नै देख नै राजा रो मन डूळग्यो। मतीरो कद रै उनमान टणको, गोळा रो जड़तो भारो। वो उणनै तोड़ण खातै नीचो झुकियो, जितै तो सूंसाट करतोड़ो एक गोफणियो उणरै कानै होय नै निकळयो। जै ऊंचो व्हैतो तो मोगत

—तो उणरै माजना में धूड़ ! " चौधरी चिड़तौ थकौ बोल्यौ। धरती रौ धणी होय नै इतरौ ओछौ मन राखै तो माजना में धूड़ पड़ैला इज। पण खैर यूं तो एक दो मीठा मतीरा खायले भाया, तिरस्यां मरता मरता रौ कंठ सूखतौ व्हैला। कठै राजा वाळी रांमायण लेय नै बैठग्यौ।

चौधरी राजा नै पै'ली तो कोरा चुकळिया में सूं ठाडौ टीप पांणी पायौ अर पछै मीठा मिसरी व्है जिसा मतीरा धापनै खवाया। राजा तिरपत होयनै पोतारौ मारग पकड़ियौ।

वातां करतां पखवाड़ौ बीतग्यौ। राजा वाळौ मतीरौ पाकनै रांणबाण व्हैग्यौ। बेलड़ी कुम्हळीजगी अर कूपल बळगी। चोखौ दिन देखनै चौधरी मतीरौ लेयनै राजा रै दरबार कांनी वहीर व्हियौ। लट्ठा री धोतियौ, सफेद पोपलीन री अंगरखी अर झीणी मलमल रौ साफौ। चोटी सूं लगाय नै एडी तांई सफेद भक्क, बगला री पांख व्है ज्यूं। मो'रां माथै ऊजळी धळाक पछेवड़ी में बंध्योड़ौ मतीरौ अर हाथ में तारां सूं गंठीयड़ी डांग। दरीखांनै जायनै खम्माघणी अरज कराई तो मांयनै आवण रौ हुकम मिळग्यौ।

राजा तो उणनै देखतां पांण ओळख लियौ चौधरी तौ वो सागीड़। जावतांई मुळकनै आवकारौ दियौ—आवौ चौधरी आवौ! चौधरी तीन वेळा जमी तांई लुळ-लुळ नै खम्माघणी अरज कर नै ऊंचौ राजा रै मूंडा कांनी देख्यौ तो पगां नीचै सूं धरती सिरकती लागी। ओ तौ सागण उण दिन खेत में आयौ जिकोज आदमी। चौधरी रा धै छिलग्या। भंवळ सी आवण लागी। पण पाछी हिम्मत बांधी। अबै उखळ में माथै देयनै हम्बीड़ां सूं कांई डरणौ। व्हैला जिकी भाग री। सो गाढ राख, मतीरौ राजा रै पगां में धरनै हाथ जोड़नै ऊभौ व्हैग्यौ।

राजा उणरौ संकोच तोड़ण खातर पूछण लाग्यौ कहौ चौधरी अब कै फसलां हूओ किसीक पाकी? चौधरी नै फेर थोड़ी हिम्मत बांधी अर धीरै-धीरै राजा सूं बंतळ करण लाग्यौ। अठी—उठी री मोकळी आडी डोडी वातां हुई पण दोन्यूं जणां उण दिन वाळी हकीकत जबांन माथै ई नी लाया। पण मन में छकै पंजै सावधांन।

सेवट राजा असली वात माथै आयौ अर बोल्यौ—चौधरी मतीरौ तो यूं बडौ जोर कौ ल्यायौ रे। अरे है रे कोई, दीवाणजी नै बुलावौ। चौधरी नै इण अनोखी भेट वास्तै कांई इनांम इकरार तौ मिळणौ इज चाहिजै।

सूं सोधणी ?

—क्यूं अन्नदाता री मरजी सांभळी ? सोनारी राजी व्हैनै बोल्यो ।

—इण में कोई इनाम इकरार री इंयूं सोधणी सो ? राजा मन्न री मनगारी बोली ।

—नो, सो म्हारै हेत म्हारो थान अन्नदाता ! सोनारी सो सुनार री अर एक सुनार री नांट कन्नो बोल्यो ।

राजा सोनारी रा बांर थापोड्या अर मूठो इनाम इकरार देवनै रवांनै गियो ।

रूपाळी बींनणी

लचकै लाडा थारी मोजड़ी रै
छळकै केसरिया री जांन
नगरी रे लोकां पूछियौ रै
किसौ बीरो परणं पधारै ऽऽ...

रात रा पाछला पो'र में लुगाया रा झीणा कंठ सूं गीत रे सागै सागै ऊंठां अर बळदा री घरीक पण सांतरी व्हैगी। इणसूं वांरै गळां में बांध्योड़ी टोकर माळा अर घुघरमाळां एक लय सूं रुण झुण टुण-मुण अर झम्मर झम्म री समवेत सुर उच्चारण लागी। इण सगळी चळवळ सूं आ बात जाहेर ही के कोई गांम नैड़ो आयग्यो है।जांनी स्यात् गांमवाळां नै बतावणी चावै हा के कोई जांन जायरी है सो कोई आयनै देखौ।

पण उण कुवेळा में आपरी मोठी नींद छोड' र कुण उठतो। म्हूं जरूर उठग्यो कारण के म्हूं जांनी हो अर म्हारो छकड़ो सगळां सूं लारै हो। म्हैं छकड़ा रा पाटिया रै आगो लगायनै पग लांबा कर लिया अर सिगरेट सुळगाय ली। इण वखत रात री पाछली पो' र हो सो नींद सफा उडगी ही। सिगरेट रे धुंआ रा गोट सागै विचारा रा दोट पण बणण अर बिगड़ण लाग्या। बात जे इमानदारी सूं कही जावै तो आ बात सौ टका सही है के जान में जावती वखत एक तरै री नसो चढ जाया करै। इण नसा रो असर चूकता जांनियां माथै रैवै। कोई माथै थोड़ो तो कोई माथै घणो। कई लोग तो इण नसा रो असर तो जिनावरां तकात माथै मानै। पण इण

इतै रा मांयै सूरजजी, जांन रो [illegible], म्हनै मांड़ो [illegible] आयग्यो। मैं म्हारा माथै आयो म्हेंताई झवरी आयगी। पांचेक मिनट सूरजजी सूं बोल्या म्हेंता के [illegible] म्हनै मंडप मे अगाव दियो। आंख्यां सगळां देखतां ही आगै सूरज रो माथो निकळ्यो [illegible]। [illegible] छियोड़ो। म्हे उणनै [illegible] हालत मे देख'र आछा मरोड़ा करयो —काई बात है भाई ?

आप नै सेठजी अबार रा अबार बुलाया है सो पधारो।

— इसी काई बात है ? बता तो सही।

— सूरज बिफरग्यो है अर सेठजी सूं मन पड़ग्यो है, इण वास्तै सेठजी आपनै बुलाया है।

सूरज रा सुभावनै म्हूं आछी तरियां जांणै हो पण इण मौका माथै उणनूं आ उम्मीद नी ही। म्हू निकळण रे सागै [illegible] बियो तो गै सूं पे'ली मारग मे सेठजी मिळ्या। मूंडो पड़ग्योड़ो, निलाड़ मे सळ पड़्योड़ा अर पागड़ी रा आंटा ढीला पड़ग्योड़ा। म्हनै देखताईं वे एक कांनी ले जायनै बोल्या—

— चवदै बरसां में बीस हजार रुपिया खरच करनै इण नालायक नैं भणायो-गुणायो इणरो ओ नतीजो है मास्टर सा'ब ?

म्हूं आंख्यां फाड़नै सेठजी रे मूंडा कांनी देखण लाग्यो। वे बात नैं साफ करता बोल्या—सूरजियो कैवे के म्हूं बिनणी नैं रूबरू देख्या पछै इज उणरै सागै फेरा फिरूंला। उणनै देखा—देखी करणी ही तो दो बरस सगपण रह्यो है, उण बखत कांई ऊंघ आई ही ? अबै एन मौका माथै आ किसीक नालायकी री बात है। देखण रो मतळब तो उणरी पसंदगी-नापसंदगी रो सवाल हुयो। अर इण नालायक री पसंदगी रो नाप तोल कांई ? ओ तो आभा री अपसरा चावैला वा आवैला कठा सूं ? इण मूरख नैं भांत-भांत सूं समझाय नैं म्हूं हारग्यो के टाबर म्हारै देख्योड़ी है—फूटरी, फररी अर दीपती है। थूं भरोसो राख। इण सूंई वेसी चावै तो थनैं उणरो फोटू बताय सकां। पण ऐन मौका माथै रूबरू देखण, री हर करणी कम अकल री बात है। पे'ली थनैं कांई मौत आई ही। फेर दो-च्यार मिनट में थूं उणरा गुण-औगुण तो जांण नीं सकै। पछै रूबरू देखण रो मतळब ई कांई ? इण वास्तै अबै ऐन मौका माथै फालतू हठ छोड़दे। पण म्हारी तो मांनैं कोनीं सो आपनैं हाथ जोड़नैं अरज है के आप इण मूरखनैं ज्यूं-त्यूं

करनै समझावो। जे कदाच ओ नटग्यौ तो आगलां रौ ग्रर म्हारौ दोन्यू रौ माजनौ जावैला। एक तरै सूं मरण व्है जाएला। म्हारौ बरातियौ नसौ उतरग्यौ।

किसाक भूंडा फंस्या। मन में जूंनी मानतावा अर नूवी मानतावां रौ मथण चालण लाग्यौ। दिमाग में कई विचार आवण लाग्या—प्रेम पे'लो ब्याव के, ब्याव पे'लो प्रेम ? पण ग्रबै इण वाता पर विचार करण री वखत नीं हो। ग्रबै तो तुरत कोई बीचलो मारग काढणौ हो। म्हूं सूरज सनैं पूगौ ग्रर उणनै भांत-भांत सूं समझायौ पण नटियौ मूहतौ नैंणसी, तांबौ देण तलाक। म्हूं हार खायनै पाछौ जनवासै आयग्यौ। उठै सूरज रै सासरा रा नाई सूं आ ठा पड़ी के सूरज रै हठ वाळी बात उणरै सासरा में ई पूगगी है। अर इण बात माथै घर रा मिनखां में ई फट पड़ग्यौ है। दो दळ बणग्यां है। एक लिबरल अर दूजो कंजर वेटिव। लिबरला नै सूरज री बातां में कोई खरावी नीं दीसै अर कंजरवेटिवा रै वास्तै ओ जीवण मरण रौ सवाल है। कंजरवेटिव दळ री मुखी छोरी री मा ही अर लिबरल दळ रौ मुखी छोरी रौ बाप। दोन्यू दळां रा पोत-पोतारा न्यारा-न्यारा विचार अर दलीलां ही। पण सगळां सूं मोटी बात आ ही के धीरै-धीरै लगन री वखत नैड़ी आवै हो अर कोई राजीपौ नीं बैठतौ हो। पण थोड़ीक जेज में रैडियौ एनाउंस री गळाई खबर आई के छोरी पोतै सूरज नै मिलण वास्तै बुलायौ है। म्हैं छोरी नै, छोरी री अक्कल नै, छोरी री मा नै ग्रर भगवान नैं सगळां नै ई धनवाद दियौ अर इंटरव्यू रै रिजल्ट री वाट जोवण लाग्यौ।

इंटरव्यू रा विगतवार समाचार तो पछै सूरज रै मूंडा सूं'इज सुण्या। उणनै इंटरव्यू वास्तै जिकण कमरा में बुलायौ वो एक छोटो'सीक कमरौ हो। कमरा री सजावट सूं अदाज लागतो हो के सजावट में कोई खांमची मिनख रा हाथ लाग्योड़ा है। हरेक चीज ठिकाणैसर अर ढंग सू धरियोड़ी ही। दो एक मिनट में लारलो दरवाजो खुल्यौ अर उणरी होवण वाळी बीनणी—सारदा आयनै सन्मुख ऊभी व्हैगी।

सूरज उणरै मूंडा कांनी देख्यौ तो चितबंगौ व्हैग्यौ। सांम्ही जांणै रूप री खजांनौ ऊभौ। चंवरी में बैठण री संपूरण त्यारी रै सागै नख सूं सिख ताई जोवन रा भार सूं दब्योड़ी। पण संकोच-सरम रौ कठैई नांम ई नीं। प्याला जिसा मोटा-मोटा नैणां अर बांकड़ली भवां री मार सूं

सूरज मायत होग्यो। दुनिया नै सगळू अजाणत माळो सूरज आज पीत सगळू सदग्यो। कलारूपी री मळाई माथली ओग आगी गाळ्या रे गैठगी। सेवट सारदा मूंन तोड़्यो, गुलाब रा फूल जिसा कंवळा-कंवळा होठ हिल्या—बिगसी! अर सूरज कुरसी सांमनै बैठग्यो।

—थे म्हूं आगै दाय आवगी कै नीं? कोयल रै कंठ जिसी मीठी आवाज सुणीजी।

—ठीक, आवा। सूरज अकनाकायनै पडूत्तर दियो।

—तो लिखाओ इण कागद माथै कै आपनै म्हूं दाय आवगी अर आप म्हारै माथै फेरा फिरण नै तैयार हो—ओ लिरावो पेन अर ओ कागज।

सूरज आगापाछो बिचार्‍यां री मळाई कह्यो ज्यूं ई लिखनै दसखत कर दिया।

सारदा कागद री पुरजियो सांवटनै ब्लाउज में घालती बोली—आप म्हनै पसंद करली आ आपरो बडापणो है, पण आप म्हनै जाबक ई दाय कोनी आया। सो आया ज्यूं ई पाछा पधारो। तकलीफ दीनी इण वास्तै माफ कराई जी।

निलम भरै जितरी जेज में गांम में हाको सो फूटग्यो। सगळा जांनियां री नशो उतरग्यो। जांन आई ज्यूं पाछी ग्यानै व्ही। पण अबकाळै नीं तो घुघर माळां री रुणझुण हीं अर नीं टोकर माळांरी टुणटुण। उण वात नैं आज दस बरस व्हैंग्या पण आज ई कोई जांन जावती देखूं तो म्हनै दो वातां याद आय जावै—एक तो सारदा री पडुत्तर अर दूजो वो गीत—

लचकै लाडा थारी मोजड़ी रै
ढळकै केसरिया री जांन……

बोल म्हारी माछळी

भाग फाटी। पंछी पंखेरू बोलण लाग्या। मास्टर पुरसोत्तम री आख खुली। रजाई सूं थोड़ोसो'क मूंडो बारै काढ्यो तो ठाड री कड़कड़ाट करतोड़ी रेळो इसो आयो के सप्प करतां मूंडो पाछो मायनै लुकाय लियो अर आंख्यां काठी मीचली। पगां कांनी रजाई फाटयोड़ी ही सो पगतळियां ठरण लागी तो गोडा छाती रै चेप नै पसवाड़ो फेर लियो। घींड्या री गळाई सोळी थण्योड़ो माथो चरड़ चूं करतो बोलण लाग्यो। उणनै थोड़ी झूंझळ आई। वो कितरा दिनां सूं एक दो नूवा मांचा बणावण री मतो करै। पण वातड़ी बैठै इज नी। अर नूवी रजाई बणावण सारू तो लारला दो सियाळा सूं गूदा गळै पण कोई बात भरै पड़ै इज नीं। घर में नैना मोटा ग्यारै मिनख अर ऊपर सूं औ मूंधीवाड़ो। माथो ई ऊंचो नीं करण दे। सावण री ई नीठ पूरी पड़ै तो पछै मांचा अर रजाईयां कठा सूं बणावणा? मांचा बिना धरती माथै ऊगरांणो सूईज सकै, रजाईयां बिना फाटोड़ा पूरां में अळोबी बणनै, रात काडीज सकै पण पेट रो खाडो तो टैम सर भरणो इज पड़ै। सावण री खोट घालै कोनी सो बाया नै माड़ो तो देवणो इज पड़ै। घी-दूध अर मेवा मिस्टान्न तो गया खाड़ै मे पण छाछ राबड़ी मे तो घाटो नीं रैवणो चाहिजै।

छाछ री बात याद आवतां ई वो सोचण लाग्यो—आज छाछ कठा सूं मंगावणी? इण गाम मे धीणो-धापो मोकळो हो पण मिनखां रा मन ओछा पड़ग्या। इण वास्तै कुणानां गोठां में छाछ देवता मकाई नट जावै।

उणैं स्हैर में पढ़िया टावरां री सारी साध री ही। जिणारै घरै धीणौ हो वे सागीगर विनोभाभावी रै दिन दोनिया भर्या आठ सा'व रै छाछ पुगाय देवता। पण इण साख्री ई टावरां में साद दिरावणो जरूरी हो नींतर छाछ श्रीन आनसी अर मास्टरजी रै घर में नणानण बिना महाभारत मच जावतो।

वो आगला गीन्या गूनी-गूनी गीनण लाग्यो — किसोक माठो जमांनो आयग्यो! कितरो मुंगीवाड़ो वधग्यो! अर हाल ई फर्क, अजां तो दिन-दिन वधतो इज जावै है। भगवांन जाणै आगै जायनै कांई हालत व्हैला। स्यात् घी सूंघण नैं अर गांठ तिलक लगावण नैं मिळैला। पनरै-वीसेक वरसां पे'ली जद वो नोकर व्हियो किसोक मजारो वगत हो। कितरी सस्तीवाड़ो, नीज वरसरी कितरी वोहळाई! रुपिया रा पक्का दस सेर गेहूं मिळता अर रुपिया में सेर भर घी आवतो। खांड रुपियारी च्यार सेर पक्की मिळती अर गुड़ नैं तो कोई सूंघतो ई कोनीं। सनलाईट साबुन री चक्की फगत दो आंनां में मिळती अर च्यार छः आंनै गज चोखो कपड़ो चाहिजै जितरो ई मिळतो। वीस रुपिया महीना री तनखा मिळती पण खावतां पींवतां उणमें सूं ई दस रुपिया बच जावता। आज दोय सौ रुपिया मिळै पण धींगलो ई नीं बचै। उल्टा वीस-तीस माथै व्है।

जिण वरस वो नोकर व्हियो उणीज वरस उणरो व्याव पण व्हियौ। दोन्यूं मिनख खूब खांवता पींवता अर मस्त रैवता। कोई अड़को न कोई धड़को। किसीक मजारी जिंदगी ही। भैंस भादवो चीतारै तो एक घड़ी ई नीं जीवै। पण हूंणी इतरी बळवांन व्है के भैंस वापड़ी नै तो कांई पण मिनख नैं ई क्षख मारनै जीवणो पड़ै। उणै एक ऊंडी निसासा नांख'र डाढी माथै हाथ फेरयो तो वा उणनैं वध्योड़ी लागी। उणरो मन जांणै कींकर ई व्हैग्यो। उणनैं पोतारो वो फोटू याद आयो जिको उणैं व्याव रै दूजी साल धणी-लुगाई दोन्यूं भेळा ऊभ नैं खेंचायो हो। उण वखत सुसीला रो किसौक फूट रो सरूप हो। आज ई फोटू देख्यां आंख्यां तिरपत व्है जाए। आछौ कियौ जो उण वखत फोटू खेंचाय लियौ। अबै कठै वो सरूप अर कठै वे वातां। वे पांणी मुल्तांन गया। उणनैं मोकळा वरसां पे'ल री एक वात याद आयगी। स्यात् सांवणी तीज ही। सुसीला ओढ पे'र नैं लड़ा भूंब व्हियोड़ी तळाव माथै पांणी लावण नैं गई अर वो एकलौ धर में बैठ्यौ हो। थोड़ी'क ताळ में उणरै कानां में मेंहदी गीत री कड़ियां गूंजण लागी।

पांणी जावतो पणिहारियां गावै ही—

मेंहदी तो बाई मेड़तै रै
तांतो गयो अजमेर···
मेंहदी रंग लाग्यो···
कोई जायनै भंवरजी नै यूं कहिजो रै
थारां बाईजी परणीजै घरै आव
मेंहदी रंग लाग्यो···
बाईजी परणीजै तो म्है कांई करां रै
दायजो दीजो भरपूर
मेंहदी रंग लाग्यो···

लुगायां रा समवेत सुर में ई सुसीला रो तीखो सुर छानो नी रह्यो। वो कान लगाय नै सुणण लाग्यो हो—

कोई जाय नै ढोलाजी नै यूं कहिजो रे
थांरी मरवण मांदी घरै आव
मेंहदी रंग लाग्यो···
आज तो धुपावूं धोतिया रे
काले तो मारवणी रे देस
मेंहदी रंग लाग्यो···

घरै आयां वो सुसीला रे माथै सूं मटकी उतरावण लाग्यो तो उणरो रूप देखनै चितबंगो सो व्हैग्यो। वो मटकी उतरावणी तो भूलग्यो अर आंख्यां फाड़-फाड़ नै उणरै मूंडा कांनी ज देखण लाग्यो। वा रीसां बळती बोली—म्हूं थारां मर्द हूं देखो कोनीं? यूं कांई आंख्यां फाड्यां ऊभा हो, कठैई निजर नांख दोला। उणे थूयको नांखतां कह्यो—थनै साचाणी निजर लाग जाएला म्हारी मरवण, पांणी आवे जरै काजळ री टीकी लगाय नै आया कर ला दू। सुण नैं वा हंसण लागी तो गालां में नैंना-नैंना खाडा पड़ग्या। कितरा बरस व्हैग्या इण वात नैं पण हाल तांई वो भूल्यौ कोनीं हो। मोकळी वार इण वात नैं याद कर वो करै। खास करनै आंख्यां मीच्यां सूतां थ्है जरै उणनै आ वात यादकरण में घणी मजो आवे। मजा मूं आंख्यां थाठी मीचनै वो सुसीला रो फूटरापौ निरखतो रैवै अर वा बापड़ी मटकी ऊंचायां भारा मरती ऊभी रैवै।

आज ई वो उण नित रांम रो अणछक आणंद लूटतो हो के मांचा रै

नीचै कांई गळगळाट व्हियो। पांवरियो कुत्तो पोतारी गाज मिटावण नै डील रगड़तो व्हेला। सगळा उणरै पाल सूं गरद व्हियोड़ा। ठोड़-ठोड़ नगदा पड़ियोड़ा। मोड़ी ही अर मांगियां डीगै। उणनै घिन्न सी आई। मन तो कांई पण मूंडो ई कड़वास सूं भरीजग्यो। उणै रसोई रै मांयनै जोर सूं धाकल कीनी अर कुत्तो नाठ्यो। सुसीला नै सो बात कैय दियो के दिनूंगै ई दिनूंगै आडो आंगाळ नै लागै, उघाड़ो नीं रागै। ओ सूगलो पावरियो कुत्तो नीं जाणै ताक नै इज बैठ्यो रैवै। आडो उघाड़ो मिळयो के नट मांयनै। टाबर सूतो व्है तो जायनै बीच में घुस जावै। सगळा गूदड़ा ई खराब कर नांखै। पण उणरी सुणै कुण? सुसीला रो तो जांणै माथो इज भंवग्यो है, सुभाव तो इसो चिड़चिड़ो व्हैग्यो है के बात-बात में बटका इज भरै। सीधी बात कैवां तो ई उणनै ऊंधी जचै। कालकी'ज बात देखो— सबसूं नैन्या गोगला रै दांत आवै जिणसूं उणनै दस्ता लागै अर उल्टियां व्है। सो टाबर रसोई में बैठ्यो हो कि उल्टी व्हैगी। उल्टी व्हैणी टाबर रै हाथ री बात कोनीं। उणरी मा रो फरज हो के उणनै अवेरै। पण म्है कह्यो के उणरो तो माथो इज भंवग्यो है—फड़ाफड़ दो-तीन थप्पड़ां पड़ी टाबर रा मूंडा माथै अर छोरै रोय-रोय नैं घर माथै ले लियो। उणरै देखादेखी उणसूं दो बरस मोटो पप्पू ई जोर जोर सूं रोवण लाग्यो अर घर में जांणै महाभारत मचग्यो। म्हैं कह्यो—ए भली मिनख टाबर नैं यूं मारै? आ कठारी समझदारी है? अर इतरो सुणतां पांण तो जांणै आग में घी पड़ियो। छळचोड़ी डाकण री गळाई वा म्हारै कांनी आंख्यां काढ़नैं बोली—एक दिन ई टाबरां नैं अवेरो तो ठा पड़ै, कोरा बातांरा मटरका किया है। थांरी इण टींटा फौज नैं अवेरो तो जांणूं के टाबरां नैं नीं कूटणा समझदारी है। नीं तो कोरी मोरी बातां रा पटीड़ा पाउण में तो कांई जोर पड़ै? घर में नव-नव टाबर अर म्हारी जिंद एकली। म्हनै तो जीवती नैं खाय ली है दुरिटयां। हे भगवांन अबै तो मौत देवै तो इण नरकवाड़ा सूं पिंड छूटै।

म्हनैं वहम व्हियौ के वा फोटू वाली अर मेंहदी गावण वाळी सुसीला कोई दूजी ही अर आ वड़का बोली डाकण व्है जिसी सुसीला कोई दूजी ज है। उणरौ सुभाव तौ कितरौ ठीमर, कितरौ मीठौ अर कितरौ गरवौ हो अर इणरौ सुभाव कितरौ तीखौ, कितरौ कड़वौ अर कितरौ औछौ है। ब्याव व्हियां पछै च्यार वरसां तांई कोई टाबर नीं व्हियौ जितरै तो आ

नैना टाबर धानर तरसती अर अबै तो पलक-पलक में टाबरां नै मरणरी धामीमां देवै।

मास्टर पुरसोत्तम नै एक जोर री छींक आई अर उणै रजाई डील रै चाठी लपेट ली। कठैई ठाड नीं लाग जावै। गई साल इण दिनां में इज उणनै नमूनियो व्हैग्यो हो। सुसीला उणरी कितरी सेवा चाकरी कीवी ही। सात दिन अर सात रात मांचा रै सनै सूं आगी ई कोनी सिरकी। म्हैं बापड़ी सुसीला नै जमारा में दुख रै सिवा कांई सुख दियो। ठीक है ब्याव व्हियां पछै च्यार बरस कोई टाबर-टूबर नीं व्हिय जितरै थोड़ा दिन नेहचा सूं निकळग्या। पछै तो बापड़ी फोड़ाइ'ज भुगतिया। रांमू जनम्यां नै दो बरस व्हिया के स्यांमू आयग्यो अर पछै तो जाणै टाबर लैणसर तैयार इज ऊभा हा अर संसार में आवणरी बाटड़'ज जोवै हा। हर दो बरस री छेटी सूं तीजां, चौथकी, पांचकी, आयचुकी, धापूड़ी, पप्पू अर मुनियो धड़ाधड़ जनमता इज गया। हरेक सुआवड़ इणरै वास्तै मौत री घाटी बणनै आई पण भगवांन इज लाज राखी नीं तो राम जांणै म्हारी कांई हालत व्हैती। इण बापड़ी इसी एक नीं दो नीं पण पूरी नव जूंणां भुगती है। ऊपर सूं खुराक चोखी मिळी व्हैती तो ई इणरै पड रौ इतरो पोलाळो नीं व्हैतो। पण अठै तो सगळी उमर पांच री आमद अर सात रो खरच रहयो। चोखो खावणो-पीवणो चावां पण खावणो कठासूं अर मिनख री गळाई जीवणो चावां पण जीवणो कीकर ?

गोडा छाती में लियां थोड़ी निवास बापरी तो उणै पग पाछा लांबा कर लिया। वो सोचण लाग्यो—इण दीवाली री'ज बात है, टाबरा रै नूंवा कपड़ा ई नीं आय सक्या। टाबर तो टाबर इज है, वे मा बापा री अबखाई नै कांई समझै। वे तो दूजा टावरां नै नूंवा कपड़ा पेहरियौड़ा देखै जद आय नै मा री जीव खावै। रांमू, स्यांमू अर तीजां तौ फेरूं कांईक समझै है, इण वास्तै थां री तो इतरी दुख कोनी पण लारली फौज तो सफा अबोध है। वांरै तो बस नूंवा कपड़ा चाहिजै, फटाका चाहिजै। आयचुकी, धापूड़ी अर पप्पू नूंवा कपड़ां अर फटाकां खातर कितरा रोया हा। याद कियां आज ई करूणा आवै।

···टावरां रै कपड़ा दीवाळी माथै नीं बण्या तो कोई बात नी पण अबै तो बणावणा इज पड़ैला। कितरी गजब री ठाढ पड़ै अर टावरां रै सरीर माथै ऊनी छोड़नै पूरा सूती कपड़ा ई कोनीं। सगळां रै ई कपड़ा

[illegible] री [illegible] री [illegible] है । [illegible] महीना री [illegible] री [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] री पाव-[illegible] [illegible] है । [illegible] दिन [illegible]-[illegible] रो अर [illegible] [illegible] । [illegible] री [illegible] [illegible] । [illegible] री [illegible] [illegible] । [illegible] है । [illegible] री [illegible] [illegible] है । अठै [illegible] री [illegible] सूं [illegible] ? [illegible] में एक इज बाई [illegible] जा सकै । पण अठै तो [illegible] बैठी है । भगवान जांणै औ गाडो कियां पार लागैला ।

…रांमू ई इण बरस हायर सैकेंडरी कर लेवैला । आगली साल उणनै कॉलिज में भेजणो है…सोचतां-सोचतां उणरो माथो भंवण लाग्यो । रजाई में आंख्यां खोली तो ई चौफेर अंधारो इज निजर आयो ।

दिन ऊगग्यो हो पण मास्टर पुरसोत्तम री गूदड़ा छोड़ण री नीत नीं ही । इतरै तो उणै सुण्यो के सुसीला जोर जोर सूं उल्टियां करै ही । उणरो तो काळजो फड़कां चढ़ग्यो । कारण के महीना भर सूं बहम तो उणनैं हो इज । वो रजाई एकदम आगी उछाळनै सुसीला कनै पूग्यो अर बोल्यो—कांई बात है? सुसीला बापड़ी कांई जवाब देवती । ढोळै बैठ्योड़ी गाय री गळाई आंख्यां फाड़नै उणरै मूंडा कांनी देखण लागी । टाबरियाई जागग्या हा अर सूता सूता ई गूदड़ां में इज रमण लागग्या हा । पांची कैवै ही— बोल म्हारी माछळी कितरो पाणी ?

कितरो पांणी ?

धापू उणनैं पडुत्तर देवै ही—इतरो पांणी—इतरो पाणी !

मा री ओरणी

गांम रै अड़ोअड़ एक खेत आयोड़ो—पादर। गांम नै खेत रै बिचाळै फगत एक बाड़। खेत री जमीं इसी उपजाऊ के माथो बाढ नै आवी तो उग आवै। सावण रो महीनो सो बाजरियां निनाण आयोड़ी। नीली कच, सांवली भंवर, डाफळपानी। खेत आणै उफण आयोड़ो। सूरियो वायरो पूंगी बजावै अर बाजरी लैं'रा लेवै। आंख्यां आधी मिच्योड़ी आधी उघाड़ी।

खेत में बड़बोरड़ियां आयोड़ी, गहर उम्मर व्हियोड़ी, जांणै बडला ऊभा। फळसा आगली बोरड़ी रै नीचै एक टाबर रमै। टाबर एक बाजरी रा मूंबा नै पाळ राख्यो सो उणरै च्यारूं मेर पाळी बणा'र रोज उणनै पांणी पावै। आज ई तनमन सूं इण काम में लाग्योड़ो, चुकळिया सूं लोटियो भरनै ल्यावै अर बाजरी रै गोड में ऊंधाय दे। मूडै सूं बड़बड़ावतो जावै—

जंतर मंतर बोल पळीतर मोटी व्हैजा फुर्र ··

निनाण करती उणरी मा आपणी थर भरसो रै हिचकी टेक नै ऊभी व्हैगी। टाबर मतर बोलनै पूठ फेरी तो मानै ऊभी देखनै एक दम सरमायग्यो। वो दौड़नै मा रै पगां मे लिपटग्यो अर आपरो मूंडो लुकाय लियो।

मा'रै बेटो एकाएक होवण सूं घणा लाडको। वो उणरै आख्यां रो तारो अर काळजै री कोर। भाठा जितरा देव पूजनै नीठानीठ देख्योड़ो सो वा उणनै अधर रो अधर राखै। जांणै वो कठै चालै अर कठै हाय

गया। बेटा नै एक बेर मां नै पियोड़ो के दीवाळी किणां पळै निज मा रै खोळा में सूत्यो अर निजरोक एक नवी कहाणी सुणवी। आज ई बेटै हठ झाल्यो के मा इसी बातै सुणाई जिणी कोई ऐतिहासिक कहाणी सुणा, जिणमें मरदानगी भर्यै पळाव-पळाव अर बंदूकां फूटै धड़ाम-धड़ाम !

मा रै चीत में एक निरमी लैहरी। जिण रोज तमासगो अर बंदूकां वाळी कहाणी कठा सूं लावणी ? मा बोली - बेटा, दिन रा कहाणी कैणां तो मारग भूला बटाऊड़ा मारग भूल जावै।

जिण रोज जो बटाऊड़ा मारग कोनी भूलै ? बेटो गळगळो होय नै बोल्यो। आंख्यां भरीजगी। मा नै हार मानणी पड़ी।

थोड़ी ताळ आंख्यां मीच नै मा बोली -- काती महीनै दीवाळी आवै बेटा अर उणरै दो दिनां पै'ली आवै धन तेरस। सेठ साहूकार उण दिन घर-घर सगळो ई गेहणो गांठो नै पैसा टका बारै काढ़ै अर दरवाजा बंद करनै रात रा लिछमी नै रिझावै। लिछमी धनरी देवी गिणीजै इण वास्तै लिछमी रा लाड़का उणनै तन मन सूं पूजै।

पण बेटा नै नीं तो लिछमी सूं मतळब हो अर नीं उणरी पूजा सूं। वो तो बंदूकां रै धड़ाकां नै उडी कै हो। वो मा रै मूंडै कांनी देखण लाग्यो। मा टीमर सुर में आगै बोली --थारै जनम रै दो बरसां पै'ल री बात है बेटा, आंपणै गांम में धाड़ो पड़्यो हो, धन तेरस रै सै दिन। चवदै धाड़ैती नव ऊंठां सूं चढ़नै गांम लूटण नै आया। धवळै दिन रा दोपार री वेळा दड़ी छंट दोड़ता नव ई ऊंठ गांम रै मांय वळिया। कातीसरा रा दिन, खेतां में ऊभा तिल ग्वार तड़ै, पैसा दीनां ई मजदूर मिळै नीं सो करसा तो सगळाई खेतां में हा। धाड़ैती पण इण वातनैं आछी तिरियां जांणै हा के गांम में लारै रह्योड़ा मिनख बौदा है अर इणां में सूं कोई वांरो सांमनो करण नैं नी आवै। सो पवन रै वेग आवतोड़ा ऊंठ एकदम आयनैं चोवटै रुकग्या अर बंदूकां रा दो तीन भड़ाका एक साथै इज व्हियां— धड़ांम ! धड़ांम ! धड़ांम !

वेटा नैं कहाणी सुणण में रस आवण लाग्यो, वा मा रै खोळा में आगो सिरकग्यो।

—बंदूकां रा भड़ाका अर धाड़ैतियां रै आवण री खबर सुणनैं गांम में खळबळी सी माचगी। मिनख जीव लेयनैं दौड़ण लाग्या। घरांरा बारणा खुला पड़्या, चीज वस्त ऊघाड़ी पड़ी, पण कोईनैं कोईरी चिंता नीं।

सगळां रैई पोत-पोतारै जीव री पड़ी। आप मरतां बाप किणनैं याद आवै। लुगायां रै कोई रो टाबर घोड़िया में सूतो तो कोई रो बारै रमणनैं गयोड़ो तो कोई रै चूल्है माथै धाट विना हिलायां ओदी व्है री पण सगळो घर-बार छोड़-छोड़ नै जीव बचाळियै नाठी।

जीव बचावण नै कोई कोठा कोठियां में बळियो, कोई घास री वागर में घुस्यो तो कोई राली गूदड़ां में बड़्यो। किणैई रैवारियां रै बाडां री सरण लीवी, किणैई भीलां रा झूंपा संभाळ्या तो कोई रा पगयेट खेतांरी बाजरिया में जावता ठमिया। आदमी'र लुगायां सगळा हांफ फांफ व्हियोड़ा, पेट रा गोळा ऊंचा चढ़योड़ा, छाती मे सांस नी मावै। आदमी धोतियो पकड़ै तो पोतियो बिखर जावै अर पोतियो संभाळै तो धोतियो खुल जावै। रावळी पिरोळ पुरोहितां रा घर अर मंतां सीमाळियां रा आंगणां मिनखां सूं भरीजग्या। कोई धूजै, कोई रोवै तो कोई कळपै।

उठीनैं धाड़ितियां चावटा रै मैं बीच ऊंठ झोकिया, आंतरा माथै आजम ढाळी, कपड़ै री दुकान फोड़'र मोठड़ा फुकाया, सबा माथै नूवा वेस राळिया अर सब सूं पै'ली सुनार री दुकांन लूट'र मोहरत कियो। एक जणो बंदूक ले'र टूकियो बैठ्यो, दूजोड़ो आजम माथै ऊंठां खनैं टैरियो। बाकी थारै जणा सुनार नै साथै लेय नै मोटी-मोटी हवेलियां कांनी चाल्या।

गांम में स्याफो छायोड़ो, पांनड़ो ई नीं हिलै, चिड़ी रो जायो ई नीं फड़कै, कुत्ता ई जांणै पताळ में पैठग्या। धवळै दिन रा गांम सफा सूनो मसांण व्है ज्यूं लागै। पोढ़ी-पोढ़ी जेज में ठैर-ठैर नै तिजोड़ियां माथै घण बाजै धम्मीड़...धम्मीड़। करै ई कोई जोर सूं कूकै अर ए सगळी आवाजां आधी रात रा सरणाटा में सुणीजै ज्यूं गांम रा इण खूंणा सूं उण खूणा तांई एक सरीखी सुणीजै।

कांबड़ियां रा सरणाटउडै—संड़ंद सड़द! और डंडा रा धरणाटउडै-बडंद। बडंद। मिनखां आला उघड़गी, बंदूक रै कुंदां रै धम्मीड़ां सूं माथा फाटग्या, खून सूं आंगणा लाल कंबोळ व्हैग्या पण रागसां रा मन नीं पसीज्या। जणां जिण घर नै लूटियो उण में निजर पड़ी कोई चीज बाकी नीं छोडी। किवाड़ तोड़ दिया, टीकर फोड़ दिया अर पेटिया रो भूरो भूरो कर नांख्यो। हरेक लूटयोड़ा घर सूं लगाय नै चावटा री आजम तांई चीजां री पाज बांधगी। ध्याळा, ईवणिया रेसमी कांचळियां, मलमल रा पोतिया, धोरा बाळा फेटिया, चोभे पेरै री मूनड़ियां, हींगळू री चूंदियां,

गुरमा री कणियां, बादळ री बूंदलियां, म्हा पातळर री कणियां, गैल अटार री मोमीया अर न आवे बाढैला। डै पीपा ऊभो मारग गळी-गळी में खिलरियोड़ी पड़ी ही। मारवै री आतम माथे लिछमी रा ढिगळा लाग्योड़ा। सोनो लागे माटी ज्यांरी नो गोळ गैला लागा। डोकी नै पाछी बुलायो। डांग-आळी पुलीस रहता, ओमा भर भर नै निकळणवाळां री ही। ऊंटां नै डेरण नै घी रा पीपा पाय रह्या, घी ऊंनो करण नै कपड़ां री होळी होय री। जरी, रेसम जोर जट अर टेरेलीन रो धेर लाग्योड़ो। जरी रो एक एक टुपटो पांच-पांच सो री कीमत रो, जिणां नै उठाय-उठाय नै आग में होम रह्या। पूरो ठाट जम्योड़ो।

बेटै नै आणंद आवण लाग्यो, उणरो बाल मन सगळी चीजां परतख देखण लाग्यो। मा आगै बोली— आंपणै पादर रै ज्यूं गांम रै उतराद में एक खेत आयोड़ो है—सोळंकियां रो वाड़ियो। इण खेत में अजीतसिंहजी सोळंकी कई मिनखां सागै बाजरी वाढ़ता हा। उणां ऊं बंदूकां रा भड़ाका सुण्या अर पछै देख्यो के धोरै माथै सूं मतीरा गुड़कै ज्यूं मिनख वाड़ कूद कूद नै खेत रै गांयनै गुड़कै है। वांनै खतरा री जांण व्हैगी।

—कांई बात है रै ? गुड़कण वालां नै अजीतसिंहजी पूछ्यो।

—धाड़ैती गांम लूटै है। कोई गुड़कतो गुड़तो बोल्यो।

—धाड़ैती गांम लूटै अर थे आय नै बाजरी में लुको ? फिट रै नादारां थांनै।

राजपूत री आंख्यां में लाल डोरा तणग्यां। मूंछांरा बाल ऊभा व्हैग्या। उणी वखत हाथ री दातर आगी फेंकनै गांम कांनी रवानै व्हिया। खेत में ऊभा किमतरीया कूकीया—अजीतसिंहजी गेला व्हैग्या कै कांई बात है ? धाड़ैतियां माथै घाव करणो मौत नैं हेलो करणो है।

—मौत ? मौत एक वार व्हिया करै। आज मातर भोम री ओरणो खेंचीजै हैं अर म्हूं जांणतो थको मूंडो लुकाय नैं बैठूं तो म्हारी मौत तौ व्है चुकी। इण मौत करतां तो वा मौत लाख दरजै चोखी।

घर में सस्तर पाटी रै नांम माथै फगत तलवार रौ एक खापटो हो। वे चुपचाप तलवार ले'र निकळता इज हा के उणांरी वैंन देख लिया। वा वारणो रोक'र रोवती कळपती बोली—

—वीरा पे'ली इण टाबरियां कांनी देख लो। इणांरी मा संसार नी है सो विचार कर नैं पग आगै धरजो।

ागा सिरकजी म्हूँ ई मोडीवाळ सूं।
ज्यां है के बटण है, दीसैं कोनीं। अठै ती आगै ई
ोरी आवै। आघो ढूंगो टेक नैं नीठ बैठा हां अर
फरमावै के थोड़ा आगा सिरकजौ। घर रा ढौ
आटो मावै। लारली ठेसण माथै इण सेठां नैं
थोड़ी सी'क जगै दीवी ती होळै-होळै ग्यावणी
ंजग्या। छाछ नैं आई अर घर री धणियांणी
ंफेर न्यारा करै। जांणै पूरा जावै है। दो
इज ढावसी। अबै तो माथा मार्थं बैठणी
र रास्त जौ।
ंई कोई आंती मायौड़ो दीसैं। बंतळावतां
ं सुणाय दी। थरां सूं लड़नैं निकळयौ
ैतेड़ मेलै अर हारयौ हाकम जामनी
नी आगा इज भला। राड़ आडी बाड़
ग सूं भारत व्है जाएला। सो उणरैं
रगला रैं ज्यूं एक टांग माथै ऊभी

ंई पसरनैं बैठी हो। मटकी रैं उन-
ट मायी, गोळ-गोळ बटण जेड़ी
र। पसेवा में लथपथ व्हियोड़ी
ा अंगोछा सूं मिनट-मिनट में
गी सांडरी गळाई नीच लो
गी। गाडी में कांई बिराज्या
ती हो।
हा। करड़ा लट्ठ व्हियोड़ा
नी-ऊंची बुसर्ट, दिलिप
ची चस्मी अर हाथ में
ग मोडरेट थम्योड़ा।
आय नै बिराजग्या

नां एक सिरिमांनजी फेर बिराज्या

[illegible] मांग पड़ी

[illegible] री बेर । आप जावतो पड़ै । माथो फाटै जिसो । मुगां बाजै । [illegible] कांई । [illegible] । जेड़ी [illegible] मिलै गो जावो ई वारै नीं [illegible] । [illegible] बाजड़ो बिरथा घरै । [illegible] आडा आवे बाड़ नै फाड़णी पड़ै । [illegible] हूं [illegible] ढैणी गाळा। मोड़ां टेसण जायनै गाड़ी [illegible] । पण [illegible] जिसो जिगरै नो मांग [illegible] में आयगी अर दिन [illegible] दिया । [illegible] जायनै टिगट मांग्यो तो बाबू नैंठो [illegible] आयो --[illegible] कांई [illegible] आई ही ? अबै [illegible] जांणै बाबू नै [illegible] पधारचा है । झट निकाळ नै वाळो आगा पैसा, गाड़ी आउटर माथै आयगी है ।

टिगट लेय नैं डब्बा में चढ़यो तो थबोथब भरयोड़ो । हिलोळा खाए । पग मेलण नै ई जगै नीं । मांयनै वड़तां ई जांणै गारियो पड़्यो—

जगै कोनीं ! जगै कोनीं ! वारै ! वारै !

पे'ला मावा में इज माखी अर चवरी में इज रांड व्हैती देखी तो वारैं लारै धूड़ वाळी । पण नीचै उतरियो जितरै तो भू SSS SSS क ! जांणै गधौ भूंकियो । काळजो फड़कां चढग्यो । जे लंगूर री गळाई फदाक मारनैं लप्प करती नी चढ़ूं तो लारैं रैय जावतो सैं मैंणत अकारथ जावती अर कातियौ विकियौ कपास व्है जातो । पण आंधां रा तंदूरा रांमदे वजावै सो गाडी तो कियांई पकड़ली ।

पण इण डब्वा में ई वा री वा गत । करम नैं छिया साथै चालै । करणौ कांई करणो ? सेवट हिम्मत करनैं एक जणा नैं होळै सी'क कह्यो—

अमर चूंनड़ी

भाई जी राज, घोड़ा आगा सिरकजो म्हूँ ई गोडीवाळ नू।

पहुतर मिळचो-आंख्यां है के बटण है, दीसँ कोनी। अठै तौ आगै ई मरां हां। सांस ई दोरो-दोरी आवै। आघी ढूंगौ टेक नै नीठ बैठा हां अर आप भवै पधारया है सो फरमावै के घोड़ा आगा सिरकजो। घर रा तौ धरटी घाटै अर पांवणां नै आटौ भावै। लारली ठेसण माथै इण सेठां नै ज्यूं-त्यूं सांकड़-मोकड़ करनै थोड़ी सी'क जगै दीवी तौ होळै-होळै ग्यावणी भैंस री गळाई पसर नै विराजग्या। छाछ नै आई अर घर री धणियांणी बणनै बैठगी। ऊपर सूं टसकता फेर न्यारा करै। आंणै पूरा आवै है। दो मिनखां री जगै तो इणं एकलै इज डाबली। अबै तौ माथा माथै बैठणी बाकी रह्यो है, वा ई मन में मत राखजो।

म्हैं देख्यौ ओ ई म्हारी गळाई कोई आंती मायोड़ो दीसै। मंदळावता इज याप्यां पड़ै। एक री इक्कीस सुणाय दी। घरा सूं लड़नै निकळयो दीसै। साची कही है तप्यो भाठो तेड मेलै अर हारयो हाकम जोमनी मांगै सो माथै व्हियोड़ा भिनखो सूं तो आगा इज भला। राड़ आछी बाड़ चोखी। नीं तौ अबार कठै ई तिणकला सूं मारत व्है जाएला। सो उणरे लारे पावड़ै-पावड़ै धूड़ बाळ नै म्हूं बगला रै ज्यूं एक टांग माथै ऊभौ व्हैग्यो।

सेठ साचाणी ग्यावणी भैंस री गळाई पसरनै बैठी हो। मटकी रै उन-मान टणकी तूद, दोणियां जेड़ी घोटम घोट मायो, गोळ-गोळ बटण जेड़ी आंख्यां अर पाची रै जिसा मैला थांण कपड़ा। परसेवा में तपतप व्हियोड़ो बकरो वासी ज्यूं वासतो हो। रखा माथै पड्या अंगोछा सूं मिनट-मिनट में परसेवौ पूंछतो अर जितरी वार परसैवो पूछतो सावरी पड़ाई भीच नै होठ लांबा करनै मस्त ऽऽ ऽऽ री आवाज करतो। गाडी में बाई विराज्या हा जांणै रेल्वाई विभाग माथै मोटो एहसान कियो हो।

साम्हली सीट माथै एक बाबू सा'ब विराज्या हा। बरदा मट्ट व्हियोड़ा बन्दूक री सोळी व्है जिसी काळी मोरी री पैंट, ऊंची-ऊंची बुसर्ट, सिनिर कट बाल अर तलवार कट मूछां। आंख्यां माथै काळो चस्मो अर हाथ में अंगरेजी रो अखबार। बड़का-बड़का उजरो में भन्दा मोटरेट कन्नीरा। जाणै अबार इज हेलीकोप्टर सूं उतरनै सीधा गाडी में आय नै विराजग्या व्हैं।

बाबू सा'ब रै पासतीं'ब वारी वानी एक निरिमानयो धेर विराज्या

हैं। [illegible]। [illegible] आगै इण माथै। [illegible] री
[illegible]। [illegible] के [illegible]। [illegible] मोटा-
[illegible] री
[illegible]। [illegible] गाडी रै बाफैर
ऊंचो-ऊंचो [illegible], [illegible] री मैदान।
अर [illegible] नेहरू कट जॉकिट
[illegible]। [illegible] जाणती जांण पड़ी के
[illegible] हा।

डब्बा में भीड़ अणूती घणी ही। [illegible] फेरणी ई मुस्की करण रै [illegible] हो। म्हारी पूठ में एक बाबोजी महाराज ऊभा हा। भस्मी रमायां अर हड कमंडळ लियां [illegible] जाणै सिवजी रो अवतार। अर मूंडा आगै एक रवारण घर घराणै री गांठड़ी ऊंनाया 'इवनिंग इन पेरिस' री खुसबू फैलावती ऊभी ही। पूठ में बाबाजी रा हड कमंडळ अर चींपटा खुवण लागा अर नाक में एवड़ रै [illegible] री गमगोळ फूटण लागी तो जीव घुमटी जण लागो। पण निजोरी बात ही, जोर कांई करतो। रांम जाणै दिनूंगै मूंडो किणरो देख्यो हो।

अपूठै ऊभै इ'ज बाबाजी ने अरज करी-गुरुदेव आपरा सत्तरपाटी थोड़ा सावळ रखावो, नीं तो इण गरीब रा हाडका भाग जाएगा। बाबोजी सुणनैं पे'नी तो थोड़ा हस्या अर पछै ठेट कबीरजी री निरगुण वांणी में बोल्या— थोड़ा धीरज रक्खो भगत, संसार असार है अर सुख-दुख का जोड़ा है। साधु संत की सोहब्बत तकदीर वाले को मिलती है। सो मालिक का सुमिरन करो और प्रेम से सीधे खड़े रहो बेटा!

बाबैजी महाराज फैसलो सुणाय दियो अर उण रवारण नैं तो बापड़ी नैं कैवण री कोई रस्तो ई कोनीं हो। वा तो पोतै ई म्हारी गळाई एक टांग माथै ऊभी ही। सो बाबाजी रा उपदेस प्रमांणै आंख्यां मींच अर नाक भींच नैं सीता पति री सुमरण कियो के है दीनानाथ! कोई मुसाफर नैं सुमत दे सो वो आगला ठेसण माथै उतर जावै अर म्हनैं इण सत्संग सूं मुगती मिळै।

गाडी होळै-होळै स्पीड पकड़ी तौ डब्बा में थोड़ी सांति वापरी। सीटां माथै बैठोड़ै बड़ापणा री निजर सूं ऊभोड़ां कांनीं गरुर सूं देख्यौ अरऊभोड़ां साम्यवादी निजर सूं बैठोड़ां कांनी खरी मीट सूं जोयौ। धीरै-धीरै आपसरी

मैं थंतळ सरू व्ही । पोता री तूंद माथै खूब प्यार सूं हाथ फेर नै अंगोछा सूं लिलाड़ री परसैवो पूंछतां सेठ म्हनै पूछ्यो—

—आपरो किसो गांम ?

—खांडप

—आगै कठा तांई जावोला ?

—जोधपुर तांई ।

—म्हूं ई लूंणी तांई चालूंला ।

— आपरो कठै बिराजणो ?

—म्हूं रैवूं तो जोधपुर हूं पण म्हारी दुकांन रांणी वाडा में है ।

—आपरो नांम ?

—किसन गोपाळ ।

—दुकांन तो आपरी ठीक चालती व्हैला ?

—ठीक है सा, दाळ रोटी निकळ जावै । बाकी तो इण जमानां मे बिणज-वैपार कांई करणो है, दुख देखणो है । पण कबूतर नै कुवो सूझै । बडेरां री धंधो है । दूजो करणो चावां तो ई कांई करां ।

—क्यूं सेठां ओड़ी कांई तकलीफ है बिणज वैपार में ?

—तकलीफ तो भाई जी, अबै आपनै कांई बतावो । लागै जिणरै घर-धरै अर दुखै जिणरै पीड़ । कह्यां सू कांई थाग लागै । कह्यो है के—कुठोड़ री पीड़ अर सुसरोजी वैद—अबै कैवणो ई बिणनै रह्यो ?

~ तो ई कांई बतावो तो खरी । म्हैं तो आ जांणां के इण जमाना में वैपारी खूब कमावै अर मजा करै ।

सेठजी एक लांबी डकार लेवता बोल्या—ओ थांरो कसूर कोनीं भाया, आतो परम्परा री रीत है के पराई थाळी मे घी घणो दीसै । बाकी तो असल बात आ है के वैपार रै वास्तै बड़ी खराब टैम आयोड़ी है । अबै तो बस खोस खावणा अर नाठ जावणा । दूजी बात इंज मीं । कितरा तो अफसर । टोळा रा टोळा । भेळा किया व्है तो थाड़ो भरीज जावै । सेलटैक्स रा न्यारा, इनकमटैक्स रा न्यारा, फूडसेन रा न्यारा, हेल्प वाळा न्यारा, इनफोर्समेंट रा न्यारा तो पुलिस वाळा न्यारा । अर सगळाई म्हारा बेटा एक एक सूं अगळा लिलाड रै कूक मां डिलोडा । दूजी भवानी रै ज्यूं लाव-लाव इंज करै । इणांरा पेट है के मेटर बक्स है । कूततादन आवो तो ई खाली रा खाली । एक मूडो व्है तो बाद मू ई

भरीजै आवै पण इणरा नी पूरा सूं ई कोनी भरीजै । नित नूंवा ऊंगा-माथरा मानूं निकळै । ऐ इण देवतां रा ने ठेकादार अर आपरी परवांणे धूण नी [illegible] किया करै । अबै आप इण विचार करो के कितोक मजो है [illegible] विचार मैदान में ।

पण सेठां ने आप इमानदारी सूं धंधो करो तो किणराई पेट क्यूं भरणा पड़े ?

— इमानदारी ? सेठ हंसतां बोल्या — आप कांई धंधो करो ?

— मास्टर हूं । टाबर पढ़ावण रो धंधो करूं ।

— माट सा'ब जी, जदै इज टाबरां जैड़ी भोळी-भोळी वातां करो । आपनै इमानदारी निजर आई कठै ई इण मुलक में ? सही बात आ है के जे इमानदारी राखणी चावां तो ई कोनी राख सकां । रांड रंडापो काढणी चावै पण रंडवा कोनी काढण देवै ।

— पण जे रांड खोटां धकाई मा नावटै सूवै अर रंडवां रै भाठा फैंकै तो पछै रंडवां रो कांई कसूर ?

— माट सा'ब आप सफा गळत पेट माथै हो । म्हूं आपनै घरबीती सुणाऊं — सेठ जोर री डकार लेवतां बोल्या — गया महीना री बात है, कोई मांमूली लैण-देण रा मामला में एक अफसर म्हारा सूं बेराजी व्हैग्या । म्हनै ई रीस आयगी के देवतां-देवतां ई अकड़ बतावै, सो आपसरी में झोड़ व्हैग्यो । नतीजो ओ निकळ्यो के म्हनै एक अमल रा केस मे फंसाय दियो अर उण केस में हजारां रो धूंवो उडग्यो । इण ढंग रा एक नीं पण अनेकूं किस्सा है । कांई-कांई सुणावां अर किणनैं सुणावां ?

सेठ स्यात् फेरूं कई किस्सा सुणावता पण गाडी मोड़ में चालण लागी तो जांण पड़ी के लूंणी नैड़ी आयगी है । सेठ रै अठै उतरणो हो सो माया समेटण लागा । पागड़ी संभाळता बोल्या —

लो माट सा'ब अबै तो बैठ जाओ, कणाकलाई ऊभा हो, काया व्हैग्या व्हौला ।

म्हैं मन में कह्यो — लेखै विणजै वांणियौ अर फ़ेर ओडावै पाड़ । इतरी जेज सांकड़ मांकड़ करनैं बैठण री जगै दी व्हैती तौ थांरी भलाई ही । अबै तो भावै ई सीट खाली करणी पड़ैला । सो कांई पाड़ ओढावणी कोनीं ।

म्हारैं बैठतां ई बाबौजी बोल्या — अलख निरंजन ! थोड़ी सी जगै

हमकूं ई दे दे भगत,फगत एक ढूंगां टेक के बैठ जायेंगे। संकर तेरा कल्याण करेंगे बेटा। खड़े-खड़े पैर थंभे की तरह हो रहे हैं और नसा उतर जाने से सिर में चक्कर आ रहा है। जगह मिल जाय तो बड़ा पुन्न होगा।

म्हैं कह्यो—बाबाजी आ रवारण बापड़ी कणाकली बोझो ऊंचायां ऊभी है। इणनै बैठण दो तो आपनै बड़ो पुन्न व्हैला। पण बाबौजी तो म्हारी बात पूरी व्हियां पैलीज अरड़धम करता म्हारै माथै इज बिराजता बोल्या—

—औरत की जात बड़ी कट्ठी होती है भगत। तुम इसकी चिन्ता मत करो।ये तो जनम भर खड़ी रहवै तो भी इसके कुछ नहीं बिगड़ैगा। तुलसी महाराज कह गये हैं—ढोल गंवार…म्हैं बाबा नै मन में मोकळी गाळी दी। पण बाबै तो पोतारो आसण जमाय लियौ हो। नैहचा सूं बैठनै म्हैं सांम्ही देख्यौ तो नेतौजी लेवा होठ में अरदौ भरनै ऊंचौ मूंडौ किया बैठा हा। थोड़ी'क ताळ में सारी कांनी मूंडौकरनै आड़े-आड़ै बैठा मुसाफरां माथै डी॰ डी॰ टी॰ री छिड़काव करता बोल्या—

—स्साला सेठ का बच्चा!

म्हनै लागौ नेतौजी इतरी जेज भरयौड़ा बैठा मांए रा मांए घुमटीजता हा। सेठ री बातां खतम व्हियां भाखण देवण री पूरी त्यारी कियां बैठा हा। हिचकी माथै भायौड़ा थूक रा टेरा नै पूंछता बोल्या—

—माट सा'ब इण सेठ नै ओळखो आप?

—नीं सा म्हूं तो आज पैं'ली वार इज मिळ्यौ।

—इण री बातां तो सुणली, आप?

—हां वातां तो सुणीज है।

—खुद गुरूजी बैंगण खावै अर दूजां नै परमोद बतावै।

—आ कीकर?

—कीकर काई ओ धंटा भरियो व्हियौ सरकार अर नेतावां—अफसरां री भूंडियां करै हो। इणनै खुदनै तो पूछो के थूं काई-काई कवाड़ा करै है। म्हूं इण री सगली बातां कान देय नै सुणतौ हो अर विचार करै हो के ओ आपरी सै बाफ काढ देवै तो सौ सुनार री अर एक लुहार री सुणाऊं। पण ओ तो माटी लूणी में इज भाग छूटो। नीं तो आज इण नै वा खरी-खरी सुणावतौ के इणरी बोलती बंद कर देवतौ।

—खैर वे तो गया पण म्हानैं तो सुणाय दो के सेठ एड़ा काई कवाड़ा

भरीज जावै पण इण रो मूंडो कोनी भरीजै।
कानून निकळै । जे इण देवतावां नै हेमगार अर
गीतो रो झुणकलियां रमाए । अबै आप इज बिचार
अचार विणज बैपार में ।

—पण सेठां जे आप इमानदारी सूं धंधो
भरणा पड़ै ?

—इमानदारी ? सेठ हंसनै बोल्या—अ

—मास्टर हूं । टाबर पढ़ावण रो धंधो

—माट सा'ब हो, जरै इज टाबरां

आपनै इमानदारी निजर आई कठै ई इण

जे इमानदारी राखणी चावां तो ई कोनी
चावै पण रंडवा कोनी करण देवै ।

—पण जे रांड व्हेतां थकां ई वा
तो पछै रंडवां रो कांई कसूर ?

—माट सा'ब आप सफा गळ
सुणाऊं—सेठ जोर री डकार ले
कोई मांमूली लैंण-दैंण रा मांमला
म्हनैं ई रीस आयगी के देवतां
छोड़ व्हेग्यो । नतीजो ओ निक
दियो अर उण केस में हजारां
अनेकूं किस्सा है । कांई-कांई

सेठ स्यात् फेरूं कई कि
तो जांण पड़ी के लूंणी नैड़ी
समेटण लागा । पागड़ी संभा

लो माट सा'ब अबै तो वैठ
व्हौला ।

म्हैं मन में कह्यो—लेखै विणजै
इतरी जेज सांकड़ मांकड़ करनैं वैठण री
ही । अबै तो भावै ई सीट खाली करणी पड़ैला ।
कोनीं ।

म्हारै वैठतां ई बाबौजी बोल्या—अलख निरंजन

समाज री सेवा अर देसरी तरक्की खातर त्याग अर तपस्या करणी पड़ै। सेवा रौ मारग अवखौ घणौ है, कोई करनै देखै तो जाण पड़ै।

नेताजी भाखण देवता-देवता सांस भरीजग्या। म्हैं मौकौ देख'र अरज करी—

—सेठ बापड़ौ सफा कूड़ौ तो कोनीं। आंपणै समाज मे जिकौ नैतिक गिरावट आय री है उण में ऊपरलौ तबकौ सफा निरदोस है आ बात तो किंया कैय सकां।

नेताजी फेर भीमरिया म्हैं आ कद कही के ऊपरलौ तबकौ निर-दोस है। सफा निरदोस नीं तो ऊपरलौ है अर नीं नीचलौ। थोड़ी-थोड़ी दोस दोन्यूं रौ है। पण आ बात म्हूं सुभट कैय सकूं के सरकार अर नेतावां री भूंडियां करणी तो एक फैसन वणगी है। अर आ चीज आंपांनै फोड़ा घालैला। कारण के मूंडा सूं कैवणौ सरल है पण करणौ कठण है।

गाडी ठमी तौ नेताजी रौ भाखण ई ठम्यौ। बातां-बातां में ध्यांन ई कोनीं रह्यौ के किसौ टेसण आयग्यौ। नेताजी नै अठै इज उतरणौ हो सो झट आपरी झोळी संभाल नै लप्प करता नीचा उतरग्या। बापड़ी रवारण नै बैठणनै जगै मिळगी। बा बाबाजी रै अडौअड़ गोडां माथै गांठड़ी धरनै बैठगी। गाडी पाछी रवानै व्ही तो अवकाळै सांम्हां बैठ्या बाबूजी बोल्या—

—जमांना थारी बळिहारी।

म्हूं वांरै मूंडा कांनी देखण लाग्यौ तो वे फेरूं बोल्या—सूपड़ौ तो बाजै सो बाजै ई'ज पण छालणी ई बाजै।

—आ बात आप किणरै सारूं कही?

—इण नेताजी सारूं दूजौ किणरै सारूं। म्हाटी सेवा अर त्याग री कितरी मोटी-मोटी बातां करै हो, जाणै खास त्याग रौ ई'ज अवतार है।

—आप ओळखौ इण नेताजी नै?

—आछीतरियां। इणनै कांई इणरा बाप नै ई ओळखूं। सरूपांत में पंडौ जोधपुर मे अखबार वेचणरौ काम करता अर गळी-गळी हाका करता रोवता फिरता। धीरै-धीरै पोतारी न्याती रौ छात्रावास बणावण रै वास्तै एक उरटंड कियौ। एक दो सम्मेलन किया। चंदा चपाटी री रसीदां छपाय नै गांम-गांम फिरनै हजारां रपया भेळा करनै डकारग्या। छात्रावास री मकांन तो हालतांई अधूरौ ई'ज पड़्यौ है पण पोतरौ मकांन कदेई बणग्यौ।

कुए भांग पड़ी

करै ?

अबै नेताजी भासण देवण रा जोस में आगग्या हा। तणका व्है नैं बैठ्या थका बोल्या--

—आ मत पूछो के ओ कांई कवाड़ा करै, आ पूछो के ओ कांई-कांई कवाड़ा नीं करै ? धान में बजरी अर माटी भेळनैं ओ बेचै, घी में भेळसेळ ओ करै, चोरी सूं खांड नैं कपड़ो पाकिस्तान ओ भेजै अर धाप नैं अमल री धंधो ओ करै। म्हांसूं इणरी एक ई पोल छांनीं कोनीं। लारला महीना में ई'ज इणरो मोटोड़ो बेटो पकड़ीजग्यो हो अबार जमांनत माथै छूटनैं आयो है।

—किण केस में पकड़ीज्यो हो ?

बैठोड़ा अर ऊभोड़ा सगळाई नेता री बात कांन देय नैं सुणण लाग्या।

—रांणीवाड़ा में इणरी किसनगोपाळ मणीलाल रै नांम सूं दुकांन चालै। उठा सूं गुजरात री कांकड़ नेड़ी पड़ै। लारला पनरै बीस बरसां सूं किसनगोपाळ मणांबंद खोटिगो अमल त्यार करनैं चोरी सूं गुजरात भेजै। पालणपुर जिला रा दो-च्यारेक पटेल जिकी इण धंधां में लाग्योड़ा है, वे इण अमल नैं आगै सूं आगै पुगाय दे गुजरात री सरकार मोकळा दिनां सूं हैरांन ही के पालणपुरा जिला में इतरो अमल आवै कठा सूं है ? गुजरात सरकार सेवट हैरांन होयनै राजस्थांन सरकार नैं इण बावत लिख्यो। केन्द्र सूं ई' तपास करण खातर मदद मांगी। केन्द्रीय सरकार दो च्यारेक हुंस्यार सी० आई० डी० इण कांम वास्तै मुकर किया। उणांपे'ली तो पूरी भेद लियो अर पछै पटेलां री वेस धारण करनैं किसनगोपाळ खनैं अमल री सौदो करण नैं आया। पैंसठ हजार में मणांबंद अमल लेवणी तै व्हियो। इणै वां नैं रात री वखत एक ढांणी खनैं मोटर लेयनै आवणरो कह्यो अर हाथोहाथ रकम गिणावण री बात तै व्ही। आपरी पूरी त्यारी करनै ठीक टैंम माथै बतायोड़ा ठाया माथै पूगग्या। आधीक रात री वखत हो। जोर-जोर सूं होर्न दियो तौ किसन गोपाळ रो बेटो मणीलाल दो आदमियां सागै अमल रा गांठड़ा लेय नैं हाजर व्हियो अर पकड़ीजग्यो। वो केस हाल तांई चालै इ'ज है। आ हालत है इमांनदारी सूं विणज वैपार करणिया इण सेठांरी। जिको धरम री धजा बण्योड़ा फिरै अर बात बात में सरकार नैं, अफसरां नैं अर नेतावां नैं तौ कोसै पण पोतारी खोड़ निगै ई कोनीं आवै। डूंगर बळती तौ सैं नैं दीसै पण पगां बळती किणनैं ई कोनीं दीसै। थोथी बातां सूं कांई कोनीं व्है।

समाज री सेवा अर देसरी तरक्की खातर त्याग अर तपस्या करणी पड़ै। सेवा रो मारग अवखौ घणो है, कोई करनै देखै तो जांण पड़ै।

नेताजी भाखण देवता-देवता सास भरीजग्या। म्हैं मौको देख'र अरज करी—

—सेठ बापड़ौ सफा कूड़ो तो कोनीं। आंपणै समाज में जिको नैतिक गिरावट आय री है उण में ऊपरलौ तबको सफा निरदोस है आ बात तो किया कैय सका।

नेताजी फेर भींमरिया म्है आ कद कही के ऊपरलौ तबको निरदोस है। सफा निरदोस नी तो ऊपरलौ है अर नीं नीचलौ। थोड़ौ-थोड़ौ दोस दोन्यूं रो है। पण आ बात म्हूं सुभट कैय सकूं के सरकार अर नेतावां री मूंडियां करणी तो एक फैसन बणगी है। अर आ चीज आंपानै फोड़ा घालैला। कारण के मूंडा सूं कैवणो सरल है पण करणो कठण है।

गाडी ठमी तो नेताजी रो भाखण ई ठम्यो। बातां-बातां में ध्यांन ई कोनी रह्यो के किसी टेसण आयग्यो। नेताजी नै अठै इज उतरणो हो सो झट आपरी झोळी संभाल नैं लप्प करता नीचा उतरग्या। बापड़ी रवारण नै बैठणनै जगै मिळगी। वा बाबाजी रै अड़ौअड़ गोडां माथै गांठड़ी धरनै बैठगी। गाडी पाछी रवानै व्ही तौ अबकाळै सांम्हा बैठ्या बाबूजी बोल्या—

—जमांना थारी बळिहारी।

म्हूं वांरै मूंडा कांनी देखण लाग्यो तो वे फेरूं बोल्या—सूपड़ो तो बाजै सो बाजै इ'ज पण छालणी ई बाजै।

—आ बात आप किणरै सारूं कही?

—इण नेताजी सारूं दूजी किणरै सारूं। म्हाटी सेवा अर त्याग री कितरी मोटी-मोटी बातां करै हो, जाणै खास त्याग रो इ'ज अवतार है।

—आप ओळखो इण नेताजी नै?

—आंछीतरियां। इणनै कांई इणरा बाप नै ई ओळखूं। सरूपांत में पंडां जोधपुर में अखबार बेचणरो काम करता घर गळी-गळी हाका करता रोवता फिरता। धीरैं-धीरैं पोतारी न्याती री छात्रावास बणावण रै वास्तै एक उस्टंड कियो। एक दो सम्मेलन किया। चंदा चपाटी री रसीदां छपाय नैं गांम-गांम फिरनै हजारां रुपया भेळा करनै डकारग्या। छात्रावास रो मकान तो हालताई अधूरो इ'ज पड़्यो है पण पोतरो मकांन कदेई बणग्यो।

अबै गांम में एक बेरो ई कब्जा लियो है माथै मशीन लगाय दी । बेरा रो असली मालिक बापड़ो एक गरीब माळी है जिकण नै मुकद्दमा बाजी में अळूझाय नै बरबाद कर दियो है अर पोतै धणी-धोरी बणनै विराजग्या है ।

म्हे बाबू सा' ब नै बीच में टोकनै धीरै सीक कयो— माफ कराई जो बाबू सा' ब ! ए बातां आपनै नेताजी रै मूंडा माथै केवणी ही । तो कांईक मजेदारी रैवती । बाबू सा' ब नै म्हारी बात थोड़ी आंछी लागी । वे रीसां बळतां बोल्या—'माट सा'ब आ जमात अबै इतरी नकटी व्हैगी है के इणांरै मूंडा माथै कैवो तोई कोई फरक नीं पड़ै । सरै आंम लोगड़ा इणांरी भाजनी पाड़ै, इणांरा करतब बखांणै पण चिकणा घड़ा माथै छांट लागै तो इणां माथै ई असर व्है । अर आप तो गांमड़ा रा रैवण वाळा हो, आपसूं कांई बातां छांनी है ? तरै-तरै रा रूप में अर तरै-तरै रा भेस में गांम गांम में नेता त्यार है । इणां रो धंधो इज तिकड़मबाजी है । लोगां में मुकद्दमा-बाजी करावणी, सरकार सूं झूठा लोन उठावणा, सरकारी अहलकारां री साची झूठी सिकायतां करणी, जठै पोता रो पापड़ सिकतो निजर आवै उठै पूंछ हिलावणी अर गरीबां नैं झूठा वत्ता देयनैं लूटणा अर चूसणा इणांरो खास धंधो है । इणां रै देखा देखी समाज रो नैतिक इस्तर ई पीदै बैठग्यो है । झूठ, धोखेबाजी, जाळसाजी अर बेइमांनी चांफैर निजर आवै । अबै ओ सुभट लखावै के इण मुल्क में सेवट क्रांति व्हैला । अर क्रांति व्हियां इ'ज समाजवाद री थरपणा व्हैला । ओ धूड़ धमावो अर कचरो जठा तांई बळ नैं भस्म नीं व्है, अठै समाजवाद नीं आय सकै ।' बाबू सा'ब कोई फेरूं आगै कैवता पण इणरै पेली'ज डब्बा में एक इसी अजोगी बात बणी के सगळां रो ई ध्यांन उण कांनी लागग्यो ।

बात आ हुई के बाबो रवारण रै अड़ोअड़ म्हा वाळी सीट माथै इ'ज बैठो हो । भीड़ अणूंती ही'ज । सो इण रापटरोळ में बावै माटै न जांणै कांई कुचमाद कीवी सो रवारण खांच नै एक झापड़ धरी बाबा रै मूंडा माथै—झप्पीड़ ! करतोड़ी । झापड़ पड़तांई बाबै विकराळ रूप धारण कियौ अर साखियात दुरवासा बणनैं बकण लाग्यौ—

—रंडी साधु पर हाथ उठाती है, सत्यानास जाएगा तेरा, रूं रूं में कीड़े पड़ेंगे साली के । मैंने तेरा क्या बिगाड़ा ? सीट पे जगै नहीं तो मैं क्या करूं ! औरत की ओछी जात । अभी कोई मरद सामने होता तो मार चिमटां के भुरता बना देता साले का । रंडी छः महीने के अंदर अंदर रांड

नहीं बन जाय तो मैं असली साधु नहीं।

गाळा सुणी तो रवारण ई चंडिका वणगी। उणै बाबा रै हाथ में सूं तूंबी झट्प नै ठरकाळौ बाबा रै कपाळ में सो किरची किरची। रीस में तंबोळ व्हियोड़ी बोलण लागी—

—भंगियां भूत भगड़ा, दस नंबरिया, साधु रो भेख धारण कियो है, थनै सरम कोनीं आई—अर एक झापड़ फेरूं धरी झप्पीठ करतोड़ी—बाबा री दाढी नै जटा सै विखरगी—खा जाऊं बापड़ा चोरनै थैं म्हनै समझी कांई है? अबकै कर देखांणी हाथ आगी—दांतां मूं तोड़ नै नीं नांख दूं तो म्हारी नांम जांजूड़ी नीं।

बाबै थबकै चींपटो उपाड़ियो पण म्है बीच में इं'ज पकड़ लियो। अर उठी मैं जांजूड़ी करकड़ी साथ नैं पड़ी बाबा रै माथै सो मार मार नैं फूस काढ दियो। झोळी झंडा फाटग्या, माळावां तूटगी, डाढी जटा रा बाळ कलड़ग्या पण रवारण तो माटी हाथां री खार काढण लागी तो जाणी धोवण कपड़ा धोवण लागी।बाबाजी री चीपटो म्है सीट रै हेटे नांख दियो हो नी तो या बाबाजी नैं पिंजारो रूं नै पींजै ज्यूं पींज नाखती। मार ई पनरमो रतन गिणीजै। कुतको बड़ी कताबलांठा ई लटका करै। सो बाबो तो अल्लारी गाय बणग्यो। हाथां सूं माथो लुकाय नैं मुड़दा री गळाई पड़ग्यो। चूकारो ई कोनी कियो। रवारण मारतां मारतां थाकगी तो बकण लागी—

—थारी मा रा मींद थारी रा भगड़ा फेर करजे कोई लुगाई रै कांनी आगी हाथ। सीढी काढियो भणाकलो आगो सिरकै अर माथै माथै पड़ै। म्हैं जांणनै गम खाई के बापड़ो साधु है, भीड़ में दोरो बैठो है, जावण दो, धूडवाळो—तो ओ इण री मा रो गीठियो हाथ सूं कुचमाद करण लाग्यो। तोई म्हैं तो घो ळी जितरो दूध जांण्यो के बापड़ो पोतारा पंड रै खाज खणतो व्हैला इण सूं स्यात् इणै समझलियो के आगै ई कोई इण रै माजना-री'ज व्हैला। सो दस नंबरियै म्हारै चूंठियो भर लियो। नै साम्ही गाळां फेर न्यारी काढे। उल्टो चोर कोटवाळ नै डंडे। थारो काळजो खाय जाऊं रै बापड़ा थारो—च्यार चुरला भरनै लोही पो जाऊं दुस्टी, धारी—अर वा फेर करकड़िया पीसण लागी।

भेरव री दुरगत व्हैती देख नै कई भगतां रो काळजो दुखण लाग्यो। साधु है, नसा में कोई भूल व्हैगी तो सजाई मिळगी। विसांमा खाय नैं

- झुए भांग पड़ी

[illegible]

[illegible] बाबो ई [illegible] बैठग्यो ।

पण डब्बा में [illegible] बड़ी जोर री [illegible] ही सो पूरी गाडी में मुसाफरां [illegible] । इण वास्ते पुलिस रा जवान, गार्ड अर टी० टी० सगळा ई [illegible] डब्बा में आय [illegible] । उणां आवतां ई पूछताछ [illegible] अर बाबा नै पकड़नैं दूजा डब्बा में लेयग्या । होळै-होळै डब्बा में शांति व्यापगी । टी० टी० [illegible] काम शरू कियो । टिकट चैक करतो-करतो वो म्हारी सीट कानी आयो जिण पैली'ज म्हैं देख्यो के म्हारै सांम्हला बाबूजी बोला चाला उठनैं टायल में बड़ग्या । सगळा मुसाफरां नैं चैक कियां पछै टी० टी० टायल रो दरवाजो खड़खड़ायो । पण घणी ताळ खुल्यो कोनीं । तो जोर सूं खड़खड़ाय नैं पुलिस नैं बुलावण री धमकी दीवी । जरै कठैई जायतो दरवाजो खुल्यो अर मांयनैं सूं समाजवादी क्रांतिकारी बाबूजी नीचो माथो कियां बारै आया । भारत भोम रो नूंवो खून अर मोरल करेक्टर नीचो धूंण घाल्यां ऊभो हो । टी० टी० उणरो कॉलर पकड़नैं ठिरड़तो-ठिरड़तो नीचै लेयग्यो ।

म्हारो माथो भंवण लाग्यो । गाडी रवांनै व्ही तो म्हनैं लाग्यो के आ जायनैं सीधी जोधपुर रा किला रै भचीड़ खावैला अर मांयनैं बैठोड़ा मुसाफरां री बोटी-बोटी बिखर जाएला ।

पांन झड़ता देखनै

डांवरी गुणणा कोरी नामरी'ज गुणणा कोनी ही पण काम सूं ई गुणणा ही। आखा गांम में नैना अर मोटा सै उणनै गुणणा बाकी रै नाम सूं बतळावता। मावड़ी गुणणा गमछां रै गुन-दुग में हाजर रैवती। साज मांद में, ब्याव वा में, ओसा मुकलाणा में अर हर खुसी गमी में गुणणा हरेक रै घरै बिना बुलाया पूग जावती। लोग ऐड़ा हैवा व्हैग्या हा के मावी रै बिना कांम पार पड़तो इ'ज कोनी।

गुणणा रो सुभाव इसो के गांव में कदैई कोई सूं दो बातां कोनी व्ही। पालनों झीड़ी नै ई कोनी दुगाई। कोई रै बारे में घाल्योड़ी ई कोनी राख्यरी। पण इसी भली लुगाई री मानसी तो कांई पण भगवान ई मदद कोनी कीवी। मोट्यार धणी में घणा बरसां सूं पेट मंडयोड़ो हो के घर भागग्यो। कोई आठ दस बरस नीठ पूंडो हाथ रहयो व्हैला के रंडापो आयग्यो। पड़ना दुकाळ अर व्हैती रोळ री हूक बड़ी जोर री व्है पण करम री गति नै कुण टाळै ? रेख में मेख कुण मारै ? नी जीवणी चावतां थकांई जीवणी पड़ै। गुणणा रै माथै दुख री भाखर पड़्यो पण समैं री मल्हम इसरी असरकारक व्है के वो मोटा सूं मोटा घाव नै ई भर नांखै।

गुणणा मिनखां रै घरै बड़ी मजूरी अर पांणी पोटियो सरू कियो। लाखण री लांठ धापैनी सी सियाई पेट रो खाडो तो भरणो इ'ज पड़ै अर पेट भरण खातर मेणत मजूरी ई करणी पड़ै। गुणणा जिसी सुलखणी अर अशराफ लुगाई रै वास्तै कोई मजूरी री कमी कोनी ही। सो ज्यूं-

[illegible] दिन [illegible] दियां । सुगणा रो बेटो मोटो वियो नीं [illegible] मोटो [illegible] आवी । [illegible] विना रा दिन बीता अर [illegible] रा दिन आया । [illegible] नाम री [illegible] सुगणा रै [illegible] ई रांनी [illegible] गई [illegible] ?

[illegible] आ हुई के बेटा रो ब्याव कियो नी बहुआरी फूठ मिळी । सुगणा [illegible] री माद अर [illegible] अनाम । काम में माठी अर [illegible] । [illegible] घणी [illegible] । बाता रा पटोळा पाड़णा अर [illegible] री गळाई इण घर सूं उण घर दीसीया गावतां रोवती फिरती । सुगणा एक [illegible] री पाछी [illegible] गुमावै । कुता री गळाई मूंठी [illegible] । सुगणा नी [illegible] । [illegible] लाग्या एक भव [illegible] सुगणा काकी नै अेड़ी बहुआरी [illegible] मिळी ?

दिन बीतता गया ज्यूं सुगणां सासू थावती गई अर डमकू बहू मानती गई । इण रा आया पड़ता दिन अर उण रा आया चढ़ता दिन । सुगणां, गोडा पानिया जितरै तो पड़ यूं ढ़िल्यो जिसो काम री त्यारी करती री पण सेवट टांटिया थाकग्या जरै घर री मेढ़ी झाल ली । बहुआरी दिन-दिन पटवारणीज गी । सुगणा रै जीव नैं पूरी गिरै व्हैगी । अबै रात दिन देराणी अर दाझणी । डोकरी बापड़ी देख कर कर नैं सेवट आंधी व्हैगी । मांचौ पकड़तांई बहू मोसा मारण लागी अर करड़ झरड़ करण लागी—डैण नीं मरै अर नीं मांचो छोडै । रात दिन घड़ी-घड़ी खल्लू-खल्लू करै । थूक-थूक नै सगळो घर खराब कर दियौ । आ मरै तो इण घर री साड़

गां रै मरणौ ई हाथरी बात कोनीं ही । इण वास्तै ड़ी पड़ी रैवती । डमकू उणरै मांचा हेटे माटी री एक । याद आवै जरै उण में टुकड़ौ नांख देवे, नींतो डोकरी वै । वा उण ठीवड़ा में इज थूके अर उण में ईज खावै । री जूंण जीवै । आंख्यां सूं दीसैनीं, पगां सूं चालीजै नी अर ीजै नीं पण उमर री डोर तूटैनीं अर हंसौ काया रौ पिंजरौ ।

मनख सुगणां रै वेटा नैं कोसण लाग्या—एक तिल व्हैनैं ई तालर में ी, नां जोगौ साचांणी लुगाई रे घाघरा री जूं वणग्यौ । बापड़ी

डोकरी इणरी आस माथै रंडापो गाळयो अर सेवट थाका पणां बापड़ी री आ दुरगत व्ही । अबै तो सांवरियो सार करै तो खोळियो छूटै ।

पण बेटे नै ब्याज के दाम काई कोनी ही सो उणै मिनखां रै कंण कावण री कोई गिनरत ई कोनी करी । यूं दिन बीतता ग्या अर सुगणां रै उमर रा आखर ओछा व्हेता ग्या ।

मोकळा वरस बीता पछै सुगणा रा बेटा रै ई बेटो व्हियो । हांळी आया टाबर रा लाड कोड व्हिया । घर में मेवा मिस्टान्न बण्या पण डोकरी रा ठीबड़ा में तो सूखा टुकड़ा इंज आया । दिन लाग्या टाबर ई मोटो व्हियो। उणरो ई ब्याव व्हियो, बिनणी घर में आई पण सुगणा हाल बैठी'ज ही । उणनै देखतो जिकोई कैवतो के सांवरियो चिट्ठी भूलग्यो है । पण बिनणी नै आयां नै तीन च्यारेक महीना व्हिया पछै सेवट एक दिन सुगणा री हेली सुणलियो अर उणरो खोळियो छूटग्यो ।

वास ग्वाड़ रा मिनख भेळा हीयनै सुगणां नै दाग देवण नै लेयग्या तो लारै सूं झमकू सासू बिनणी नै कैवण लागी—

—बिनणी डोकरी रो ओ ठीबड़ो तो बारै उखरड़ा माथै नाख दे लाडू, आंगणा रै से बीच पड़ची भूंडो दीसै । अबार गाम री लुगायां बैठण नै आवैला तो वांनै सूगलो लाग आवैला ।

बिनणी घूंघटो ऊंचो करनै सासू कांनी खरी मीट सू देखती बोली—

—ठीबड़ो बारै क्यू नांख दू ? इणनै तो अवेर नै धरूला । थारै वास्तै चाहिजैला जरै दूजो ठीबड़ो कठै भाळती फिरूला !

सासू आंख्या फाड़ ने बिनणी कानी देखती'ज रैयगी ।

—०—